136वाँ संस्करण

जुलाई 2026

खादी और हथकरघा
भारत के अंतर्मन का ताना-बाना

मन की बात

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी का सम्बोधन

प्रधानमंत्री का संदेश

सूची क्रम

मुख्य आलेख

24 **कारगिल विजय दिवस** : नायकों का स्मरण

46 **नारी शक्ति** : खेलों में भारत की ऐतिहासिक जीत

60 **गाँव से राष्ट्रीय पहचान तक** : 'विदुर प्रेरणा हर्बल टी' की प्रेरक कहानी

68 हॉर्नबिल की वापसी

84 **'चौंगप्रेंग'** : नवजीवन पाती त्रिपुरा की जनजातीय विरासत

88 **गुरु पूर्णिमा और डॉ. कलाम** : भारत के शिक्षकों का सम्मान

संक्षेप में

28 **शौर्य विजय यात्रा** : एक यात्रा, एक राष्ट्र, एक सलामी

42 **हर बूँद कीमती** : जल संरक्षण की कहानियाँ

50 **'अक्षरकंदुकम'** : खेल-खेल में संस्कृत

56 **विज्ञान एवं गणित ओलम्पियाड 2026**
भारतीय युवाओं का ऐतिहासिक प्रदर्शन

58 कश्मीर के 'वगू' शिल्प का पुनरुद्धार

64 ग्रीन रिकॉर्ड, हरित भविष्य

72 **सीतामढ़ी का 'कचरे से कंचन' मॉडल**
समुदाय, सहयोग और रीसाइक्लिंग

82 आत्मनिर्भरता से बुना हुआ खादी का ताना-बाना

92 **हर घर तिरंगा** : गौरवान्वित भारत

लेख

30 **आईएनएस महेन्द्रगिरि** : समुद्र में आत्मनिर्भर भारत का आधार
–एडमिरल कृष्णा स्वामीनाथन

34 **सुपरसोनिक ब्रह्मोस** : भारत की रक्षा उपकरण निर्यात की सम्भावनाओं का दृढ़ आधार –डॉ. जयतीर्थ आर. जोशी

38 क्या होता है जब मिलता है बारिश की एक बूँद को अपना बसेरा? –अर्चना वर्मा

52 **प्रारम्भ से आगमन तक** : भारत का नया अंतरिक्ष युग – पवन कुमार चंदना

74 मणिपुर की लोकटक झील से रौशन हुआ ब्रह्मांड – डॉ. रोनाल्डो लैश्राम

78 **खड्डियों पर बुनी भारत की कहानी** : राष्ट्रीय हथकरघा दिवस 2026 –डॉ. एम. बीना

95 **प्रतिक्रियाएँ**

मेरे प्यारे देशवासियो
नमस्कार

हमारे जीवन में कुछ तारीखें ऐसी होती हैं जिन्हें याद रखने के लिए कैलेंडर देखने की जरूरत नहीं पड़ती। **आज, 26 जुलाई ऐसी ही एक तारीख है। आज 'कारगिल विजय दिवस' है।** ये दिन हमें गर्व से भर देता है। ये दिन हमें अपने वीर जवानों के अद्‌भुत साहस की याद दिलाता है। कारगिल की ऊँची-ऊँची चोटियाँ, कठिन मौसम, दुश्मन की चुनौती, हर परिस्थिति हमारे सैनिकों के सामने थी, लेकिन उनका हौंसला हर चुनौती से बड़ा था। उन्होंने माँ भारती की रक्षा के लिए अपना सर्वस्व अर्पित कर दिया। आज 'कारगिल विजय दिवस' पर मैं सभी वीर शहीदों और वीर सैनिकों को श्रद्धापूर्वक नमन करता हूँ।

साथियो, आज का भारत अपने वीरों को सिर्फ याद ही नहीं करता, बल्कि नई पीढ़ी तक उनकी गाथा भी पहुँचाता है। **इसी भावना से इस वर्ष एक विशेष 'शौर्य विजय यात्रा' निकाली गई है। 14 जुलाई को दिल्ली के 'National War Memorial' से शुरू हुई यह मोटरसाइकिल यात्रा, द्रास के कारगिल वॉर मेमोरियल तक पहुँचेगी।** इसका संदेश है – "One Ride, One Nation, One Salute." यह यात्रा हमें याद दिलाती है कि राष्ट्र के लिए दिया गया

शौर्य विजय यात्रा, जुलाई 2026

ब्रह्मोस मिसाइल

बलिदान कभी भुलाया नहीं जा सकता।

साथियो, आज भारत अपने सैनिकों के साहस के साथ-साथ अपनी तकनीकी क्षमता को भी लगातार मजबूत कर रहा है। **कुछ दिन पहले भारतीय नौ-सेना में INS महेंद्रगिरि शामिल किया गया।** यह आधुनिक जंगी जहाज भारत में ही design किया गया है, भारत में ही बना है। इसमें 75 प्रतिशत से अधिक स्वदेशी सामग्री का उपयोग हुआ है। यह आत्मनिर्भर भारत की बढ़ती शक्ति का प्रतीक है। **इसी महीने DRDO ने Pinaka Long Range Guided Rocket का भी सफल परीक्षण किया।** इस सफलता के पीछे हमारे वैज्ञानिकों और इंजीनियरों का सामूहिक परिश्रम है। **दो-तीन दिन पूर्व ही DRDO ने कुशा मिसाइल का भी सफल परीक्षण किया है।**

साथियो, आज रक्षा उत्पादन हो, रक्षा निर्यात हो या मित्र देशों के साथ राजनीतिक सहयोग – भारत लगातार नई ऊँचाइयों की ओर बढ़ रहा है। **इस महीने की शुरुआत में, मैं, इंडोनेशिया में था, जहाँ, ब्रह्मोस और अस्त्र मिसाइलों के लिए एक बड़ा समझौता हुआ है।** दुनिया का भरोसा भारत के रक्षा उपकरणों और तकनीक पर बढ़ रहा है। आइए, इस 'कारगिल विजय दिवस' पर हम अपने अमर शहीदों को नमन करें, और एक सुरक्षित, सक्षम और आत्मनिर्भर भारत के निर्माण का अपना संकल्प और मजबूत करें।

मेरे प्यारे देशवासियो, 'मन की बात' के पिछले Episode में मैंने आपसे 'Catch The Rain' अभियान की चर्चा की थी। मैंने आग्रह किया था कि बारिश की हर बूँद को सहेजने के इस अभियान को जन-आंदोलन बनाएँ। **'Catch The Rain' का संदेश बहुत सीधा है – जहाँ बारिश गिरे, जब बारिश गिरे, पानी को वहीं सहेजिए, इसलिए 04 जुलाई से देश-भर में एक विशेष अभियान भी चलाया जा रहा है।**

इसके तहत बारिश के पानी के संचयन, Ground Water Recharge, पुराने जल-स्त्रोतों के पुनर्जीवन और वृक्षारोपण को नई गति दी जा रही है। मुझे बहुत खुशी है कि गाँव हों या शहर, पंचायतें हों या सामाजिक संस्थाएँ हर जगह लोगों ने बढ़-चढ़कर भागीदारी की है। कहीं पुराने तालाबों से गाद निकाली जा रही है, कहीं कुओं और बावड़ियों को फिर से जीवन दिया जा रहा है। बंद पड़े Borewell अब Ground Water Recharge का माध्यम बन रहे हैं।

साथियो, मध्य-प्रदेश के सीधी जिले में करीब डेढ़ हजार तालाब बनाए गए हैं। नरसिंहपुर में अमृत सरोवरों को संवारा गया है। महाराष्ट्र के नासिक में बड़ी मात्रा में पानी सहेजने की क्षमता विकसित हुई है। आंध्र-प्रदेश के नंद्याल में सभी ग्राम पंचायतें इस अभियान से जुड़ी हैं और पुराने तालाबों को फिर से उपयोगी बनाया गया है। हमारे शहर भी पीछे नहीं हैं। छत्तीसगढ़ के कोरबा, ओडिशा के भुवनेश्वर और आंध्र-प्रदेश के विजयनगरम - इस अभियान के उत्साहजनक परिणाम दिखाई दे रहे हैं। आइए, हम भी अपने आस-पास किसी एक तालाब, कुएँ या बावड़ी की जिम्मेदारी लें - पानी की हर बूँद बचाएँ। आज बचाई गई हर बूँद, आने वाली पीढ़ियों के भविष्य की सबसे बड़ी पूंजी है।

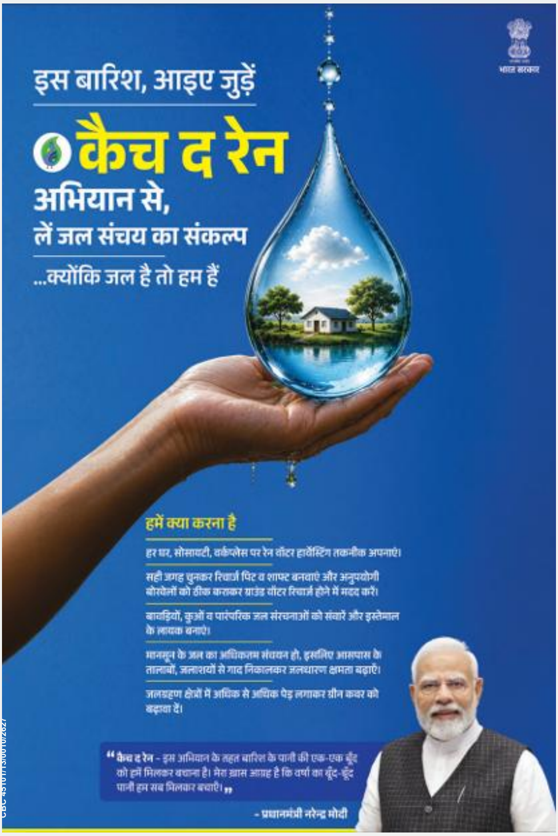

मेरे प्यारे देशवासियो, कुछ ही दिन पहले Glasgow में Commonwealth Games शुरू हुए हैं। हर देशवासी भारतीय

दल को निरंतर अपनी शुभकामनाएँ दे रहा है। उनकी कामना है कि सभी खिलाड़ी और athlete बेहतरीन प्रदर्शन करें और लोगों का दिल भी जीतें। साथियो, हमारे युवाओं ने हाल के दिनों में sports में कई शानदार उपलब्धियाँ हासिल की हैं। **PV Sindhu Badminton में Japan Open का खिताब जीतने वाली पहली भारतीय बन गई हैं।** उनकी इस उपलब्धि पर पूरे देश को गर्व है। **भारतीय महिला क्रिकेट टीम ने भी लंदन में Lord's Stadium में अपना पहला Test Match जीता है।** यह एक ऐतिहासिक जीत है। हमारी टीम ने 270 रनों के बड़े अंतर से यह मुकाबला जीता है। लेकिन बात सिर्फ इतनी सी नहीं है। Lord's के

लम्बे इतिहास में यह महिलाओं की टीम का पहला Test Match था। 1983 में इसी मैदान पर भारत ने अपना पहला क्रिकेट विश्व कप जीता था। अब हमारी नारी शक्ति ने यहाँ देश का नाम रोशन किया है।

साथियो, कुछ छोटे प्रयास ऐसे भी होते हैं, जो बहुत मायने रखते हैं। **मुझे केरलम में एर्णाकुलम के साउथ चित्तूर में sports के ऐसे ही एक प्रयास के बारे में पता चला है।** वहाँ के एक स्कूल में संस्कृत club है। यहाँ के teacher अभिलाष जी बड़े अनूठे तरीके से संस्कृत को लोकप्रिय बना रहे हैं। **इस project को 'अक्षरकंदुक' नाम दिया गया है। इसमें संस्कृत के अक्षरों को football में इस्तेमाल होने वाले शब्दों से जोड़कर आसान तरीके से समझाया जाता है।** इससे सीखने में आनंद मिलता है, साथ ही खेलों से लोगों का जुड़ाव भी बढ़ता है।

मेरे प्यारे देशवासियो, पिछले रविवार Vikram-1 इसके सफल launch से हर देशवासी गौरव से भरा हुआ है। हम सभी भारतीय space sector के इस ऐतिहासिक क्षण के साक्षी बने। ये private sector द्वारा विकसित भारत का पहला rocket है। हमारे युवा innovators ने वो कर दिखाया, जिसकी कल्पना तक मुश्किल थी। उन्होंने गजब की skill, passion और patience दिखाया। लम्बे समय तक हमारा space sector निजी क्षेत्र के लिए बंद रहा था। इस sector में रुचि रखने वाले काफी युवाओं को अपनी प्रतिभा दिखाने का

विक्रम-1

अवसर नहीं मिल पा रहा था। युवा हित को देखते हुए हमने space sector को private sector के लिए खोला। आज इसका परिणाम दुनिया देख रही है।

साथियो, हमारे युवा साथी science में भी भारत का मस्तक ऊँचा कर रहे हैं| Science Olympiads दुनिया के सबसे महत्त्वपूर्ण competition में से एक हैं। इनमें बड़ी संख्या में students हिस्सा लेते हैं। इसी महीने Physics, Chemistry, Biology और Mathematics के Olympiad हुए। इन competitions में भारतीय दल का प्रदर्शन शानदार रहा। Physics Olympiad में हमारे सभी पाँच students ने Gold Medal जीते और भारत ने पहली rank हासिल की। पिछले एक दशक में हुए हर Physics Olympiad में हमारे देश के students ने Gold या Silver Medal जरूर जीता है। Chemistry Olympiad में भी हमारे सभी students ने Gold Medal जीता। यह अब तक की best performance रही है। Biology Olympiad में भी हमारे सभी students ने medal जीते, इनमें एक Gold Medal भी शामिल है। वहीं, Mathematics Olympiad में हमारे students ने दो Gold और चार Silver Medals अपने नाम किए। मुझे देश की युवा शक्ति पर बहुत गर्व है। यह देखकर खुशी होती है कि भारत में Olympiads और Hackathons का culture निरंतर बढ़ रहा है| मुझे विश्वास है कि देश के अधिक से अधिक युवा ऐसे forums में अपना interest दिखाएँगे और भारत का परचम भी लहराएँगे।

कश्मीर का वगू शिल्प

मेरे प्यारे देशवासियो, जब हुनर भी हो और कुछ करने का जज्बा भी हो, तो हर राह, आसान हो जाती है। कश्मीर की पारम्परिक चटाई 'वगू' को लेकर आज जो प्रयास हो रहे हैं उसमें इसी की झलक मिलती है। इसे सरकंडे और धान के पुआल से, straw से, तैयार किया जाता है। इस चटाई को बनाने की परम्परा बरसों पुरानी है। इसके लिए सबसे पहले कश्मीर के दलदली इलाकों की घास और सरकंडे की कटाई की जाती है। धूप में सुखाने के बाद छंटाई होती है और फिर शुरू होता है हाथों से बुनाई का काम। दो कारीगरों को एक चटाई बनाने में करीब-करीब चार दिन लगते हैं। यह चटाई अनूठी भी है और eco-friendly भी है। एक बड़ी खासियत ये है कि आपको गर्मियों में इससे ठंडक

कश्मीर का वगू शिल्प

मिलेगी और सर्दियों में गर्माहट| पहले यह कश्मीर के हर घर में दिखती थी, लेकिन, पिछले कुछ वर्षों में इसका उपयोग कम होने लगा था। ऐसे में श्रीनगर के गुलाम हुसैन जी और उनकी बेटी तंजीला जी ने एक संकल्प लिया। दोनों 'वगू' craft की परम्परा को एक नया जीवन देने में जुट गए। गुलाम हुसैन जी बहुत ही साधारण परिवार से आते हैं। उन्हें इस काम में कई तरह की चुनौतियाँ भी आई। लेकिन 'वगू' के संरक्षण का उनका संकल्प अडिग था। देखते ही देखते उनके इस प्रयास से बहुत सारे लोग जुड़ते चले गए। गुलाम हुसैन जी ने इस कौशल को खूब बढ़ाया। अपने मिशन में उन्हें स्थानीय स्तर पर सरकारी सहयोग भी मिला। आज तेजी से लोकप्रिय हो रहा, 'वगू' देश के अन्य हिस्सों में भी पहुँच रहा है। मुझे इस प्रयास से जुड़े सभी लोगों पर बहुत गर्व है। आज हम सभी का Local products पर जोर है। हम Vocal for Local के मंत्र को लेकर चल रहे हैं। ऐसे में कश्मीर का 'वगू' भी आपके घर का हिस्सा बने, इस पर एक बार जरूर सोचिएगा।

साथियो, हमारे देश में चाय सिर्फ एक पेय नहीं है - ये अपनापन भी है। सुबह की शुरुआत हो, दोस्तों की मुलाकात हो या परिवार के साथ कुछ पल बिताने हों 'चाय' हर मौके का हिस्सा बन जाती है। वैसे तो आप भी भलीभाँति जानते हैं मेरा चाय से रिश्ता क्या है। लेकिन आज मैं जिस चाय की चर्चा कर रहा हूँ, उसने सिर्फ स्वाद ही नहीं दिया, बल्कि अनेक बहनों के जीवन में, आत्मनिर्भरता की नई खुशबू भी घोल दी है। उत्तर प्रदेश के बिजनौर जिले के लखीवाला गाँव में Self Help Group से जुड़ी महिलाओं ने 'विदुर प्रेरणा

स्वदेशी हर्बल टी' तैयार की है। इसमें lemongrass, गिलोय, मुलेठी, तुलसी, कच्ची हल्दी, दालचीनी, इलायची और सौंफ जैसी प्राकृतिक सामग्रियाँ शामिल हैं। अपने अनोखे स्वाद और गुणों की वजह से इस चाय ने बहुत कम समय में लोगों के बीच खास पहचान बना ली। प्रयागराज के महाकुम्भ और दिल्ली के International Food Festival में इस हर्बल चाय को खूब सराहना मिली है। विदेशों से आए लोगों ने भी इसमें दिलचस्पी दिखाई है।

साथियो, सबसे प्रेरक बात इसकी शुरुआत है। यह पूरा प्रयास सिर्फ एक लाख रुपये से शुरू हुआ था। आज यह brand देश के बड़े संस्थानों तक पहुँच चुका है। ये पहल हमें बताती है कि जब स्थानीय ज्ञान, प्रकृति और महिलाओं का आत्मविश्वास साथ आते हैं, तो एक छोटा-सा प्रयास भी बड़े बदलाव की शुरुआत बन जाता है।

मेरे प्यारे देशवासियो, आज देश-भर में 'एक पेड़ माँ के नाम' अभियान के माध्यम से लोग प्रकृति के प्रति अपना दायित्व निभा रहे हैं। जब समाज इस भावना से जुड़ता है, तो बहुत सुन्दर और प्रेरक उदाहरण सामने आते हैं। साथियो, अमदाबाद (अहमदाबाद) में जन-भागीदारी की अद्‌भुत शक्ति दिखाई दी है। भाड़ज़ क्षेत्र में एक घंटे के भीतर साढ़े 3 लाख से अधिक पौधे रोपे गए, इसमें, 25 हजार से अधिक लोग जुटे। स्कूली बच्चे, NCC Cadets, स्वयंसेवक और आम नागरिक – सभी ने इस अभियान में हिस्सा लिया। आने वाले वर्षों में यही पौधे एक घने शहरी वन का रूप लेंगे। इस प्रयास को Guinness Book of World Record में दर्ज किया

गया है। साथियो 'एक पेड़ माँ के नाम' अभियान के तहत यूपी में भी जन-शक्ति का अद्भुत संकल्प देखने को मिला है। वहाँ एक ही दिन में 12 जुलाई को 35 करोड़ से अधिक पौधे लगाए गए हैं। UP का सांसद होने के नाते मेरे लिए ये भी विशेष गर्व की बात है।

मेरे प्यारे देशवासियो, पेड़ केवल मनुष्यों के लिए नहीं होते, वे अनगिनत जीवों के घर भी होते हैं। गुजरात के गिर के जंगलों में करीब 60 वर्षों बाद Indian Grey Hornbill फिर से बसेरा बना रहा है। ये गिर में बरसों से हो रहे संरक्षण और पुनर्स्थापन के प्रयासों का परिणाम है। Hornbill को जंगलों का किसान कहा जाता है। ये फल खाते हैं और बीजों को दूर-दूर तक पहुँचाते हैं, उन्हीं बीजों से, जंगल में नए पेड़ उगते है इस तरह एक पक्षी जंगल को फिर से हरा-भरा बनाने में मदद करता है। मैं आप सभी से कहूँगा, हम सभी अपने जीवन के किसी विशेष अवसर को, प्रकृति से जरूर जोड़ें। एक पेड़ माँ के नाम लगाएँ। आज का लगाया एक छोटा सा पौधा, आने वाली पीढ़ियों के लिए हरियाली, स्वच्छ हवा और सुंदर भविष्य की विरासत बन सकता है।

मेरे प्यारे देशवासियो, हम सभी जानते हैं कि आज plastic प्रदूषण पूरी दुनियाँ के पर्यावरण के लिए बड़ी चुनौती बना हुआ है। Single use plastic का कचरा कई वर्षों तक प्रकृति को नुकसान पहुँचाता रहता है, इसलिए, plastic का सही निस्तारण बहुत जरूरी है। साथियो, बिहार के सीतामढ़ी में 'Waste to Wealth' का शानदार उदाहरण सामने आया है। यहाँ कचरे की recycling कर उससे

आकर्षक bench बनाई जा रही है। एक bench तैयार होने में करीब 40 किलो single use plastic खप जाती है। यह मजबूत, टिकाऊ और आरामदायक होने के साथ-साथ eco-friendly भी होती है। इसे सरकारी स्कूलों, पार्कों और सार्वजनिक स्थलों पर लगाया जाता है। इसके जरिए लोगों में पर्यावरण संरक्षण को लेकर जागरूकता भी बढ़ रही है। इस प्रयास में स्थानीय इकाई के साथ ही जिला प्रशासन की महत्त्वपूर्ण भूमिका है। इससे स्थानीय स्तर पर रोजगार के अवसर भी पैदा हो रहे हैं। सीतामढ़ी का ये प्रयास हमें बताता है कि Reduce, Reuse और Recycle आज केवल एक नारा नहीं बल्कि हमारे जीवन का हिस्सा बनता जा रहा है।

साथियो, आपको याद होगा पिछली बार 'मन की बात' में, मैंने 'गणेश उत्सव' की बात की थी। मैंने आग्रह किया था कि हमें अपने देश की मिट्टी से ही बने गणेश जी की पूजा करनी चाहिए। जो POP (पी.ओ.पी.) से बने गणेश जी होते हैं या विदेश से आई गणेश जी की प्रतिमा होती है, उसके बजाय हमें देश की मिट्टी से बने गणेश जी को घर में स्थापित करना चाहिए। इस विषय पर अनेक लोगों ने मुझे संदेश भेजा है और अपने विचार रखे हैं। लोगों ने बताया कि उन्होंने मेरे आग्रह को अपनाया है। उन्होंने स्थानीय मिट्टी से तैयार होने वाले गणेश जी को स्थापित करने का संकल्प लिया है। लोगों ने लिखा है कि 'मन की बात' में पहले ही इस पर चर्चा हुई, इससे उन्हें सही वक्त पर सही कदम उठाने में मदद मिली। मैं एक बार फिर अपना आग्रह दोहराता हूँ, इस बार गणपति पूजा में देश की मिट्टी से बने गणेश जी को

डॉ. रोनाल्डो लैश्राम, खगोल भौतिकीविद्

अपने घर पर स्थापित करें, उनकी पूजा करें। आपका ये प्रयास भी एक तरह से प्रकृति की ही पूजा होगा।

मेरे प्यारे देशवासियो, अब मैं आपको एक ऐसे व्यक्ति के बारे में बताऊँगा, जिनके बारे में सुनकर आपको बहुत गर्व होगा। एक ऐसे व्यक्ति जो science और innovation के क्षेत्र में बढ़-चढ़कर काम कर रहे हैं, दुनिया में जिनकी पहचान बन रही है, लेकिन इसके बाद भी वो अपनी जड़ों से गहराई से जुड़े हुए हैं, अवसर मिलते ही वो अपनी मिट्टी का सम्मान करना नहीं भूलते – **वो व्यक्ति हैं, मणिपुर के Dr. Ronaldo Laishram जी। नाम उनका Ronaldo है लेकिन काम से वो एक Astrophysicist हैं।** वे जापान में काम करते हैं और young galaxies के एक विशाल समूह की खोज करने वाली टीम का हिस्सा रहे हैं। **आप जानना चाहेंगे कि उन्होंने आखिर किया क्या है? दरअसल, उन्होंने इस पूरे समूह का नाम मणिपुर की एक खूबसूरत झील से जोड़कर Loktak proto-**

लोकटक झील, मणिपुर

cluster रखा है। Loktak ताजे पानी की बहुत बड़ी झील है। Loktak लेक में तैरती हुई फूमडी मिलकर एक अनोखा landscape बनाती है। ऐसा लगता है कि विशाल समंदर में छोटे-छोटे द्वीप तैर रहे हों। उसी प्रकार universe में ये young galaxies भी एक विशाल संरचना का निर्माण करती हैं। आज मणिपुर की Loktak केवल देश के Map पर ही नहीं, बल्कि विशाल ब्रह्मांड में भी अपनी चमक बिखेर रही है। यह उपलब्धि हर भारतीय का गौरव बढ़ाने वाली है। इससे हमारे युवा साथियों को सीख मिलती है कि वे अपनी परम्परा से जुड़े रहकर भी नई ऊँचाइयों को छू सकते हैं। ये ऐसी जड़ें हैं, जो सितारों की दुनिया को भी जगमगा सकती हैं।

मेरे प्यारे देशवासियो, कुछ ही दिनों बाद, 7 अगस्त को हमारा देश 'National Handloom Day' मनाएगा। इस अवसर पर हम अपने बुनकर भाई-बहनों के कौशल और उनकी सृजनशीलता का उत्सव मनाते हैं। हमारे ये साथी पीढ़ियों से चली आ रही परम्पराओं को आगे बढ़ा रहे हैं।

साथियो, हथकरघे से बना हर परिधान किसी-न-किसी क्षेत्र, समुदाय और इससे जुड़े असंख्य लोगों की कहानी को सामने लाता है। ये वो लोग हैं, जो गर्व के साथ भारत की सांस्कृतिक विरासत को संजोने में जुटे हैं। आज के दिन मेरा आग्रह है कि हम हस्तकला को

7 अगस्त 2026, राष्ट्रीय हथकरघा दिवस

पोचमपल्ली इकत

प्रोत्साहित कर, अपने बुनकर साथियो का सम्मान करें। आइए, हम vocal for local की भावना को और सशक्त करें।

साथियो, आज देश में जिस तरह handloom को बढ़ावा दिया जा रहा है। उससे बड़ी संख्या में लोगों का जीवन बेहतर हो रहा है। पोचमपल्ली से पटना और कुथमपल्ली से कच्छ तक इसके कई उदाहरण देखने को मिलते हैं। आज ऐसे कई लोग और समूह हैं, जो, handloom की हमारी गौरवशाली परम्परा को नई ऊर्जा और पहचान दे रहे हैं। कोई 'पोचमपल्ली इकत' की सुंदर परम्परा को आगे बढ़ा रहा है, तो कोई महिला बुनकरों को जोड़कर wool products बना रहा है। कुछ लोग केरलम की पारम्परिक 'कसावु कला' को संरक्षित कर रहे हैं। इससे हमारी माताओं-बहनों को रोजगार भी मिल रहा है।

साथियो, एक और विषय जिसका मैं विशेष रूप से उल्लेख करना चाहूँगा, वह है 'खादी'। हम सभी जानते हैं कि 'खादी' महात्मा गाँधी को बहुत प्रिय थी। बीते कुछ वर्षों में 'खादी' काफी लोकप्रिय हुई है। पिछले 12 वर्षों में इसकी बिक्री 6 गुना बढ़ी है। बिक्री का यह आंकड़ा अब 8,000 करोड़ रुपये के करीब पहुँच चुका है। मेरा आप सभी से आग्रह है कि आने वाले त्योहार में 'खादी' का कोई-न-कोई, handloom का कोई-न-कोई, handicraft का कोई-न-कोई product जरूर खरीदें।

मेरे प्यारे देशवासियो, अगर आपसे पूछा जाए कि भारत के कितने तरह के musical instruments हैं, तो आप सोच में पड़ जाएँगे। ऐसा इसलिए, क्योंकि हमारे यहाँ बहुत से वाद्ययंत्र और उनसे जुड़ी परम्पराएँ हैं। इसी तरह का एक instrument है – त्रिपुरा का 'चौंगप्रेंग'। यह वहाँ की tribal communities में काफी लोकप्रिय है। बांस से बने इस वाद्ययंत्र में तीन तार होते हैं। इससे निकली धुन बहुत मधुर होती है, जो सरोद से मिलती-जुलती है। कुछ वजहों से युवाओं के बीच इसकी लोकप्रियता कम होने लगी थी। ऐसे में सूरज कुमार देबबर्मा जी ने इसे फिर से लोकप्रिय बनाने का संकल्प लिया। आज उनका प्रयास रंग ला रहा है। वे चौंगप्रेंग के साथ ही वहाँ के अन्य पारम्परिक वाद्ययंत्रों पर भी perform करते रहे हैं। Kokborok folk songs, Baul songs, Bangali Folk उन्हें खूब भाता है। अब मैं आपको एक छोटी सी clip सुनाना चाहता हूँ। इस संगीत को आप कभी भूल नहीं पाएँगे।

साथियो, मुझे विश्वास है इसे सुनकर आपके मन को बहुत अच्छा लगा होगा। मुझे देबबर्मा जी पर बहुत गर्व है। पारम्परिक संगीत को लोकप्रिय बनाने का उनका प्रयास बहुत ही सराहनीय है। मेरा आग्रह है कि आप भी अपने आस-पास के पारम्परिक वाद्ययंत्र की जानकारी social media पर जरूर share करें। आपकी यह कोशिश दूसरों को भी पारम्परिक भारतीय संगीत से जरूर जोड़ेगी।

मेरे प्यारे देशवासियो, कल 27 जुलाई को, भारत रत्न डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम जी की पुंयतिथि है। डॉ. कलाम के व्यक्तित्व में कई प्रेरक रूप थे, लेकिन, उनके ह्रदय के सबसे करीब एक शिक्षक की भूमिका थी। वे बच्चों और युवाओं को बड़े सपने देखने के लिए प्रेरित करते थे। संयोग से, इसी हफ्ते हम 'गुरु पूर्णिमा' का पावन पर्व मनाएँगे। हमारे माता-पिता हमारे पहले गुरु होते हैं। स्कूल के शिक्षक हमें अक्षर ज्ञान देते हैं। गुरु पूर्णिमा ऐसे सभी गुरुओं के प्रति कृतज्ञता जताने का अवसर है। मैं देश के सभी शिक्षकों और गुरुजनों को श्रद्धापूर्वक प्रणाम करता हूँ।

साथियो, कुछ ही सप्ताह बाद हम अपनी स्वतंत्रता का महापर्व भी मनाएँगे। 15 अगस्त हर भारतीय के लिए गर्व का दिन है। ये उन असंख्य वीरों को याद करने का दिन है, जिन्होंने

'भारत माता' की स्वतंत्रता के लिए अपना सब कुछ समर्पित कर दिया। उनके त्याग और तपस्या की वजह से आज हमारे हाथ में तिरंगा है। इस तिरंगे में हमारे संविधान के आदर्श हैं।

साथियो, पिछले कुछ वर्षों में 'हर घर तिरंगा' अभियान ने पूरे देश को एक अद्भुत भावना से जोड़ा है। हर घर, हर गली में तिरंगे का उत्सव दिखाई देता है। इस वर्ष भी हमें 'हर घर तिरंगा' अभियान को पूरे उत्साह के साथ आगे बढ़ाना है। अपने घर पर पूरे सम्मान के साथ तिरंगा फहराना है।

साथियो, हर वर्ष 15 अगस्त से पहले आप मुझे बहुत से विचार और सुझाव भेजते हैं। इस वर्ष भी आप अपने विचार MyGov पर जरूर साझा कीजिए। मुझे आपके सुझावों का इंतजार है।

साथियो, 'मन की बात' में आज इतना ही। अगले महीने हम फिर मिलेंगे देशवासियों की अनेक नई उपलब्धियाँ, और, प्रेरक प्रयासों के साथ, तब तक के लिए मुझे अनुमति दीजिए।

बहुत-बहुत धन्यवाद, नमस्कार।

'मन की बात' सुनने के लिए QR कोड स्कैन करें।

मन की बात

प्रधानमंत्री द्वारा विशेष उल्लेख

NEW ZEALAND
LEADERSHIP

कारगिल विजय दिवस

नायकों का स्मरण

राष्ट्र हर साल 26 जुलाई को 'कारगिल विजय दिवस' मनाता है। 1999 के कारगिल युद्ध में भारत की ऐतिहासिक जीत हुई थी। इस विजय के उपलक्ष्य में और मातृभूमि की रक्षा में असाधारण साहस, दृढ़ संकल्प और बलिदान का प्रदर्शन करने वाले सैनिकों को सम्मानित करने के लिए यह दिन भारतीय सशस्त्र बलों की बहादुरी और ऑपरेशन विजय के सैनिकों द्वारा किए गए सर्वोच्च बलिदान की याद दिलाता है। इस वर्ष, राष्ट्र ने संघर्ष के नायकों के प्रति कृतज्ञता और श्रद्धा के साथ 27 वाँ कारगिल विजय दिवस मनाया।

मई 1999 की शुरुआत में, लाहौर घोषणा के तुरंत बाद, कारगिल जिले में पाकिस्तानी सेना द्वारा घुसपैठ की पहली बार सूचना मिली थी। यह घुसपैठ पाकिस्तान के ऑपरेशन बद्र के तहत तत्कालीन जम्मू-कश्मीर राज्य के कारगिल सेक्टर में हुई थी। घुसपैठियों ने नियंत्रण रेखा के भारतीय हिस्से में अत्यधिक बर्फीली और ऊबड़-खाबड़ ऊँचाई पर खाली शीतकालीन चौकियों पर कब्जा कर लिया। घुसपैठियों को बेदखल करने के लिए भारत सरकार ने ऑपरेशन विजय के साथ जवाब दिया, जो कब्जे वाले अनेक पोस्ट को पुनः प्राप्त करने के लिए बड़े पैमाने पर सैन्य लामबंदी थी।

कारगिल में लड़ाई किसी अन्य से अलग थी। यह युद्ध उस जगह पर लड़ा गया

था जिसे अक्सर दुनिया के सबसे ऊँचे युद्धक्षेत्रों में से एक कहा जाता है। कई किलोग्राम भारी गियर के साथ भारतीय सैनिकों को लगातार और जोरदार तोप एवं स्नाइपर फायरिंग के बीच 13,000 से 18,000 फीट (लगभग 5000 मीटर) की ऊँचाई पर लगभग ऊर्ध्वाधर चट्टानों पर चढ़ना पड़ता था। ऑक्सीजन की कमी थी। शून्य से नीचे तापमान में मौसम की प्रतिकूल स्थिति थी। इतना ही नहीं, दुश्मन को ऊँचाई का फायदा भी मिल रहा था। इसके बावजूद ऑपरेशन सफेद सागर में वायुसेना के सहयोग से भारतीय सेना और पूरी ताकत से तैनात नौसेना ने बढ़त हासिल की।

कारगिल अभियान में कई निर्णायक लड़ाइयाँ हुईं, जिसने स्थिति को भारत के पक्ष में मोड़ दिया। तोलोलिंग की लड़ाई कारगिल युद्ध की पहली सफलताओं में से एक थी। इस लड़ाई में भारतीय सैनिकों ने मई 1999 के अंतिम सप्ताह में हमला शुरू किया था और 13 जून, 1999 को प्वाइंट 4590 और तोलोलिंग पर फिर से कब्जा कर लिया था। 4 जुलाई, 1999 को टाइगर हिल पर फिर से कब्जा करना भी एक महत्त्वपूर्ण मोड़ था। द्रास सेक्टर में सबसे ऊँची और सबसे रणनीतिक चोटियों में से एक के रूप में, एक साहसी हमले के बाद इसके कब्जे ने भारत को एक बड़ा फायदा दिया और युद्ध की गति को बदल दिया। भारतीय सेनाओं ने प्वाइंट 4875, बटालिक, मुश्कोह घाटी और काकसर में भी भयंकर लड़ाई लड़ी, शिखर पर हर कब्जे वाली पोजीशन को पुनः प्राप्त किया और नियंत्रण रेखा को पार किए बिना जीत हासिल की। इस अभियान में हमारी सेना

ने उल्लेखनीय अनुशासन, संयम और संकल्प का प्रदर्शन किया। लगभग तीन महीने के अथक अभियानों के बाद, शत्रुओं के कब्जे वाली प्रत्येक भारतीय चौकी पर फिर से कब्जा कर लिया गया। 14 जुलाई, 1999 को तत्कालीन प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी ने राष्ट्र को सम्बोधित किया और ऑपरेशन विजय को सफल घोषित किया। उन्होंने सशस्त्र बलों के साहस, बलिदान और अटूट संकल्प को नमन किया। 26 जुलाई को लद्दाख के ऊबड़-खाबड़ पहाड़ों पर तिरंगा एक बार फिर शान से फहराया। ऐतिहासिक जीत 545 सैनिकों के शहीद होने और एक हजार से अधिक घायल होने की बहुत बड़ी कीमत पर हासिल की गई थी। लेकिन देश की क्षेत्रीय अखंडता बरकरार थी।

पुनः प्राप्त की गई प्रत्येक चोटी बहादुरी के असाधारण कृत्यों का परिणाम थी। राष्ट्र ने इन योद्धाओं को अपने सर्वोच्च सैन्य पुरस्कारों से सम्मानित किया। 4 सैनिकों को भारत के सर्वोच्च वीरता पुरस्कार परमवीर चक्र से सम्मानित किया गया। 9 सैनिकों को महावीर चक्र और 55 सैनिकों को वीर चक्र से सम्मानित किया गया। एक सैनिक को सर्वोत्तम युद्ध सेवा पदक (SYSM) से सम्मानित किया गया, जबकि 6 को उत्तम युद्ध सेवा पदक (UYSM) और 8 को युद्ध सेवा पदक (YSM) से सम्मानित किया गया। 83 कर्मियों को सेना पदक और 24 को वायु सेना पदक से सम्मानित किया गया। ये सम्मान संघर्ष के

दौरान प्रदर्शित बहादुरी और असाधारण सेवा को दर्शाते हैं।

कारगिल युद्ध की जीत की याद में, भारतीय सेना द्वारा निर्मित कारगिल युद्ध स्मारक, तोलोलिंग पहाड़ियों की तलहटी में द्रास में स्थित है। यह युद्ध के दौरान अपने प्राणों की आहुति देने वाले वीर सैनिकों को समर्पित है। स्मारक में एक विशाल दीवार पर उन सभी बहादुरों के नाम अंकित हैं जिन्होंने युद्ध में सर्वोच्च बलिदान दिया। स्मारक से सटे एक संग्रहालय में युद्ध के चित्र, दस्तावेज और अन्य यादगार चीजें प्रदर्शित की गई हैं। यह भारतीय सशस्त्र बलों के साहस और बलिदान के लिए एक सम्मान और स्मारक के रूप में खड़ा है।

युद्ध के सत्ताईस साल बाद भी कारगिल की ऊँची चोटियाँ उसी अदम्य साहस की गाथा से गूंजती रहती हैं। ऑपरेशन विजय के दौरान फिर से हासिल की गई हर चोटी इस बात की याद दिलाती है कि भारत की सम्प्रभुता पर कोई समझौता नहीं किया जा सकता है। उन ऊबड़-खाबड़ ऊँचाइयों

पर फिर से तिरंगा फहराना न केवल जीत का प्रतीक था, बल्कि अपने सशस्त्र बलों के पीछे एकजुट राष्ट्र के उत्साह का भी प्रतीक था। जैसा कि भारत अपने कारगिल नायकों को याद करता है, यह सम्मान शब्दों से कहीं अधिक है। यह साहस, कर्तव्य, बलिदान और राष्ट्र के प्रति अटूट सेवा के मूल्यों को बनाए रखने का एक नया संकल्प है, जिसका उन्होंने मुकाबला किया। उनकी जीवंत विरासत हर पीढ़ी को यह याद रखने के लिए प्रेरित करती है कि देश की स्वतंत्रता और सुरक्षा की रक्षा वे लोग करते हैं जो राष्ट्र को खुद से ऊपर रखते हैं।

शौर्य विजय यात्रा

कारगिल विजय दिवस 2026 के राष्ट्रव्यापी आयोजन के हिस्से के रूप में, 1999 के कारगिल युद्ध में जीत सुनिश्चित करने वाले भारतीय बहादुरों के साहस और सर्वोच्च बलिदान का सम्मान करने के लिए 'शौर्य विजय यात्रा' का आयोजन किया गया था।

शुभारम्भ

14 जुलाई, 2026 को रक्षा मंत्री श्री राजनाथ सिंह ने नई दिल्ली के नेशनल वॉर मेमोरियल से लद्दाख के द्रास में कारगिल वॉर मेमोरियल तक 13 दिन की यादगार मोटरसाइकिल यात्रा को हरी झंडी दिखाकर रवाना किया। यह यात्रा 'ऑपरेशन विजय' की 27वीं वर्षगांठ के हिस्से के तौर पर आयोजित की गई थी।

अभियान

इस अभियान का मोटो था 'एक यात्रा, एक देश, एक सलाम'। 28 राइडर्स की एक टीम ने 13 दिनों में 1,900 किलोमीटर का सफर तय किया। इस टीम में सेना के मौजूदा और रिटायर्ड जवान और उनके परिवार के सदस्य शामिल थे। सफर के दौरान, राइडर्स अपने साथ नेशनल वॉर मेमोरियल की पवित्र मिट्टी से भरा एक कलश ले गए। इस मिट्टी को कारगिल वॉर मेमोरियल पर अर्पित किया गया, जो "देश की मौजूदा पीढ़ी के सम्मान और देश के वीरों की वीरता के मिलन" का प्रतीक था।

समापन

यह यात्रा 26 जुलाई, 2026 को कारगिल विजय दिवस के मौके पर द्रास स्थित कारगिल युद्ध स्मारक पर संपन्न हुई। रक्षा मंत्री श्री राजनाथ सिंह ने टीम का स्वागत किया, जब राइडर्स स्मारक के प्रवेश द्वार से गुजरे। रास्ते में टीम ने चंडी मंदिर युद्ध स्मारक, रेजांग ला युद्ध स्मारक और लेह युद्ध स्मारक सहित कई प्रमुख सैन्य स्मारकों पर श्रद्धांजलि अर्पित की।

महत्त्व

रक्षा मंत्री ने कार्यक्रम को सम्बोधित करते हुए कहा कि कारगिल युद्ध की जीत 'हमारी भूमि, पहचान और सम्मान पर किसी भी शत्रुतापूर्ण नजर का पूरी ताकत से जवाब देने के भारत के स्थायी संकल्प' का प्रतिनिधित्व करती है। उन्होंने उन सैनिकों को श्रद्धांजलि अर्पित की जो लगभग 20,000 फीट की ऊँचाई पर शून्य से -40 डिग्री सेल्सियस से नीचे तापमान में लड़ते हुए हर चोटी, पर्वत और बंकर पर पुनः कब्जा कर लिया।

शौर्य विजय यात्रा 2026 ने देश को अपनी सशस्त्र सेनाओं से जोड़ने और 1999 के कारगिल नायकों के बलिदान की भावना को जीवित रखने का काम किया।

एडमिरल कृष्णा स्वामीनाथन
पीवीएसएम, एवीएसएम, वीएसएम
नौसेनाध्यक्ष

आईएनएस महेन्द्रगिरि

समुद्र में आत्मनिर्भर भारत का आधार

"भारत का समुद्री यात्राओं, वाणिज्य, नौसैनिक रक्षा और पोत निर्माण उद्योग का समृद्ध इतिहास रहा है। इसी गौरवशाली विरासत से प्रेरणा लेते हुए आज का भारत, विश्व की एक प्रमुख समुद्री शक्ति के रूप में उभर रहा है।"

-प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी,
आईएनएस ट्राइ-कमीशनिंग 2025

समुद्री क्षेत्र हमेशा से भारत की राष्ट्रीय सुरक्षा और आर्थिक प्रगति का केन्द्र रहा है। हमारा राष्ट्रीय व्यापार, मात्रा की दृष्टि से लगभग **95 प्रतिशत** और मूल्य के आधार पर करीब **70 प्रतिशत** समुद्री मार्ग से होता है। ऐसे में देश के विकास और सुरक्षा के लिए एक सक्षम नौसेना का होना अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है।

किसी भी सक्षम नौसेना की शक्ति का आधार, अपने ही देश में एक मज़बूत पोत निर्माण उद्योग होता है। अपने यहाँ आज हम जो उन्नत युद्धपोत और समुद्री क्षमताएँ देखते हैं, वह उसी प्रयास का परिणाम हैं जिसके बीज **छह दशक से भी पहले** बोए गए थे। भारत ने अपना पहला स्वदेशी युद्धपोत, आईएनएस *अजय*, लगभग उसी समय बनाया था जब पहली भारतीय कार असेम्बली-लाइन से निकल रही थी। युद्धपोत निर्माण एक अत्यन्त जटिल और विशिष्ट क्षेत्र है और इसकी अपनी चुनौतियाँ भी हैं। लेकिन अपने दृढ़ संकल्प की बदौलत हम यह बाधाएँ दूर करने में सक्षम हुए हैं।

इसी विरासत को आगे बढ़ाते हुए माननीय **प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी** ने रक्षा क्षेत्र में आत्मनिर्भरता पर जैसा बल दिया, उससे हमारे प्रयासों को गति मिली और राष्ट्रीय रक्षा क्षमताओं की सुदृढ़ नींव देश में ही पड़ना सुनिश्चित हो सका। इसी का परिणाम है कि आज भारत को अपने स्थानीय उद्योगों और सूक्ष्म, लघु एवं मझौले उद्यमों (MSMEs) पर गर्व है जो स्वदेश में निर्माण यात्रा की रीढ़ हैं।

हमारी इस बढ़ती क्षमता का उल्लेखनीय

प्रदर्शन हाल में देखने को मिला जब माननीय प्रधानमंत्री की उपस्थिति में, अग्रिम पंक्ति के तीन युद्धपोत एक साथ नौसेना में शामिल किए गए। केवल 18 महीनों में **यह दूसरी ऐसी ऐतिहासिक उपलब्धि** थी जो स्वदेशी युद्धपोत निर्माण की उल्लेखनीय प्रगति का प्रमाण है।

आज भारत विश्व के उन **छह देशों में से एक** है जिनके पास अपने ही देश में विमानवाहक पोत और परमाणु पनडुब्बियाँ डिज़ाइन करने और बनाने की क्षमता है। हमारे प्रारम्भिक प्रयासों से लेकर उन्नत समुद्री प्रौद्योगिकियों में महारत हासिल करने तक की यह निरंतर प्रगति, आत्मनिर्भरता की भावना साकार करने की हमारी दीर्घकालिक और अटूट प्रतिबद्धता दर्शाती है।

आईएनएस महेन्द्रगिरि-एक सामूहिक राष्ट्रीय प्रयास

11 जुलाई 2026 को विशाखापत्तनम में पूर्वी बेड़े (Eastern Fleet) में शामिल किया गया आईएनएस महेन्द्रगिरि भारत की बढ़ती समुद्री क्षमता का एक सशक्त प्रतीक है। **नौसेना के वॉरशिप डिज़ाइन ब्यूरो** में डिज़ाइन चरण से लेकर मुम्बई में **मझगाँव डॉक शिपबिल्डर्स लिमिटेड** में इस युद्ध पोत की निर्माण यात्रा ने सिद्ध कर दिया कि हमारे घरेलू उद्योग मिलकर क्या कुछ हासिल कर सकते हैं।

इस फ्रिगेट में **75 प्रतिशत** से अधिक स्वदेशी सामग्री का उपयोग हुआ है जो भारत की औद्योगिक क्षमता की व्यापकता दर्शाता है। इस युद्धपोत के निर्माण के लिए लगभग **4,000 टन** विशेष श्रेणी के इस्पात की आवश्यकता थी जिसे हमारे घरेलू अनुसंधान प्रयोगशालाओं ने सफलतापूर्वक विकसित किया और **भारतीय इस्पात प्राधिकरण (SAIL)** ने बोकारो, भिलाई और राउरकेला स्थित अपने संयंत्रों से इसकी आपूर्ति की।

6,670 टन के जल-विस्थापन और 28 नॉट तक की गति में सक्षम इस स्टेल्थ फ्रिगेट का निर्माण प्रोजेक्ट 17A के तहत किया गया। इसे हवाई, सतही और पानी के नीचे हर तरह के समुद्री ख़तरों से निपटने के लिए डिज़ाइन किया गया है। यह युद्धपोत सुपरसोनिक ब्रह्मोस क्रूज़ मिसाइल, उन्नत वायु रक्षा प्रणाली और पानी के भीतर के ख़तरों का पता लगाने तथा उन्हें निष्क्रिय करने में सक्षम शक्तिशाली सोनार प्रणालियों से लैस है। इससे पता चलता है कि अग्रिम रक्षा पंक्तियों के लिए अत्याधुनिक युद्ध प्रणालियाँ विकसित करने और उनकी आपूर्ति करने में भारतीय उद्योगों की क्षमता कितनी बढ़ रही है।

पोत निर्माण का आर्थिक इंजन

देश में युद्धपोत बनाने का वाणिज्यिक और व्यावसायिक महत्त्व, नौसैनिक शिपयार्डों से कहीं आगे जाकर राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था के व्यापक क्षेत्र तक पहुँचता है। प्रोजेक्ट 17A में, सूक्ष्म, लघु एवं मझौले उद्यमों सहित **200 से अधिक भारतीय उद्योगों** ने इस उन्नत फ्रिगेट को बनाने में योगदान दिया। केवल इसी परियोजना में रोज़गार के लगभग **4,000 प्रत्यक्ष और 10,000 से अधिक अप्रत्यक्ष अवसर** पैदा हुए।

लेकिन आर्थिक प्रभाव यहीं तक सीमित नहीं हैं। पोत निर्माण में निवेशित *हर एक रुपया, पूरी अर्थव्यवस्था में लगभग दो रुपये* की आर्थिक गतिविधि देता है। इसी प्रकार, शिपयार्ड में एक रोज़गार पैदा होने से, सहायक उद्योगों में रोज़गार के लगभग **छह अतिरिक्त अवसर** पैदा होते हैं। जनवरी 2025 में आयोजित ट्राइ-कमीशनिंग समारोह में माननीय प्रधानमंत्री ने कहा था कि इस क्षेत्र में लगभग **1.5 लाख करोड़ रुपये** का निवेश क़रीब **3 लाख करोड़** की आर्थिक गतिविधि पैदा करता है।

नौसैनिक आत्मनिर्भरता को मिली गति

आईएनएस *महेन्द्रगिरि* एक आर्थिक गुणक के रूप में ही नहीं, पोत निर्माण में हमारी दक्षता की महत्त्वपूर्ण प्रगति का भी प्रतीक है। उन्नत मॉड्यूलर निर्माण तकनीकों और भारतीय नौसेना तथा

शिपयार्डों के बीच निर्बाध समन्वय से, इस श्रेणी के फ्रिगेट निर्माण की अवधि में 20 प्रतिशत की कमी आई जो लगभग **95 महीने से घटकर 75 महीने** रह गई। जहाज़ बनाने का काम शुरू होने से लेकर तैयार करके सुपुर्द किए जाने तक की समय-सीमा भी लगभग आधी यानी **63 महीने से घटकर 31 महीने** रह गई। जहाँ पहले के युद्धपोतों को तकनीकी मूल्याँकन पूरे करने के लिए कई परीक्षण यात्राएँ करनी पड़ती थीं, वहीं महेन्द्रगिरि ने यह प्रक्रिया **एकल व्यापक समुद्री परीक्षण** में सफलतापूर्वक पूरी की।

उन्नत युद्धपोतों का देश में ही निर्माण और रखरखाव करने की क्षमता, समुद्री क्षेत्र में भारत की मज़बूती और भी सुदृढ़ करती है। वैश्विक आपूर्ति श्रृँखलाओं में बाधाएँ बढ़ने की आशंकाओं के मद्देनज़र युद्धक उपकरणों और कल-पुर्ज़ों का देश में ही उत्पादन होने से जहाँ बाहरी स्त्रोतों पर निर्भरता घटती है वहीं उच्च स्तर की सतत परिचालन तत्परता भी सुनिश्चित होती है।

भारत के रक्षा उद्योग की बढ़ती क्षमता इस बात से भी स्पष्ट है कि अब देश एक रक्षा निर्यातक के रूप में भी उभर रहा है। वित्त वर्ष 2025-26 में **1 लाख 78 करोड़ रुपये** तक का रिकॉर्ड रक्षा उत्पादन हुआ जबकि रक्षा निर्यात बढ़कर **38,424 करोड़ रुपये** का रहा। हमने **80 से अधिक** देशों को रक्षा उत्पाद निर्यात किए। आने वाले वर्षों में यह और अधिक तेज़ी से बढ़ने की पूरी सम्भावना है।

अगला मोर्चा उन प्रौद्योगिकियों में निहित है जो भविष्य के समुद्री अभियानों को आकार देंगी। समुद्र में प्रभावी ढंग से संचालन करने की भारतीय नौसेना की क्षमता को और मज़बूती देने के लिए कृत्रिम मेधा (AI), स्वायत्त प्रणाली, उन्नत सेंसर और डिजिटल नेटवर्क के क्षेत्र में निरंतर प्रगति की जा रही है।

ओडिशा के पूर्वी घाट के दृढ़ पर्वत शिखिरों के नाम पर रखा गया आईएनएस महेन्द्रगिरि हमारे समुद्री क्षेत्र का साहसिक प्रहरी और भारत की बढ़ती नौसैनिक शक्ति का प्रतीक है। डिज़ाइन से लेकर निर्माण तक की इसकी यात्रा दर्शाती है कि कैसे आत्मनिर्भरता एक **आकांक्षा** से आगे बढ़कर हमारी समुद्री शक्ति का **आधार** बन गई है। जैसे-जैसे राष्ट्र **विकसित भारत@2047** की दृष्टि लिए आगे बढ़ रहा है, भारतीय नौसेना देश के समुद्री हितों की रक्षा करते हुए एक ऐसे राष्ट्र की शक्ति का प्रतीक बनी रहेगी जो अपनी नियति गढ़ने और इसे सशक्त बनाए रखने में सक्षम है।

डॉ. जयतीर्थ आर. जोशी
महानिदेशक, ब्रह्मोस (BrahMos),
डीआरडीओ एवं सीईओ व प्रबंध निदेशक,
ब्रह्मोस एयरोस्पेस

सुपरसोनिक ब्रह्मोस

भारत की रक्षा उपकरण निर्यात की सम्भावनाओं का दृढ़ आधार

माननीय प्रधानमंत्री ने अपने मासिक रेडियो कार्यक्रम 'मन की बात' के नवीनतम अंक में भारत की दो स्वदेशी हथियार प्रणालियों के निर्यात को हाल में मिली कामयाबी का विशेष रूप से उल्लेख किया जिनमें सुपरसोनिक क्रूज़ मिसाइल ब्रह्मोस (BrahMos) प्रमुख है।

यह मेरे लिए अत्यंत गर्व और प्रसन्नता का विषय है कि मैं अपने देश में विकसित हुए इस दिल दहला देने वाले सामरिक हथियार की विश्वभर में निरंतर बढ़ती उपस्थिति के बारे में लिख रहा हूँ। इसने भारत की बढ़ती तकनीकी परिपक्वता, प्रौद्योगिक सम्प्रभुता, सामरिक स्वायत्तता तथा सैन्य क्षमता को बड़े ही प्रभावशाली तरीक़े से विश्व के समक्ष रखा है।

अत्याधुनिक तकनीकों और विनिर्माण की उत्कृष्ट क्षमता पर आधारित ब्रह्मोस (BrahMos) आज भारत के रक्षा-प्रौद्योगिकी तथा रक्षा-औद्योगिक परिवर्तन का एक सशक्त प्रतीक है। इस "सुविकसित" और "युद्ध में सिद्ध" सटीक प्रहार करने वाले हथियार पर विश्व समुदाय का निरंतर बढ़ता विश्वास इस बात का प्रमाण है कि महत्त्वाकांक्षी 'मेक इन इंडिया' अभियान को सुदृढ़ आधार मिल चुका है। अब भारत की यह यात्रा एक नए आयाम 'मेक फॉर द वर्ल्ड' में भी प्रवेश कर गई है। वर्ष 2022 में **फिलीपींस गणराज्य** से ऐतिहासिक निर्यात आदेश मिलने के बाद **ब्रह्मोस** ने भारत के रक्षा निर्यात इतिहास में एक स्वर्णिम अध्याय आरम्भ किया। यह अपनी श्रेणी और क्षमता की पहली ऐसी पूर्ण विकसित मिसाइल प्रणाली बनी जिसने अंतरराष्ट्रीय मिसाइल बाज़ार में सफलतापूर्वक प्रवेश किया।

तब से हमारी यह यात्रा निरंतर आगे बढ़ रही है और अब इंडोनेशिया गणराज्य हमारा नवीनतम रक्षा निर्यात साझेदार बना है। इंडोनेशिया के साथ हुआ यह ऐतिहासिक समझौता इतना महत्त्वपूर्ण है कि माननीय प्रधानमंत्री ने अपने रेडियो कार्यक्रम 'मन की बात' में इसका विशेष उल्लेख किया।

ब्रह्मोस कार्यक्रम के माध्यम से हमने आज भारत में एक व्यापक, सुदृढ़ और गतिशील रक्षा तंत्र विकसित किया है। ब्रह्मोस मिसाइल उद्योग संघ के ढाँचे के तहत हम सार्वजनिक एवं निजी क्षेत्र के अनेक रक्षा और एयरोस्पेस उद्योगों, विशेषकर सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यमों (MSMEs) के साथ घनिष्ठ सहयोग कर रहे हैं। ये सभी मिलकर ब्रह्मोस की समूची श्रृंखला की रीढ़ बनाते हैं।

यहाँ मैं कुछ प्रमुख आँकड़े और तथ्य रेखांकित करना चाहूँगा जो इस बात की पुष्टि करते हैं कि ब्रह्मोस एयरोस्पेस हमेशा देश की प्रगति, आत्मनिर्भरता और समग्र विकास की अग्रिम पंक्ति में रहा है।

भारत के रक्षा अनुसंधान एवं विकास संगठन (DRDO) तथा रूस के एनपीओएम (NPOM) के संयुक्त रक्षा उपक्रम के रूप में ब्रह्मोस एयरोस्पेस की स्थापना 1998 में 30 करोड़ अमरीकी डॉलर की प्रारम्भिक पूँजी से हुई थी। आज यह कम्पनी लगभग 3.4 अरब अमरीकी डॉलर (लगभग 35,400 करोड़) मूल्य के आदेश सफलतापूर्वक पूरे कर चुकी है जबकि

अभी इसे लगभग 3.6 अरब अमरीकी डॉलर (लगभग 37,500 करोड़) मूल्य के ऑर्डर मिले हुए हैं। केवल वर्ष 2026 में ही कम्पनी का राजस्व 5,200 करोड़ (लगभग 50 करोड़ अमरीकी डॉलर) का आँकड़ा पार कर गया। यह उपलब्धि, देश और विदेश– दोनों स्तर पर ब्रह्मोस मिसाइल प्रणाली के लिए निरंतर मिल रहे आदेशों के कारण सम्भव हुई है। वर्ष 2029–30 में वार्षिक रक्षा निर्यात 50,000 करोड़ तक पहुँचाने के भारत सरकार के लक्ष्य के अनुरूप, ब्रह्मोस पहले ही स्पष्ट, सशक्त

और निर्णायक बढ़त हासिल कर चुका है।

रोज़गार के अवसर उपलब्ध करवाने में भी इस संयुक्त उद्यम ने उल्लेखनीय योगदान दिया है। ब्रह्मोस एयरोस्पेस सीधे तौर पर 1,000 से अधिक अतिकुशल पेशेवरों को नौकरी दे चुका है जिनमें अभियंता, विज्ञानी, शोधकर्ता और तकनीकी प्रबंधक शामिल हैं। इसके अलावा, ब्रह्मोस मिसाइल उद्योग कंसोर्टियम के माध्यम से व्यापक आपूर्ति शृंखला, सहायक उद्योगों तथा अन्य सम्बद्ध सेवाओं से जुड़े 20,000 से अधिक लोगों को भी परोक्ष रूप से रोज़गार और आजीविका के अवसर मिले हैं। सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यमों (MSMEs) तथा स्टार्ट-अप्स सहित सार्वजनिक और निजी क्षेत्र की 200 से अधिक संस्थाओं के साथ हमारी दीर्घकालिक साझेदारी ने ब्रह्मोस हथियार प्रणाली के लिए आवश्यक, अनेक महत्त्वपूर्ण पुर्ज़ों, प्रणालियों और उप-प्रणालियों की एक सुदृढ़ एवं निर्बाध आपूर्ति शृंखला सुनिश्चित की है। इसके अतिरिक्त, विभिन्न अनुसंधान प्रयोगशालाओं तथा देश के अग्रणी शैक्षणिक एवं अकादमिक संस्थानों के साथ हमारा सहयोग स्वदेशीकरण के प्रयासों को और अधिक सशक्त कर रहा है। इससे 'आत्मनिर्भर भारत' के दृष्टिकोण को गति और स्वदेशी रक्षा प्रौद्योगिकी के विकास को नया बल मिला है।

वर्ष 2025 में उत्तर प्रदेश के लखनऊ में हमारी सबसे बड़ी और अत्याधुनिक ब्रह्मोस इंटीग्रेशन एवं टेस्टिंग सुविधा की स्थापना तथा इसके सफलतापूर्वक संचालन से, देश में हमारे क्षमता निर्माण और क्षमता विस्तार कार्यक्रम को नई गति मिली है। यह नई सुविधा उत्तर प्रदेश में एक बड़ा बदलाव लाकर इसे आने वाले वर्षों में, देश का अगला प्रमुख रक्षा एवं एयरोस्पेस हब बनाने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा सकती है।

दुनिया पहले ही ब्रह्मोस का उत्कृष्ट प्रदर्शन और क्षमताओं से अवगत हो चुकी है- यह एक "स्मार्ट", "स्टेल्थी" और आधुनिक काइनेटिक हथियार है जो हाल में उत्पन्न संघर्ष की एक स्थिति के दौरान अपनी अजेय क्षमता सिद्ध कर चुका है। भूमि, समुद्र और वायु- तीनों मंचों पर सार्वभौमिक रूप से एकीकृत एक अनुपम

प्रतिरोधक प्रणाली के रूप में ब्रह्मोस भारत की तीनों सेनाओं के बीच तालमेल, एकीकरण और समन्वय का प्रमुख आधार है। यह अत्यंत बहुमुखी मिसाइल निरंतर विकसित होती रही है। सुरक्षा के आज के अत्यधिक अस्थिर और नाज़ुक माहौल में हमारी सशस्त्र सेनाओं के हर समय युद्ध के लिए तैयार रहने की आवश्यकता को देखते हुए इसकी तकनीकी, परिचालन और कार्यात्मक क्षमताओं में निरंतर उन्नयन एवं विस्तार किया गया है।

एक उच्चस्तरीय और अत्याधुनिक सैन्य उत्पाद के रूप में ब्रह्मोस ने सटीक इंजीनियरिंग, धातुकर्म, प्रणोदन (प्रॉपल्शन) विज्ञान, मार्गदर्शन प्रणालियों तथा अंतर्निहित (ऐम्बेडिड) सॉफ्टवेयर सहित कई महत्त्वपूर्ण क्षेत्रों में हमारे निरंतर अनुसंधान एवं विकास तथा नवाचार की मदद से स्पर्धात्मक बढ़त बनाए रखी है। विश्व की सर्वश्रेष्ठ सुपरसोनिक क्रूज़ मिसाइल के रूप में अपनी यह बढ़त बनाए रखने के लिए हमारी अगली पीढ़ी की ब्रह्मोस के डिज़ाइन और उसे तैनात करने की योजनाएँ भी आगे बढ़ी हैं जिसमें इसे मौजूदा ब्रह्मोस से अधिक कॉम्पैक्ट और अधिक घातक उत्तराधिकारी के रूप में विकसित करने की परिकल्पना की गई है।

ब्रह्मोस-एनजी (BrahMos-NG) भविष्य के युद्धक्षेत्रों में क्रांति ला सकती है। अपने ही देश की बेहतर प्रौद्योगिकियों और सामग्री से युक्त यह मिसाइल भूमि, समुद्र और वायु के आधुनिक सैन्य मंचों की व्यापक श्रृंखला के साथ एकीकृत करने तथा बड़ी संख्या में तैनाती के लिए डिज़ाइन की जा रही है। विकास के पहले चरण में हमारी योजना इस मिसाइल को भारत के हवाई प्लेटफॉर्मों पर एकीकृत करने की है—प्रारम्भ में सु-30 एमकेआई (Su-30MKI) पर और इसके बाद एलसीए (LCA) तेजस पर। तत्पश्चात यह हथियार युद्धपोतों, पनडुब्बियों और ज़मीन पर तैनाती के लिए विकसित एवं अनुकूलित किया जा सकता है।

यही नहीं, अपनी अत्यंत नवीन विशेषताओं और अत्याधुनिक क्षमताओं के कारण ब्रह्मोस-एन जी (BrahMos-NG) में निर्यात के आकर्षक अवसरों के व्यापक द्वार खोलने की अपार सम्भावनाएँ भी हैं। इनकी बदौलत निकट भविष्य में, वैश्विक बाज़ार में उच्चस्तरीय सैन्य उपकरणों के एक अग्रणी निर्माता और निर्यातक के रूप में भारत की स्थिति और अधिक मज़बूत एवं सुदृढ़ होने की आशा है।

अर्चना वर्मा
सचिव, जल संसाधन विभाग
जल शक्ति मंत्रालय

क्या होता है जब मिलता है बारिश की एक बूँद को अपना बसेरा?

ज़रा सोचिए, मानसून के बादलों से बारिश की एक बूँद गिरी! वह ओडिशा में कहीं किसी घर की छत पर गिरती है। दूसरी बूँद छत्तीसगढ़ में फिर से जीवन दान मिले किसी तालाब में जा गिरती है। एक अन्य बूँद आन्ध्र प्रदेश में बने एक रिचार्ज शाफ्ट में चुपके से समा जाती है। वहीं, एक और बूँद मध्य प्रदेश के खेत-तालाब की मिट्टी से होती हुई ज़मीन के भीतर चली जाती है। एक पल को ये बूँदें नगंय-सी लग सकती हैं। पर जब ये बूँदें एक साथ मिलती हैं तो वे आज भारत में गढ़ी जा रही सबसे महत्त्वपूर्ण कहानियों में से एक को बयान करती हैं– कहानी जल सुरक्षा, सामुदायिक सहभागिता और बारिश की हर एक बूँद की अहमियत समझने वाले एक राष्ट्र की। और यह कहानी है 'कैच द रेन' (Catch the Rain) की।

28 जून 2026 को अपने मन की बात के 135वें अंक में माननीय प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने नागरिकों से "बारिश की हर बूँद के संचय" का आह्वान करते हुए, जल संरक्षण को जन आंदोलन में बदल डालने को कहा। उनका संदेश सरल किंतु बेहद प्रभावशाली था: "कैच द रेन" – बारिश जब हो जहाँ हो, पानी वहीं सहेजें।

इस आह्वान के जवाब में 4 जुलाई 2026 से देशभर में एक विशेष अभियान चलाया जा रहा है, जिसने वर्षा जल संचयन, भूजल पुनर्भरण, पारम्परिक जल निकायों में फिर से प्राण फूँकने, वृक्षारोपण अभियान और सामुदायिक भागीदारी को नई गति प्रदान की है। यह केवल एक अभियान न होकर एक ऐसा सामुदायिक प्रयास सुनिश्चित करने की कोशिश है जिससे भारत की जल सुरक्षा में बारिश की हर बूँद का योगदान हो।

मूल प्रश्न सरल है– बारिश की एक बूँद को अपना ठौर मिल जाने पर क्या होता है?

देशभर में पारम्परिक पोखर, तालाब, नालों जैसे जल निकायों से गाद निकालकर जीवनदान दिया जा रहा है। उन्हें वैज्ञानिक उपायों से जल प्रबंधन की आधुनिक प्रणालियों में एकीकृत किया जा रहा है।

जलभौमिकी आकलन, भूजल मानचित्रण, भूजल पुनर्भरण की योजना, डिजिटल निगरानी और वैज्ञानिक तरीकों से स्थल चयन करके, जल संरक्षण के प्रयास अधिक कारगर बनाने में मदद मिल रही है। प्राचीन ज्ञान और आधुनिक विज्ञान मिलकर, जल सुरक्षा तथा जलवायु परिवर्तन के अनुकूल ढलने की हमारी क्षमता मज़बूत कर रहे हैं।

देशभर में प्रभाव का आकलन

ओडिशाः हर छत अहम है

ओडिशा में नागरिकों ने स्थानीय जल सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए वर्षा जल संचयन को एक व्यावहारिक समाधान के रूप में अपनाया है।

राज्य में, वर्षा जल संचयन और भूजल पुनर्भरण के लिए 905 संरचनाएँ बनाई गई हैं जिनमें 849 रूफ़टॉप वर्षा जल संचयन प्रणालियाँ और 56 रिचार्ज शाफ्ट शामिल हैं। इन प्रयासों से पता चलता है कि शहरी और ग्रामीण समुदाय, छतों को बहुमूल्य जल संसाधनों में ही नहीं बदल सकते बल्कि भूजल दोहन पर अपनी निर्भरता भी कम कर सकते हैं।

आन्ध्र प्रदेशः जल नेटवर्क में बड़े पैमाने पर प्राणसंचार

देश के सबसे महत्त्वाकांक्षी जल संरक्षण प्रयासों में से एक अभियान, विजयनगरम् ज़िले में चलाया जा रहा है। जिले में 8,973 जल संरक्षण कार्य पूरे हुए, 6,424 लघु सिंचाई टंकियों को मरम्मत करके जीवनदान दिया गया और 2,549 फ़ीडर चैनल बहाल करके इस अभियान के तहत रोज़गार के 1 करोड़ 28 लाख मानव-दिवस पैदा हुए, 109.9 लाख घनमीटर गाद निकाली गई और 82 लाख 48 हज़ार वर्गमीटर क्षेत्र से झाड़ियाँ और खर-पतवार हटाई गईं। इसके अलावा, 2,090 किलोमीटर से अधिक फीडर चैनल मरम्मत करके दुरुस्त किए गए। इन प्रयासों से 0.70 टीएमसी अतिरिक्त जल भंडारण और लगभग 0.60 टीएमसी भूजल पुनर्भरण होने की उम्मीद है जिससे भूजल की कमी वाले 193 गाँवों को लाभ मिलेगा।

इसी प्रकार नान्दयाल ज़िले में 2,103 जल संरक्षण कार्य, 251 सिंचाई

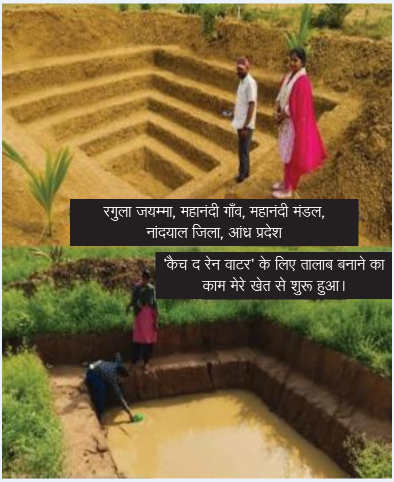

टंकियों में सुधार और 2,691 किलोमीटर फ़ीडर चैनलों में प्राण फूँके गए हैं। इन प्रयासों से 3.27 टीएमसी अतिरिक्त जल भंडारण होने की उम्मीद है, जिससे कृषि और स्थानीय समुदायों के लिए जल की उपलब्धता बेहतर करने में मदद मिलेगी।

छत्तीसगढ़ः सामुदायिक सहभागिता से मिले परिणाम

बालोद ज़िले के समुदायों ने जल संरक्षण के लिए मिलकर लगभग 2 लाख 85 हज़ार संरचनाएँ बनाई हैं। 14.3 किलोमीटर लम्बे तवेरा नाले के किनारे 6,250 से अधिक जल संरक्षण सम्बन्धी कार्य किए गए जिससे साढ़े 6 करोड़ लीटर अतिरिक्त वर्षा जल का संचय सम्भव हुआ है। पड़ोसी राजनान्दगाँव ज़िले के गाँवों में 60,000 से अधिक भूजल पुनर्भरण सम्बन्धी ढाँचे विकसित किए गए हैं। इसके अलावा, 500 अनुपयोगी बोरवेल को रिचार्ज शाफ्ट में बदला गया है जिससे भूजल पुनर्भरण बेहतर हुआ है। इन प्रयासों से भूजल स्तर में अनुमानित 2.04 मीटर की वृद्धि हुई और रोज़गार के 51 लाख से अधिक मानव-दिवस सृजित हुए।

महाराष्ट्रः जल दक्षता और कृषि क्षेत्र में मज़बूती

नाशिक ज़िले में जल संरक्षण के 2,199 कार्य पूरे किए गए जिससे 12,243 टीसीएम जल भंडारण क्षमता बनी या बहाल की गई। इन प्रयासों से 2,931 हेक्टेयर क्षेत्र में सिंचाई क्षमता फिर से बढ़ाने में मदद मिली, जबकि सूक्ष्म सिंचाई का दायरा बढ़कर 1.75 लाख हेक्टेयर हो गया। इनसे जल के अधिक दक्ष उपयोग को बढ़ावा और सतत कृषि को मज़बूती मिली है।

भारत के प्रमुख जल कार्यक्रमों को मदद

'कैच द रेन' का प्रभाव केवल अलग अलग परियोजनाओं तक सीमित नहीं है।

यह अभियान, पेयजल आपूर्ति के स्त्रोतों की दीर्घकालिक स्थिरता सुदृढ़ करके, जल जीवन मिशन के उद्देश्य पूरे करने में भी सहायक है। यह 'जल संचय

जन भागीदारी' पहल के तहत, समुदाय के नेतृत्व में भूजल पुनर्भरण और जल प्रबन्धन को बढ़ावा देता है। यह जल संरक्षण, जल का उचित उपयोग और सहभागी जल शासन को प्रोत्साहित करके, राष्ट्रीय जल मिशन को भी आगे बढ़ाता है।

यह सभी पहल मिलकर, सतत जल प्रबन्धन का एक व्यापक और समग्र ढाँचा तैयार करती हैं।

आँकड़ों से परेः कहानी आपकी और मेरी

मूल रूप से, 'कैच द रेन' के केन्द्र में केवल कंक्रीट, इंजीनियरिंग या जल भंडारण क्षमता ही नहीं है।

बात तो इंसान के दिल की है। यह उन जल-संकटग्रस्त क्षेत्रों की माताओं की कहानी है जिन्हें अब तपती धूप में मीलों पैदल चलकर पानी लाने की ज़रूरत नहीं पड़ती, क्योंकि उन्होंने स्वयं आगे बढ़कर जल संचय के लिए संरचनाएँ तैयार कीं और उनकी ज़िम्मेदारी भी सम्भाली। यह उस डिजिटल पीढ़ी की कहानी है जिसे उदासीन बने रहना गवारा नहीं था और जिसकी बदौलत 5 जुलाई 2026 को सोशल मीडिया X पर #CatchTheRain भारत में पहले नम्बर का ट्रेंडिंग विषय बना। यह इस बात का प्रमाण है कि हमारी आधुनिक दुनिया का दिल आज भी सतत विकास के लिए धड़कता है।

जल संरक्षण की सबसे अहम संरचना तो आप हैं

हम जब भी जल संरक्षण के बारे में सोचते हैं तो प्रायः मन में बांध, जलाशय और नहरों की तस्वीर उभरती हैं। लेकिन जल संचयन की सबसे महत्त्वपूर्ण संरचना कंक्रीट से नहीं, हम लोगों से बनती है। कोई छात्र जागरूकता का प्रसार करता है, कोई शिक्षक युवा मन को शिक्षित करता है, कोई किसान जल-कुशल कृषि पद्धतियाँ अपनाता है, कोई समुदाय तालाब को जीवनदान देता है, या कोई नागरिक हर एक बूँद का महत्त्व समझते हुए उसे सहेजता है– इनमें से हर एक प्रयास, जल सुरक्षा में योगदान देता है।

यही भावना है 'कैच द रेन' की। भारत में जल का भविष्य केवल सरकारी कार्यक्रमों से नहीं, बल्कि करोड़ों लोगों के व्यक्तिगत प्रयासों से भी आकार लेगा।

हर बूँद कीमती
जल संरक्षण की कहानियाँ

पूरे देश में 4 जुलाई से 4 अगस्त, 2026 तक 'कैच द रेन' अभियान चलाया गया। इसे 28 जून, 2026 को 'मन की बात' के 135वें एपिसोड में प्रधानमंत्री मोदी की अपील के बाद शुरू किया गया था। यह अभियान 1 जून, 2026 को शुरू किए गए 'जल संचय जन भागीदारीः कैच द रेन' (**JSJB : CTR**) पर आधारित है। इसमें जेएसजेबी को 'जल शक्ति अभियानः कैच द रेन' अभियान के साथ मिलाया गया है। इसका मुख्य फोकस बारिश के पानी को इकट्ठा करने (रेनवाटर हार्वेस्टिंग), जमीन के नीचे के पानी को फिर से भरने (ग्राउंडवाटर रिचार्ज) और पानी के पारम्परिक स्त्रोतों को पुनर्जीवित करने पर है।

इस अभियान का मुख्य आधार 'जन भागीदारी' है। इसके तहत पंचायती राज संस्थाओं, शहरी स्थानीय निकायों, महिला समूहों, युवाओं, शिक्षण संस्थानों, नागरिक समाज संगठनों और स्थानीय समुदायों को जल संरक्षण के प्रयासों में सक्रिय रूप से शामिल होने के लिए प्रेरित और संगठित किया जाता है।

जल शक्ति अभियानः 'कैच द रेन' (**JSJB : CTR**) को सबसे पहले प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने विश्व जल दिवस (22 मार्च 2021) पर 'कैच द रेन, वेयर इट फॉल्स, व्हेन इट फॉल्स' (बारिश का पानी वहीं रोकें और संजोएं, जहाँ और जब वह गिरे) की थीम के साथ शुरू किया था। यह अभियान जल शक्ति अभियान 2019 की सफलता पर आधारित है।

इस अभियान के शुरू होने के बाद पूरे भारत में एक मूक क्रांति आई। इसमें गाँवों और शहरों के लोग बारिश की हर बूँद को वहीं रोकने और संजोने के लिए एकजुट हुए, जहाँ वह गिरती थी। सिधी (मध्य प्रदेश) में गाद-मुक्त किए गए तालाबों से लेकर नासिक (महाराष्ट्र) में बढ़ती जल भंडारण क्षमता और नांदयाल (आंध्र प्रदेश), भुवनेश्वर (ओडिशा) और विजयनगरम (आंध्र प्रदेश) में पुनर्जीवित किए गए जल स्रोतों तक – लोगों के ये प्रयास जल संरक्षण के प्रति उनकी साझा प्रतिबद्धता को दर्शाते हैं।

सिधी, मध्य प्रदेश

विजयनगरम, आंध्र प्रदेश

नासिक, महाराष्ट्र

भुवनेश्वर, ओडिशा

कोरबा, छत्तीसगढ़

नंद्याल, आंध्र प्रदेश

नारी शक्ति

खेलों में भारत की ऐतिहासिक जीत

एक ही वर्ष के दौरान भारत की महिलाओं ने दो अलग-अलग खेलों - बैडमिंटन और क्रिकेट में फिर से कीर्तिमान स्थापित किया है। टोक्यो में खिताबी कमी को दूर करने वाले एक अकेले "शटलर" से लेकर एक टीम ने पहला विश्व कप और 'होम ऑफ क्रिकेट' दोनों को जीता है। ये जीत एक साथ विश्व मंच पर भारत की महिलाओं की बढ़ती शक्ति - नारी शक्ति की भावना को दर्शाती है।

पी.वी सिंधु ने जापान में रचा इतिहास

जापान ओपन बैडमिंटन के सबसे प्रतिष्ठित टूर्नामेंटों में से एक है। इसे बैडमिंटन वर्ल्ड फेडरेशन (BWF) द्वारा सुपर 750 इवेंट-वैश्विक स्तर पर सर्वश्रेष्ठ पाँच में से एक के रूप में वर्गीकृत किया गया है। खेल में भारत की लम्बी परम्परा के बावजूद, किसी

भी भारतीय पुरुष या महिला खिलाड़ी ने 2026 से पहले कभी यह खिताब नहीं जीता था।

यह 19 जुलाई, 2026 को बदल गया, जब पी.वी सिंधु टोक्यो मेट्रोपॉलिटन जिमनैजियम में महिला एकल फाइनल में दुनिया की नंबर 3 अकाने यामागुची को 21-17, 21-17 से हराकर जापान ओपन जीतने वाली पहली भारतीय बनीं। यह जीत सिंधु का पहला बीडब्ल्यूएफ सुपर 750 खिताब था। इस खिताब ने दो साल से अधिक समय से खिताबी कमी को दूर किया और 2019 बीडब्ल्यूएफ विश्व

चैम्पियनशिप के बाद से उनकी सबसे बड़ी जीत दर्ज की।

भारतीय महिला क्रिकेट टीम की लॉर्ड्स क्रिकेट ग्राउंड पर जीत

भारत की महिलाओं ने पिछले साल पहले ही देश के क्रिकेट इतिहास में सबसे बड़ी जीत में से एक की पटकथा लिखी

2005 और 2017 में उप-विजेता रहने के बाद पहली बार ट्रॉफी जीती।

विश्व कप की जीत के एक साल से भी कम समय बाद और टोक्यो में सिंधु की जीत से कुछ दिन पहले, उसी भारतीय टीम ने और भी अधिक ऐतिहासिक जीत हासिल की। 13 जुलाई, 2026 को, भारत ने लॉर्ड्स में खेले गए पहले महिला टेस्ट मैच में इंग्लैंड को 270 रनों से हराया। लॉर्ड्स मैदान ने इस इवेंट की मेजबानी के लिए 142 साल इंतजार किया था।

थी। 2 नवम्बर, 2025 को हरमनप्रीत कौर की टीम ने नवी मुंबई के डीवाई पाटिल स्टेडियम में आईसीसी महिला क्रिकेट विश्व कप के फाइनल में दक्षिण अफ्रीका को 52 रनों से हराया। भारतीय टीम ने

लॉर्ड्स की जीत को और भी मार्मिक बनाने वाली बात यह थी कि भारत की क्रिकेट स्मृति में मैदान का अपना स्थान था। यहीं पर भारत ने 1983 में अपना पहला क्रिकेट विश्व कप जीता था। उसे समय यह एक ऐसी जीत थी जिसने देश में खेल की स्थिति को बदल दिया। मन की बात में इस सम्बंध पर विचार करते हुए, प्रधानमंत्री ने कहा कि लॉर्ड्स के लम्बे इतिहास में, यह किसी महिला टीम द्वारा खेला गया पहला टेस्ट मैच था और जिस मैदान ने 1983 के विश्व कप में भारत का गौरव देखा था, उसने अब देश की नारी शक्ति को एक बार फिर गौरव दिलाते हुए देखा है।

यादगार सीजन

कुल मिलाकर, एक पहला विश्व कप, क्रिकेट के सबसे सुपरिचित मैदान पर एक ऐतिहासिक टेस्ट जीत और टोक्यो में एक अकेले "शटलर" की सफलता एक बृहद गाथा को दर्शाती है। भारतीय महिलाओं ने, खेल में क्या सम्भव है, इसे लगातार फिर से प्रमाणित किया है। ये जीत एक यादगार है कि जब अवसर को तैयारी के साथ जोड़ा जाता है, तो एक सदी से अधिक समय तक खड़े रिकॉर्ड गिर सकते हैं। जैसा कि प्रधानमंत्री ने कहा, यह नारी शक्ति है जो राष्ट्र को निरंतर गौरव प्रदान कर रही है।

'अक्षरकंदुकम'

खेल-खेल में संस्कृत

खेल और शिक्षा का संगम सीखने की प्रक्रिया को बेहद रोचक बना देता है। केरलम के एर्णाकुलम स्थित साउथ चित्तूर में ऐसा ही एक अनूठा प्रयास देखने को मिला है, जिसकी माननीय प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने 'मन की बात' में विशेष रूप से सराहना की है। यहाँ के एक स्कूल के 'संस्कृत क्लब' के शिक्षक अभिलाष टी. प्रताप ने भाषा को सहज बनाने के लिए 'अक्षरकंदुकम' नाम से एक अभिनव प्रोजेक्ट शुरू किया है। इसके तहत बच्चों के पसंदीदा खेल फुटबॉल में इस्तेमाल होने वाले शब्दों के माध्यम से संस्कृत के अक्षरों को बड़ी ही आसानी से सिखाया जा रहा है। इस दिलचस्प पहल ने संस्कृत को एक पारम्परिक विषय के बजाय एक मज़ेदार अनुभव में बदल दिया है।

“अक्षरकंदुकम का विचार एक सरल सोच से पैदा हुआ कि सीखना तब अधिक सार्थक हो जाता है जब यह बच्चों की रुचियों और अनुभवों से जुड़ता है। मैं फुटबॉल के रोमांच को संस्कृत की कक्षा में लाना चाहता था और छात्रों को दिखाना चाहता था कि संस्कृत केवल पाठ्यपुस्तकों तक सीमित कोई पारम्परिक भाषा नहीं है, बल्कि एक जीवंत भाषा है।”

“सबसे महत्त्वपूर्ण बात यह है कि इससे कक्षा का माहौल पूरी तरह बदल जाता है। संस्कृत को केवल एक ऐसे विषय के रूप में देखने के बजाय जिसका उन्हें अध्ययन करना है, छात्र इसे एक ऐसी वस्तु के रूप में अनुभव करने लगते हैं जिसके साथ वे खेल सकते हैं और आनंद ले सकते हैं। ‘मन की बात’ में अक्षरकंदुकम की सराहना ने मेरे इस विश्वास को और मज़बूत किया है।”

“मेरा दृढ़ विश्वास है कि संस्कृत का भविष्य केवल इसके गौरवशाली अतीत को संरक्षित करने पर ही नहीं, बल्कि इसे युवा पीढ़ी के सामने सार्थक तरीके से प्रस्तुत करने पर भी निर्भर करता है। आज के बच्चे तकनीक, खेल, दृश्य माध्यमों और इंटरैक्टिव अनुभवों से घिरे हुए हैं। यदि संस्कृत शिक्षा को केवल पारम्परिक तरीकों से ही प्रस्तुत किया जाता रहा, तो शायद हम कई युवा मस्तिष्कों तक नहीं पहुँच पाएँगे।”

-अभिलाष टी. प्रताप, संस्कृत शिक्षक, केरलम

पवन कुमार चंदना
सीईओ और सह-संस्थापक,
स्काईरूट एयरोस्पेस

प्रारम्भ से आगमन तक

भारत का नया अंतरिक्ष युग

एक फ़ोनकॉल जो सदा रहेगी याद

विक्रम-1 के सफलतापूर्वक कक्षा में स्थापित होने पर हमें जो पहली फ़ोनकॉल मिली वह माननीय प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी जी की थी। हमारी पूरी टीम के लिए यह बेहद भावुक पल था। वर्षों तक सपने देखने, डिज़ाइन तैयार करने, परीक्षण करने और इंजीनियरिंग की अनगिनत चुनौतियों का सामना करने के बाद जब हमने प्रधानमंत्री जी को हमारी युवा टीम को बधाई देते सुना तो ऐसा लगा मानो यह उपलब्धि केवल स्काईरूट की नहीं, समूचे भारत की है। इसके कुछ ही समय बाद हमें उनसे व्यक्तिगत रूप से मिलने का अवसर मिला। उन्होंने हमारी कर्मयात्रा, हमारी तकनीक और भविष्य के बारे में हमारा दृष्टिकोण समझने का समय निकाला था। उनसे मिला प्रोत्साहन हमारे इस विश्वास को और मज़बूती देता है कि आज भारत उन लोगों को पलकों पर बिठाता है जो कुछ असाधारण कर गुज़रने का साहस रखते हैं।

प्रारम्भः जहाँ से यात्रा शुरू हुई

हमारी यात्रा बहुत पहले आरम्भ हो चुकी थी। 18 नवम्बर 2022 को 'मिशन प्रारम्भ' के तहत विक्रम-एस ने उड़ान भरी और अपनी पहली उप-कक्षीय उड़ान में अंतरिक्ष तक पहुँचने वाला भारत का पहला निजी रूप से विकसित रॉकेट बन गया। एक शुरुआती चरण के स्टार्टअप के लिए यह मिशन एक महत्त्वपूर्ण मील का पत्थर था। इसने उन तकनीकों, विनिर्माण की प्रक्रियाओं और इंजीनियरिंग प्रणालियों को प्रमाणित किया जो आगे चलकर विक्रम शृंखला के प्रक्षेपण यानों की आधारशिला बनीं। इससे भी अधिक महत्त्वपूर्ण यह था कि इस मिशन ने उद्यमियों की एक पूरी पीढ़ी में यह विश्वास जगाया कि भारत के निजी अंतरिक्ष क्षेत्र ने आख़िर अपनी मंज़िल पा ली है।

अंतरिक्ष के द्वार खोलने वाले सुधार

भारत ने एक ऐसा अनुकूल और सक्षम तंत्र

तैयार किया जिसकी वजह से यह सम्भव हो सका। अंतरिक्ष क्षेत्र में भारत सरकार के घोषित सुधारों, इन-स्पेस (IN-SPACe) की स्थापना तथा इसरो के निरंतर सहयोग और मार्गदर्शन ने, स्टार्टअप्स की आकांक्षाओं को पंख लगा दिए। निजी कम्पनियाँ केवल दर्शक बने रहने की बजाय, भारत के राष्ट्रीय अंतरिक्ष कार्यक्रम में सक्रिय भागीदार बन गईं। दूरदर्शी नीतियों, वैज्ञानिक उत्कृष्टता और उद्यमशील ऊर्जा के समन्वय से असाधारण सम्भावनाओं के द्वार खुल गए।

इन्फ़िनिटीः बड़े पैमाने पर रॉकेट निर्माण

हमारी यात्रा में एक अन्य पड़ाव 27 नवम्बर 2015 को आया जब माननीय प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने वर्चुअली, स्काईरूट के एकीकृत रॉकेट विनिर्माण एवं अभियांत्रिकी परिसर का उद्घाटन किया। भारत की सबसे बड़ी निजी रॉकेट निर्माण सुविधा की अवधारणा लिए 'इन्फ़िनिटी' महज़ एक बुनियादी ढाँचे से कहीं अधिक है। यह बड़े पैमाने पर रॉकेट निर्माण और अंतरिक्ष तक की पहुँच को अधिक नियमित, भरोसेमंद तथा किफ़ायती बनाने की हमारी महत्त्वाकांक्षा का प्रतीक है। यह

इस दृष्टिकोण की सशक्त पुष्टि थी कि भारत, अंतरिक्ष प्रौद्योगिकी का एक वैश्विक केंद्र बन सकता है।

आगमनः विक्रम-1 पृथ्वी की कक्षा में पहुँचा

हमारी सारी मेहनत का फल अंततः विक्रम-1 के रूप में सामने आया। कक्षीय प्रक्षेपण यान का निर्माण, दुनिया की सबसे चुनौतीपूर्ण इंजीनियरिंग में से एक है। इसके प्रत्येक चरण, प्रत्येक इंजन, प्रत्येक सॉफ्टवेयर कमांड और प्रत्येक संरचनात्मक घटक को असाधारण सटीकता से काम करना होता है। विक्रम-1 ने अपनी पहली ही उड़ान में सफलतापूर्वक कक्षा हासिल करके न केवल एक कम्पनी की क्षमता प्रदर्शित की अपितु भारत के तेज़ी से विकसित हो रहे नवाचार तंत्र की ताक़त भी सिद्ध की।

1,000+ लोग, औसत आयु 28 वर्ष

हर प्रक्षेपण के पीछे एक अद्भुत टीम की कड़ी मेहनत होती है। आज स्काईरूट की ताक़त इसके 1,000 से अधिक कर्मचारियों की टीम है जिनकी औसत आयु केवल 28 वर्ष है। मैं जब भी हमारी प्रयोगशालाओं, विनिर्माण इकाइयों और मिशन नियंत्रण कक्षों से होकर गुज़रता हूँ तो मुझे भारतीय इंजीनियरों की नई पीढ़ी का आत्मविश्वास, जिज्ञासा और दृढ़ संकल्प दिखाई देता है। वे ऐसी समस्याओं का समाधान कर रहे हैं जिन्हें कभी हमारी पहुँच से परे माना जाता था। ऐसा इसलिए नहीं कि उनके पास दशकों का अनुभव है, बल्कि इसलिए कि इनमें पारम्परिक मान्यताओं पर सवाल उठाने का साहस है

और इन्हें नवाचार के अवसर मिले हैं। मेरे लिए यही नए भारत का वास्तविक चेहरा हैं– युवा, महत्त्वाकांक्षी, वैश्विक स्तर पर प्रतिस्पर्धी और राष्ट्र निर्माण के प्रति पूरी तरह समर्पित।

इन इंजीनियरों को मिलकर काम करते देखकर मुझे भरोसा होता है कि भारत की सबसे बड़ी ताक़त केवल उसकी तकनीक नहीं अपितु उसके लोग हैं। वे अलग–अलग राज्यों, भाषाओं और पृष्ठभूमियों से आते हैं, फिर भी एक ही उद्देश्य से जुड़े हैं– भारत में विश्वस्तरीय अंतरिक्ष प्रौद्योगिकी का निर्माण। इनकी सफलता में इनके परिवार, शिक्षक, मार्गदर्शक, आपूर्तिकर्ता, निवेशक, इसरो, इन–स्पेस (IN–SPACe) और उन सभी संस्थानों का समान योगदान है जिन्होंने इन पर भरोसा रखा और साथ दिया।

अंतरिक्ष तक नियमित पहुँच का लक्ष्य

हमारी यात्रा 'प्रारम्भ' यानी शुरूआत से आगे बढ़कर 'आगमन' अर्थात लक्ष्य तक पहुँच चुकी है। अब अगला अध्याय, अंतरिक्ष तक की पहुँच को नियमित और सहज बनाना है। हर महीने एक मिशन लॉन्च करने की क्षमता विकसित करना हमारा दीर्घकालिक लक्ष्य है ताकि भारत और दुनिया भर के ग्राहकों की ज़रूरतें पूरी की जा सकें।

भारत से, विश्व भर के लिए

भारत की अंतरिक्ष यात्रा एक निर्णायक दौर में प्रवेश कर रही है। दूरदर्शी नेतृत्व, मज़बूत संस्थान और युवा नवोन्मेषकों की ऊर्जा देखते हुए मुझे विश्वास है कि आने वाले दशक एक ऐसे राष्ट्र का युग होंगे जिसमें सपने देखने का ही नहीं, उन्हें साकार करने का आत्मविश्वास ही नहीं, क्षमता भी है। स्काईरूट को गर्व है कि हम दुनिया के लिए भारत में निर्माण की इस यात्रा में योगदान कर सके।

विज्ञान एवं गणित ओलम्पियाड 2026

भारतीय युवाओं का ऐतिहासिक प्रदर्शन

भारत के युवा आज हर क्षेत्र में अपनी प्रतिभा का परचम लहरा रहे हैं। विज्ञान का क्षेत्र भी इससे अछूता नहीं है। माननीय प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने हालिया 'मन की बात' कार्यक्रम में हमारे युवाओं की बौद्धिक क्षमता और वैज्ञानिक दृष्टिकोण की ख़ूब प्रशंसा की है। इसी महीने संपन्न हुए दुनिया के प्रतिष्ठित विज्ञान और गणित ओलम्पियाड्स में भारतीय दल ने अपना ऐतिहासिक और सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन किया है।

दुनिया भर के मेधावी छात्रों के बीच भारतीय युवाओं ने अपनी वैज्ञानिक क्षमता और नवाचार का लोहा मनवाकर देश का मस्तक विश्व पटल पर गर्व से ऊँचा कर दिया है। देश में तेज़ी से बढ़ता ओलम्पियाड और हैकाथॉन का कल्चर नए भारत की मज़बूत वैज्ञानिक नींव रख रहा है।

भारत की हालिया कामयाबी से जुड़े महत्त्वपूर्ण तथ्य

ऐतिहासिक पदक तालिका

वर्ष 2026 के अंतरराष्ट्रीय ओलम्पियाड सत्र में भारतीय दल ने अपना सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करते हुए कुल 12 स्वर्ण (**Gold**) और 7 रजत (**Silver**) पदक जीतकर इतिहास रच दिया है।

भौतिकी में विश्व चैम्पियन

अंतरराष्ट्रीय भौतिकी ओलम्पियाड (**Physics Olympiad**) में भारत के सभी 5 छात्रों ने स्वर्ण पदक जीते और देश ने संयुक्त रूप से विश्व चैम्पियन (पहली रैंक) का ख़िताब हासिल किया।

रसायन विज्ञान में सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन

अंतरराष्ट्रीय रसायन विज्ञान ओलम्पियाड (**Chemistry Olympiad**) में भी भारत का प्रदर्शन अब तक का सबसे शानदार रहा और टीम के सभी 4 छात्रों ने स्वर्ण पदक जीतकर संयुक्त विश्व चैम्पियन का गौरव प्राप्त किया।

गणित में शानदार सफलता

अंतरराष्ट्रीय गणित ओलम्पियाड (**Mathematics Olympiad**) में भारतीय युवाओं ने अपनी तार्किक क्षमता का उत्कृष्ट प्रदर्शन करते हुए 2 स्वर्ण और 4 रजत पदक अपने नाम किए।

जीव विज्ञान में भी लहराया परचम

अंतरराष्ट्रीय जीवविज्ञान ओलम्पियाड (**Biology Olympiad**) में भी हिस्सा लेने वाले भारतीय दल के सभी छात्रों ने पदक जीते, जिनमें 1 स्वर्ण और 3 रजत पदक शामिल हैं।

भौतिकी में एक दशक का दबदबा

पिछले एक दशक में हुए हर अंतरराष्ट्रीय भौतिकी ओलम्पियाड में भारतीय छात्रों ने स्वर्ण या रजत पदक अवश्य जीता है।

राष्ट्रीय नोडल केंद्र की भूमिका

भारत के इस राष्ट्रीय ओलम्पियाड कार्यक्रम का नेतृत्व 'टाटा इंस्टीट्यूट ऑफ फंडामेंटल रिसर्च' के राष्ट्रीय केंद्र 'होमी भाभा विज्ञान शिक्षा केंद्र' द्वारा किया जा रहा है।

परमाणु ऊर्जा विभाग (**DAE**) का मज़बूत समर्थन

इस सफलता के पीछे परमाणु ऊर्जा विभाग का लगभग चार दशकों का संस्थागत समर्थन है, जो देश के प्रतिभाशाली युवाओं को पहचानने, प्रशिक्षित करने और उन्हें वैश्विक स्तर के लिए तैयार करने का काम कर रहा है।

कश्मीर के 'वगू' शिल्प का पुनरुद्धार

जब हुनर और कुछ कर गुज़रने के जज़्बे का अनूठा मिलन होता है, तो दम तोड़ती परम्पराएँ भी फिर से सांस लेने लगती हैं। कश्मीर की पारम्परिक चटाई 'वगू' की कहानी भी कुछ ऐसी ही है। सरकंडे और पुआल से बनने वाली यह चटाई कभी कश्मीर के हर घर की शान हुआ करती थी। इसकी सबसे बड़ी ख़ासियत यह है कि यह पूरी तरह इको-फ्रेंडली है, जो सर्दियों में गर्माहट और गर्मियों में ठंडक का एहसास देती है। कश्मीर के दलदली इलाक़ों की घास को सुखाकर हाथों से बुनी जाने वाली इस एक चटाई को तैयार करने में दो कारीगरों को क़रीब चार दिन का समय लगता है।

समय के साथ आधुनिकता की दौड़ में यह कला लुप्त हो रही थी, लेकिन कश्मीर के एक साधारण परिवार से आने वाले ग़ुलाम हुसैन जी और उनकी बेटी तंज़ीला ने इसे नया जीवन देने का संकल्प लिया। कश्मीर यूनिवर्सिटी से फ़ारसी भाषा में मास्टर्स कर रहीं तंज़ीला, अपनी पढ़ाई के साथ-साथ इस पुश्तैनी कला को नई पहचान दिला रही हैं।

अपने इस सफ़र और संघर्ष के बारे में तंज़ीला बताती हैं:

"पहले मुझे यह काम नहीं आता था। मेरे वालिद साहब (पिताजी) और मेरी माँ यह काम करते थे। पढ़ाई के बाद जो फ्री टाइम मिलता था, उसमें मैंने यह काम अपने माता-पिता से सीखा। 'वगू' प्राचीन समय में बहुत प्रचलित था, लेकिन आहिस्ता-आहिस्ता ख़त्म हो गया। अब हमने इसे पुनर्जीवित करने का क़दम उठाया है। इसे हम बैठने के साथ-साथ डेकोरेशन के लिए भी इस्तेमाल कर सकते हैं।"

स्थानीय संसाधनों के उपयोग और मार्केटिंग की चुनौतियों पर बात करते हुए वह कहती हैं:

"इसकी सबसे ख़ास बात यह है कि इसका पूरा मटेरियल हमें कश्मीर में ही मिल जाता है और यह पूरी तरह प्राकृतिक है। हमारे साथ कई और वर्कर्स भी जुड़े हैं, जिससे उनके घर-परिवार का भरण-पोषण हो रहा है। शुरुआत में हमें मार्केटिंग बिल्कुल नहीं आती थी, इसलिए ऑर्डर्स नहीं मिलते थे। अब मेरे पिताजी मार्केटिंग देखते हैं और मैं अंदर का काम। जब हमने प्रदर्शनियों में हिस्सा लिया, तो लोग हमसे मिलने लगे और अब हमें ऑनलाइन ऑर्डर्स भी आ रहे हैं।"

आज की युवा पीढ़ी के लिए तंजीला का एक बहुत ही स्पष्ट और प्रेरक संदेश है:

"मैं हर एक स्टूडेंट, ख़ासकर छात्राओं से यही कहना चाहती हूँ कि पढ़ाई बहुत ज़रूरी है, आप खूब आगे बढ़ें, लेकिन पढ़ाई के साथ-साथ आपके अंदर एक हुनर ज़रूर होना चाहिए।"

गाँव से राष्ट्रीय पहचान तक

'विदुर प्रेरणा हर्बल टी' की प्रेरक कहानी

भारत में चाय केवल एक पेय नहीं है, बल्कि यह हमारे जीवन के हर छोटे-बड़े पल और अपनेपन का एक अटूट हिस्सा है। सुबह की शुरुआत हो, दोस्तों से मुलाक़ात हो या परिवार के साथ फ़ुर्सत के कुछ पल बिताने हों, चाय हर मौक़े पर सजने वाली हमारी महफ़िलों में सहजता से शामिल हो जाती है। माननीय प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने भी अपने हालिया 'मन की बात' कार्यक्रम में चाय से अपने विशेष रिश्ते का ज़िक्र करते हुए एक ऐसी ख़ास चाय की चर्चा की, जिसने केवल बेहतरीन स्वाद ही नहीं बल्कि ग्रामीण महिलाओं के जीवन में आत्मनिर्भरता की नई ख़ुशबू घोल दी है। यह कहानी है उत्तर प्रदेश के बिजनौर ज़िले के लखीवाला और आसपास के गाँवों की महिलाओं द्वारा तैयार की गई 'विदुर प्रेरणा स्वदेशी हर्बल टी' की। सबसे प्रेरक बात यह है कि राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर अपनी ख़ास पहचान बनाने वाले इस ब्रांड की शुरुआत केवल एक लाख रुपये की छोटी सी पूंजी से हुई थी।

स्थानीय ज्ञान और प्राकृतिक गुणों का संगम

बिजनौर के स्वयं सहायता समूहों (SHGs) से जुड़ी महिलाओं ने स्थानीय ज्ञान और प्रकृति के वरदान को मिलाकर इस हर्बल चाय को तैयार किया है। इसमें लेमनग्रास, गिलोय, मुलेठी, तुलसी, कच्ची हल्दी, दालचीनी, इलायची, जामुन और सौंफ जैसी विशुद्ध प्राकृतिक सामग्रियाँ शामिल हैं। 'विदुर हर्बल टी स्वयं सहायता समूह' की अध्यक्ष बबीता रानी इस पहल की शुरुआत, इसके घटकों और स्वास्थ्य लाभों के बारे में विस्तार से बताती हैं:

"हम दस महिलाओं ने वर्ष 2021 में साथ मिलकर विदुर हर्बल टी का काम शुरू किया था, जिसमें हमारे ब्लॉक और ज़िला प्रशासन ने हमें बहुत सहयोग किया। आजकल हम देखते हैं कि खान-पान में बहुत ज्यादा केमिकल्स का प्रयोग होने लगा है, ऐसे में हमारी हर्बल टी स्वास्थ्य के लिए बेहद लाभदायक है। हमारी चाय के दो वैरिएंट हैं- 'अर्जुन हृदय शक्ति' और 'विदुर हर्बल टी'। हमारी विदुर हर्बल टी में लेमनग्रास, गिलोय, जामुन, मुलेठी और कच्ची हल्दी आदि का मिश्रण होता है, जो विभिन्न प्रकार की बीमारियों को दूर करने में मदद करती हैं।"

बबीता रानी

रणविजय सिंह, मुख्य विकास अधिकारी, बिजनौर

गाँव से लेकर दिल्ली और महाकुम्भ तक का सफर

अपने अनूठे स्वाद और औषधीय गुणों के कारण इस हर्बल चाय ने बहुत कम समय में लोगों के बीच अपनी एक ख़ास पहचान बना ली है। प्रयागराज के महाकुम्भ और दिल्ली के 'इंटरनेशनल फूड फेस्टिवल' में भी इस चाय की ख़ूब सराहना हुई, जहाँ विदेशियों ने भी इसमें गहरी दिलचस्पी दिखाई। इसके बाज़ार तक पहुँचने के व्यवस्थित और सफल तरीक़े पर बात करते हुए बबीता कहती हैं:

"हमारे स्वयं सहायता समूह से जुड़ी हुई हमारे जिले की तमाम दीदियाँ जो भी प्रोडक्ट बना रही हैं, उसे हम 'विदुर' ब्रांड के नाम से बेच रहे हैं। हमारी मार्केटिंग ज़िले के विभिन्न सीएलएफ (CLF) के तहत चलने वाले आउटलेट्स के माध्यम से होती है। इसके अलावा ज़िला बिजनौर में हमारे चार कैफ़े हैं और मुरादाबाद मंडल में भी दो कैफ़े हैं, जहाँ हमारी हर्बल टी की बिक्री हो रही है।"

नई उमंग और उत्पादन विस्तार की बड़ी तैयारी

प्रधानमंत्री द्वारा 'मन की बात' में बिजनौर की इस हर्बल टी का संज्ञान लिए जाने के बाद पूरे प्रशासन और महिला

समूहों में भारी उत्साह है। बिजनौर के मुख्य विकास अधिकारी श्री रणविजय सिंह इसे जनपद के लिए एक बड़ी उपलब्धि मानते हैं। भविष्य के विस्तार और 'क्वालिटी कंट्रोल' पर चर्चा करते हुए वह कहते हैं:

"यह जनपद के लिए बहुत गर्व की बात है और हर्बल टी का प्रोडक्शन कर रहीं स्वयं सहायता समूह की महिलाओं के लिए बहुत उत्साहवर्धक है। चूंकि अब नेशनल लेवल पर इसकी मांग बढ़ेगी, उसके अनुसार हम इसके प्रोडक्शन यूनिट को विस्तार देने के बारे में सोच रहे हैं। हम एक 'प्रोड्यूसर ग्रुप' बनाएँगे जिसमें कम से कम 100 महिलाएँ एक साथ कार्य करें और हम इसकी टेस्टिंग एवं क्वालिटी कंट्रोल की भी निगरानी कर रहे हैं।"

मांग को पूरा करने और महिलाओं को अधिक सक्षम बनाने की रूपरेखा स्पष्ट करते हुए रणविजय सिंह जी आगे कहते हैं:

"हम पूरे जनपद में सीएलएफ के अंतर्गत इसकी तमाम यूनिट्स को बढ़ावा देंगे ताकि डिमांड के अनुसार इसका प्रोडक्शन हो सके। इसके अलावा विभिन्न सरकारी योजनाओं तथा बैंक लोन के माध्यम से स्वयं सहायता समूहों को सहायता धनराशि कैसे मिल सकती है, हम लोग इस पर भी विचार कर रहे हैं, ताकि हर ब्लॉक में एक अच्छा प्रोडक्शन यूनिट सुनिश्चित किया जा सके।"

'विदुर प्रेरणा हर्बल टी' की यह सफलता की कहानी इस बात का जीवंत प्रमाण है कि जब महिलाओं का दृढ़ आत्मविश्वास, स्थानीय पारम्परिक ज्ञान और प्रकृति का साथ एक मंच पर आते हैं तो एक छोटा सा प्रयास भी बड़े बदलाव की बुनियाद बन सकता है। मात्र एक लाख रुपये से शुरू हुआ यह उद्यम आज जिस तरह देश के बड़े संस्थानों और आयोजनों तक पहुँच गया है, वह 'वोकल फॉर लोकल' और आत्मनिर्भर भारत की भावना का एक सशक्त और सुगंधित उदाहरण है।

ग्रीन रिकॉर्ड
हरित भविष्य

अहमदाबाद ने एक घंटे में 3.61 लाख पौधे लगाकर बनाया गिनीज वर्ल्ड रिकॉर्ड

अहमदाबाद नगर निगम (AMC) ने केंद्रीय गृह और सहकारिता मंत्री और गाँधीनगर लोकसभा सांसद अमित शाह के मार्गदर्शन में एक बड़ी उपलब्धि हासिल की है। एएमसी ने **भदाज में मियावाकी विधि का इस्तेमाल करके एक घंटे में लगभग 35 अलग-अलग तरह के देसी पौधों की 3.61 लाख पौध लगाकर गिनीज वर्ल्ड रिकॉर्ड बनाया।** यह अभियान लगभग 76,000 वर्ग मीटर के इलाके में चलाया गया।

अहमदाबाद नगर निगम के सभी विभागों के अधिकारियों और कर्मचारियों, स्कूल बोर्ड, बीएपीएस संगठन, क्रेडाई (CREDAI), पुलिस स्टाफ, एनसीसी छात्रों, कई गैर-सरकारी संगठनों (NGOs), शिक्षण संस्थानों, सामाजिक संगठनों और शहर के नागरिकों ने इसमें बहुत उत्साह के साथ हिस्सा लिया। **25,000 से ज्यादा वॉलंटियर्स की सक्रिय भागीदारी की वजह से यह मेगा-अभियान बहुत सफल रहा।**

GUINNESS WORLD RECORDS™

RECORD CREATED

AT BHADAJ, AHMEDABAD

यह उपलब्धि पर्यावरण संरक्षण और अहमदाबाद शहर के हरे-भरे और टिकाऊ विकास की दिशा में एक अहम कदम है।

मियावाकी तकनीक

जापानी वनस्पतिशास्त्री अकीरा मियावाकी ने 1970 के दशक में मियावाकी तकनीक को विकसित किया था।

इसके माध्यम से पेड़ों और झाड़ियों को पास-पास लगाकर कम जगह में **घने जंगल बनाए जाते हैं।**

इसे **'पॉट प्लांटेशन मेथड'** भी कहा जाता है।

यह पौधों की **बढ़त को दस गुना तक बढ़ा देते हैं।** इसके परिणामस्वरूप, यह शहरी इलाकों के लिए बहुत अच्छी तकनीक बन जाता है।

पारम्परिक जंगलों की तुलना में, मियावाकी जंगल ज्यादा कार्बन सोखते हैं, तेजी से बढ़ते हैं और यहाँ ज्यादा तरह के जीव-जंतु और पौधे (बायोडायवर्सिटी) रह पाते हैं।

उत्तर प्रदेश के गोरखपुर में 'एक पेड़ माँ के नाम' के तहत बड़े पैमाने पर वृक्षारोपण अभियान

उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने 12 जुलाई, 2026 को गोरखपुर जिले में 'एक पेड़ माँ के नाम' वृक्षारोपण महा-अभियान 2026 की शुरुआत की। प्रधानमंत्री के मार्गदर्शन में **पूरे राज्य में 35 करोड़ पौधे लगाए गए। इनमें छाया देने वाले, औषधीय गुणों वाले, फल देने वाले और लकड़ी देने वाले पौधे शामिल थे।**

पिछले 9 वर्षों में पूरे राज्य में 242 करोड़ पौधे लगाए गए हैं।

हॉर्नबिल की वापसी

लगभग सात दशकों तक, गिर के जंगलों में इंडियन ग्रे हॉर्नबिल (Ocyceros birostris) की पुकार सुनाई नहीं दी। वह पक्षी, जो कभी इतना आम था कि हमेशा उसकी आवाज सुनाई दे जाती थी। 'खासकर सर्दियों के महीनों में बहुतायत में पाया जाता था,' 1950 के दशक तक यहाँ से गायब हो गया था। उसे आखिरी बार 1936 में देखा गया था (राम और अन्य लेखकों द्वारा 2025 में लिखे लेख के अनुसार)। आज वह चुप्पी टूट गई है। हॉर्नबिल को फिर से बसाने की कोशिश के चौथे प्रजनन साल में, यह पक्षी गिर लौट आया है। और इसके साथ ही वापस आ गया है जंगल की पारिस्थितिक स्मृति का एक छोटा लेकिन अहम हिस्सा।

सासन–गिर के वन्य जीव प्रभाग में प्रभागीय वनाधिकारी डॉ. मोहन राम, जिन्होंने इस प्रोजेक्ट की योजना बनाई और इसका नेतृत्व किया, बताते हैं कि यह विचार एक साधारण लेकिन परेशान करने वाले सवाल से उपजा था। गिर के संरक्षण के इतिहास की समीक्षा करते समय स्टाफ और पुराने रिकॉर्ड्स को देखते हुए, टीम को एक कमी नज़र आई। वह कमी थी कि एक ऐसी प्रजाति जो कभी जंगल में खूब फल–फूल रही थी, वह गायब हो गई थी, और कोई भी निश्चित रूप से यह नहीं बता सकता था कि इसका कारण क्या

है। ऐतिहासिक रिकॉर्डों से केवल आंशिक जानकारी ही मिल रही थी। कुछ रिकॉर्ड तो उनके शिकार किए जाने की ओर इशारा कर रहे थे, तो कुछ स्थानीय मान्यताओं की ओर, लेकिन इसके बावजूद कोई भी ठोस कारण नहीं मिला। डॉ. राम बताते हैं कि जो बात स्पष्ट थी, वह थी समय-सीमा। 1950 और 1960 के दशक में कभी-कभार इसे देखा गया और उसके बाद कभी नहीं। इसके बाद जो सवाल उठा, वह भी उतना ही सरल था कि चूँकि यह प्रजाति स्थानीय स्तर पर विलुप्त हो गई थी, तो क्यों न इसे वापस लाया जाए?

इसके पीछे की सोच केवल गिर की पक्षियों की सूची में एक खोए हुए नाम को वापस जोड़ने तक सीमित नहीं थी। गुजरात में पाई जाने वाली एकमात्र हॉर्नबिल प्रजाति होने के नाते, भारतीय धूसर धनेश बतौर बीज फैलाने वाले के रूप में एक विशेष पारिस्थितिक भूमिका निभाती है, जिससे

डॉ. मोहन राम, वन संरक्षक (सी एफ), जूनागढ़ सर्कल

जंगल में पेड़ों की विविधता बनाए रखने में मदद मिलती है। डॉ. राम पारिस्थितिकी को एक-दूसरे पर निर्भर हिस्सों की एक कड़ी के रूप में बताते हैं। धनेश की अनुपस्थिति उस कड़ी में एक टूटी हुई कड़ी की तरह थी जिसे फिर से बसाने की कोशिश के माध्यम से ठीक करने का प्रयास किया गया।

यह प्रोजेक्ट दो चरणों में पूरा किया गया। आईयूसीएन (इंटरनेशनल यूनियन

फॉर कंज़र्वेशन ऑफ़ नेचर) के फिर से शुरू करने से जुड़े दिशानिर्देशों का पालन करते हुए टीम ने गिर के भीतर हॉर्नबिल के पुराने आवासों का सर्वेक्षण किया और उत्तरी गुजरात में मोडासा के पास अरावली के जंगलों को इसके लिए उपयुक्त पाया। वहाँ का वातावरण और आवास की विशेषताएँ इसके लिए उपयुक्त थीं। हॉर्नबिल को सुरक्षित रूप से संभालने में माहिर लोगों ने इन पक्षियों को पकड़ा, उन्हें लगभग 380 किलोमीटर दूर ले जाया गया और सीधे जंगल में छोड़ दिया गया। यह तरीका उन्हें कैद में पालने के बजाय सीधे जंगल से जंगल में छोड़ने का था, ताकि उनका प्राकृतिक व्यवहार बना रहे। अक्तूबर 2021 और मार्च 2022 के बीच पहले चरण में 28 पक्षियों को छोड़ा गया, और फिर दिसम्बर 2023 में 12 और पक्षियों को छोड़ा गया, जिससे कुल संख्या 40 हो गई (राम और अन्य लेखकों द्वारा 2025 में लिखे लेख के अनुसार)। छोड़े गए हर पक्षी को छल्ला पहनाया गया और चुने हुए नर पक्षियों पर सौर ऊर्जा से चलने वाले सैटेलाइट ट्रांसमीटर लगाए गए। यह सोच-समझकर किया गया था, क्योंकि मादा हॉर्नबिल प्रजनन के दौरान घोंसले के अंदर खुद को बंद कर लेती हैं, जहाँ ट्रांसमीटर निरर्थक और रुकावट पैदा करने वाला होता है।

डॉ. राम का कहना है कि यह कामयाबी सिर्फ पक्षियों को छोड़ने तक ही सीमित नहीं थी। पकड़ने, ले जाने या छोड़ने के दौरान एक भी पक्षी कहीं लुप्त नहीं हुआ। फील्ड टीम को पहला घोंसला खोजने में 55 दिनों तक धैर्यपूर्वक और सावधानी से निगरानी करनी पड़ी। उन्हें नर हॉर्नबिल को बिना यह पता चले ट्रैक करना था कि वे वहाँ हैं, क्योंकि पीछा किए जाने का जरा सा भी संकेत मिलने पर पक्षी कहीं और जा सकता था। इसके बाद चौबीसों घंटे

निगरानी की गई, जिसमें घोंसला बनाने का व्यवहार, खाना खिलाने की आवृत्ति, चूज़ों का विकास और अगले साल उनके जीवित रहने की जानकारी रिकॉर्ड की गई। ये किसी भी पुनर्वास की सफलता के असली पैमाने होते हैं।

परिणामों ने इस कोशिश को सही साबित किया। एक प्रजनन करने वाले जोड़े ने पहले ही साल में सफलतापूर्वक एक चूज़े को बड़ा किया, और दूसरे प्रजनन काल तक तीन जोड़े घोंसले बना रहे थे। जैसे-जैसे पक्षी खोजबीन वाले चरण से स्थायी रूप से बसने वाले चरण में आए, उनके विचरण-क्षेत्र का दायरा तेज़ी से कम हो गया। पक्षियों ने संरक्षित क्षेत्र के भीतर सूखे पर्णपाती और सागौन के जंगलों को ज़्यादा पसंद किया, जबकि जो पक्षी बाहर गए, उन्होंने बागवानी वाली ज़मीन और इंसानी बस्तियों में खुद को अच्छी तरह ढाल लिया।

डॉ. राम इस कोशिश का श्रेय सामूहिक प्रयास को देते हैं। उनका मानना है कि वन विभाग के कर्मचारी, पशु चिकित्सक, पक्षी पकड़ने वाले, गिर हाई-टेक मॉनिटरिंग यूनिट और 'द कॉर्बेट फ़ाउंडेशन' जैसे तकनीकी सहयोगियों ने इसमें अहम भूमिका निभाई। उनके अनुसार कोई एक व्यक्ति या कुछ लोग अकेले यह परिणाम हासिल नहीं कर सकते थे।

हॉर्नबिल की वापसी को अंतरराष्ट्रीय वैज्ञानिक साहित्य में पहचान मिली है, लेकिन जमीनी स्तर पर काम करने वाली टीम के लिए इसका महत्त्व बिल्कुल भी जटिल नहीं है। उनके लिए तो गिर के जंगलों से कभी गायब हो चुकी एक प्रजाति अब वहाँ फिर से पनप रही है, यह गर्व की बात होने के साथ-साथ दूसरी जगहों पर संरक्षण के लिए एक व्यावहारिक उदाहरण भी पेश करती है।

सीतामढ़ी का 'कचरे से कंचन' मॉडल

समुदाय, सहयोग और रीसाइक्लिंग

बिहार के सीतामढ़ी में, सिंगल-यूज़ प्लास्टिक अब सिर्फ़ कचरा नहीं रहा। इसे फ़र्नीचर का रूप दिया जा रहा है। ज़िला प्रशासन की इस पहल के तहत, गाँवों से एकत्र किए गए प्लास्टिक कचरे को मजबूत बेंच और डेस्क में बदला जाता है। इस तरह पर्यावरण की समस्या का समाधान सामुदायिक स्तर पर किया जा रहा है।

यह परियोजना इस बात की द्योतक है कि ज़मीनी स्तर पर 'चक्रीय अर्थव्यवस्था' (सर्कुलर इकॉनमी) कैसे काम कर सकती है। इसके तहत ज़िला प्रशासन, जन-प्रतिनिधि और एक निजी सहयोगी मिलकर प्लास्टिक को एक नया स्वरूप प्रदान करते हैं।

असर: 85 बेंच-डेस्क बनाए गए। बाजपट्टी ब्लॉक की 19 ग्राम- पंचायतों से इकट्ठा किए गए लगभग 4000 किलोग्राम प्लास्टिक कचरे का इस्तेमाल किया गया।

विस्तार: अब रिगा, रुन्नी सैदपुर और डुमरा ब्लॉक में भी प्लास्टिक कचरा प्रबंधन इकाइयाँ बनाई गई हैं।

प्रक्रिया: एकत्र करना, सफ़ाई करना, टुकड़ों में काटना (श्रेडिंग), बेलिंग (गट्ठर बनाना), निर्माण करना–बेंच/डेस्क। हर बेंच में लगभग 40 किलोग्राम प्लास्टिक का इस्तेमाल होता है।

सहयोग: डीआरडीए (ज़िला ग्रामीण विकास एजेंसी), डीडीसी (उप विकास आयुक्त), बीडीओ (ब्लॉक विकास अधिकारी), ग्राम मुखिया, वार्ड सदस्य, सफ़ाई कर्मचारी और पीपीपी पार्टनर।

भविष्य की योजना: सीतामढ़ी में एक स्थानीय विनिर्माण इकाई लगाने के लिए औद्योगिक क्षेत्र के लिए 504 एकड़ ज़मीन ली जा रही है। पड़ोसी ज़िलों से भी प्लास्टिक कचरा इकट्ठा करने की योजना है।

हालांकि हम बहुत सारा प्लास्टिक प्रसंस्करण कर पा रहे थे, लेकिन उस प्लास्टिक के लिए आगे के बाजारों, ग्राहकों या वितरकों से जुड़ नहीं पा रहे थे ('फ़ॉरवर्ड लिंकेज')। इसलिए जब मैं सीतामढ़ी आया, तो मेरा मुख्य लक्ष्य यह सुनिश्चित करना था कि हम उस प्लास्टिक कचरे से कुछ उपयोगी उत्पाद बनाएँ और एक तरह से, उस चक्रीय अर्थव्यवस्था को सुनिश्चित करें जिसकी बात माननीय प्रधानमंत्री जी अक्सर करते हैं। इसलिए हमारे लिए इस तरह के आगे के बाजारों, ग्राहकों या वितरकों से जुड़ना बहुत ज़रूरी था ताकि कचरे से सम्पत्ति (वेल्थ) बनाई जा सके।

- रिची पांडे, आईएएस, जिलाधिकारी, सीतामढ़ी, बिहार

डॉ. रोनाल्डो लैश्राम

खगोल भौतिकीविद् और जापान की राष्ट्रीय खगोलीय वेधशाला में पोस्टडॉक्टरल शोधकर्ता

मणिपुर की लोकटक झील से रौशन हुआ ब्रह्मांड

वैज्ञानिक खोज महत्त्वपूर्ण होती है क्योंकि यह मानव के ज्ञान में कुछ नया जोड़ती है। यह हमें प्रकृति को अधिक स्पष्ट रूप से समझने में मदद करती है और कुछ नए प्रश्न सामने रखती है। लेकिन कभी-कभी कोई खोज अपने साथ एक नाम, एक स्मृति और एक स्थान भी लेकर आती है जिससे एक गहरा मानवीय जुड़ाव हो जाता है। मेरे लिए लोकटक प्रोटो-क्लस्टर ऐसी ही एक खोज है।

लोकटक प्रोटो-क्लस्टर, प्रारम्भिक ब्रह्मांड की युवा आकाशगंगाओं की एक विशाल संरचना है। हम इसे लगभग 12.6 अरब वर्ष पूर्व के काल में देख रहे हैं जब यह अस्तित्व में थी और उस समय ब्रह्मांड की आयु केवल लगभग 1.2 अरब वर्ष थी। खगोल विज्ञान में बहुत दूर तक देखना, वास्तव में बीत चुका समय देखना भी है। इसलिए जब हम लोकटक प्रोटो-क्लस्टर का अध्ययन करते हैं, तो हम ब्रह्मांडीय इतिहास के प्रारम्भिक अध्यायों में से एक को देख रहे होते हैं।

प्रोटो-क्लस्टर को एक ऐसी प्रारम्भिक "आकाशगंगाओं की नगरी" के रूप में समझा जा सकता है, जो अभी निर्माणाधीन है। वर्तमान ब्रह्मांड में आकाशगंगाएँ समूहों, क्लस्टरों और उससे भी बड़ी संरचनाओं में एकत्र होती हैं। प्रोटो-क्लस्टर, आज के आकाशगंगा क्लस्टरों के पूर्वज हैं।

हमारी टीम ने सुबारू टेलीस्कोप से लोकटक प्रोटो-क्लस्टर की खोज की और बाद में जेम्स वेब स्पेस टेलीस्कोप की मदद से इसका विस्तृत अध्ययन किया। यह खोज इसलिए महत्त्वपूर्ण है क्योंकि इससे इस बात के प्रमाण मिलते हैं कि जब ब्रह्मांड बहुत युवा था, तब भी सघन पर्यावरण, आकाशगंगाओं के विकास पर प्रभाव डाल रहे थे। इस सघन क्षेत्र के भीतर मौजूद आकाशगंगाएँ, अपेक्षाकृत कम भीड़भाड़ वाले क्षेत्रों में स्थित आकाशगंगाओं की तुलना में अलग तरीके से विकसित हो रही थीं। इससे पता

चलता है कि ब्रह्मांड के प्रारम्भिक दौर तक में, किसी आकाशगंगा का स्थान उसके विकास को प्रभावित कर सकता है।

"लोकटक प्रोटो-क्लस्टर" नाम, मेरे लिए एक बेहद व्यक्तिगत और सांस्कृतिक जुड़ाव की वजह से है। लोकटक झील, मणिपुर का एक अत्यंत सार्थक प्रतीक है। राज्य की पारिस्थितिकी, आजीविका, संस्कृति, पहचान और स्मृतियों से जुड़ी होने के कारण इसे मणिपुर की जीवनरेखा भी कहा जाता है। मणिपुर के मेरे जैसे अनेक लोगों के लिए लोकटक केवल एक झील नहीं है। यह हमारे लिए घर है जिसमें हमारी धरती और हमारे लोगों की स्मृतियाँ बसी हैं। इस दूरस्थ ब्रह्मांडीय संरचना का नाम लोकटक झील पर रखना मेरे लिए अपने मणिपुर को सर्वोच्च सम्मान और अपने घर के एक हिस्से को खगोल विज्ञान के स्थायी अभिलेख में दर्ज करने का एक उपाय था। इस संरचना में, एक-दूसरे से जुड़ी आकाशगंगाओं की कई सघन संरचनाएँ हैं, लेकिन इस नाम के पीछे सबसे बड़ा कारण यही है कि लोकटक, मणिपुर के लिए क्या मायने रखता है।

मेरे लिए यह बड़े सम्मान की बात है कि माननीय प्रधानमंत्री ने अपने मन की बात में लोकटक प्रोटो-क्लस्टर का उल्लेख किया। उनके शब्दों में विशेष रूप से युवाओं के लिए एक महत्त्वपूर्ण संदेश था कि कोई व्यक्ति विज्ञान के क्षेत्र में काम करते हुए, वैश्विक शोध में योगदान देते हुए भी अपनी जड़ों से जुड़ा रह सकता है। मैं मणिपुर के थौबल ज़िले के खंगाबॉक से हूँ। मेरा पालन-पोषण एक साधारण परिवार में हुआ। मेरे दिवंगत पिता एक छोटी-सी साइकिल मरम्मत की दुकान चलाते थे और मेरी माँ गृहिणी थीं। बचपन से ही मेरे भीतर प्रकृति और विज्ञान को लेकर गहरी जिज्ञासा थी। मैं अक्सर यह जानने को उत्सुक रहता कि चीजें कैसे काम करती हैं। बचपन में मैं अक्सर रात में आकाश को निहारते हुए सोचता था कि जो कुछ हम देख रहे हैं, उसके परे आख़िर क्या हो सकता है।

लोकटक झील, मणिपुर

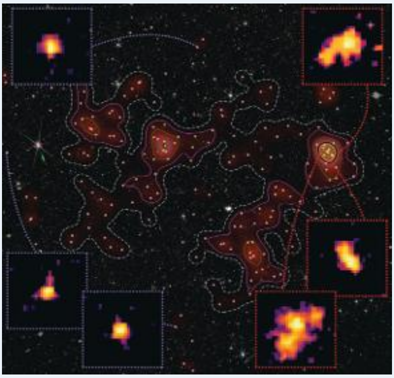

लोकतक प्रोटोक्लस्टर क्षेत्र, सुबारू टेलीस्कोप और जेम्स वेब स्पेस टेलीस्कोप ऑब्जर्वेशन का इस्तेमाल करके स्टडी किया गया।
क्रेडिटः लैशराम एट अल./NAOJ/NASA/ESA/CSA

मैं ऐसे माहौल में बड़ा नहीं हुआ था जहाँ बड़ी-बड़ी वेधशालाएँ हों या खगोल विज्ञान के शोध तक आसानी से पहुँच उपलब्ध हो। लेकिन वह जिज्ञासा मेरे भीतर बनी रही और धीरे-धीरे उसी ने मेरे जीवन की दिशा तय की।

मेरे जीवन का एक महत्त्वपूर्ण पड़ाव वो था जब अट्ठारह वर्ष की आयु में ऑल इंडिया ऐस्टेरॉय्ड सर्च कैम्पेन में भाग लेने के बाद मेरी मुलाक़ात दिवंगत डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम जी से हुई। इस अभियान के दौरान मैंने एक प्रारम्भिक मेन- बेल्ट ऐस्टेरॉय्ड की खोज की थी। उनके शब्द आज भी मेरे कानों में गूँजते हैं कि "बड़े सपने देखो, कड़ी मेहनत करो, कभी हार मत मानो और समाज को कुछ लौटाओ।" ये शब्द आज भी मेरा मार्गदर्शन करते हैं। इसके बाद जेएसएस साइंस ऐंड टेक्नोलॉजी यूनिवर्सिटी से कम्प्यूटर साइंस में बी.ई. की पढ़ाई पूरी करने के बाद मैं जापान आ गया। यहाँ मैंने तोहोकु यूनिवर्सिटी से खगोल विज्ञान में स्नातकोत्तर और पीएचडी पूरी की तथा इसके बाद जापान की राष्ट्रीय खगोलीय वेधशाला में शोध कार्य जारी रखा।

यह खोज अंतरराष्ट्रीय वैज्ञानिक सहयोग के कारण सम्भव हो सकी। आधुनिक खगोल विज्ञान विभिन्न देशों, संस्थानों, दूरबीनों और विचारों के बीच सहयोग पर निर्भर करता है। सुबारू टेलीस्कोप ने हमें इस संरचना की पहचान के लिए आवश्यक व्यापक दृश्य उपलब्ध

करवाया जबकि जेम्स वेब स्पेस टेलीस्कोप ने इन आकाशगंगाओं का अधिक विस्तार से अध्ययन करने में मदद की। यह खोज इस बात की भी साक्षी है कि भारत के छोटे और दूरदराज़ इलाक़ों के विज्ञानी भी वैश्विक शोध में सार्थक योगदान दे सकते हैं।

इस खोज ने भावी शोध के लिए कई महत्त्वपूर्ण प्रश्नों के द्वार खोले हैं। इतनी सघन और प्रारम्भिक ब्रह्मांडीय परिस्थितियों में, इन आकाशगंगाओं ने आपस में किस तरह से मेलजोल किया होगा? इनके तारों के निर्माण की प्रक्रिया आख़िर कब धीमी हुई होगी? और आने वाले अरबों वर्षों में यह प्रोटो-क्लस्टर विकसित होकर एक विशाल आकाशगंगा क्लस्टर का रूप कैसे लेगा? भविष्य में नई पीढ़ी की दूरबीनों से किए जाने वाले अवलोकन हमें इन प्रश्नों के उत्तर खोजने में मदद करेंगे।

मेरे लिए अपनी जड़ों से जुड़े रहना, समाज को कुछ लौटाना भी है। मेरा प्रयास है कि खगोल विज्ञान को मणिपुर एस्ट्रोनॉमिकल सोसायटी के माध्यम से राज्य के विद्यार्थियों और समुदायों के निकट लाया जाए। मुझे आशा है कि यह अवसर विज्ञान के लिए राज्य में तारामंडल, वेधशाला या विज्ञान केंद्र जैसे बेहतर और मज़बूत संस्थागत तथा सार्वजनिक समर्थन को बढ़ावा देगा जहाँ युवा स्वतंत्र रूप से विज्ञान को समझें और प्रश्न पूछ सकें। ऐसे संस्थान मणिपुर के विद्यार्थियों में विज्ञान और उसकी सम्भावनाएँ देखने के नज़रिए में महत्त्वपूर्ण बदलाव ला सकते हैं। मित्सना फ़ाउंडेशन (MitSna Foundation) और अन्य प्रयासों के माध्यम से मैं युवा पीढ़ी को सीखने, बड़े सपने देखने और अपने पर भरोसा रखने के लिए प्रोत्साहित करना चाहता हूँ।

लोकटक प्रोटो-क्लस्टर, सुदूर ब्रह्मांड में अरबों प्रकाश-वर्ष दूर स्थित है लेकिन इसका नाम यहाँ भारत के मणिपुर से आरम्भ होता है। इसके माध्यम से लोकटक झील ब्रह्मांड की कहानी का एक हिस्सा बनी है और मणिपुर को खगोल विज्ञान के स्थायी अभिलेख में जगह मिली है।

डॉ. एम. बीना
विकास आयुक्त (हथकरघा),
वस्त्र मंत्रालय

खड्डियों पर बुनी भारत की कहानी

राष्ट्रीय हथकरघा दिवस 2026

हथकरघे पर बने हर कपड़े में एक मौन कहानी बुनी रहती है। उसके ताने-बाने में किसी गाँव की स्मृतियाँ, खड्डी की लय और उन हाथों का धैर्य गुँधा रहता है जो पीढ़ियों से एक ही तरह का काम निरंतर दोहराते आए हैं। इसलिए राष्ट्रीय हथकरघा दिवस 2026 केवल एक स्मरणीय तिथि भर नहीं है; यह तो भारत के बुनकर समुदाय के कौशल, दृढ़ता और सांस्कृतिक विरासत के संरक्षण में उनकी भूमिका को राष्ट्रीय स्तर पर स्वीकारने का अवसर है। जहाँ भारत डिजिटल और वैश्विक युग की ओर आत्मविश्वास के साथ आगे बढ़ रहा है वहीं हथकरघा क्षेत्र इस बात का उल्लेखनीय उदाहरण बनकर उभर रहा है कि कैसे कोई परम्परा अपनी आत्मा बनाए रखते हुए समय के साथ विकसित हो सकती है।

भारतीय हथकरघे का इतिहास सैकड़ों वर्ष पुराना है, लेकिन इसकी समकालीन कहानी परिवर्तन के अनुरूप ढलने की कहानी है। एक समय था जब हथकरघा बुनाई स्थानीय संरक्षण और पीढ़ी-दर-पीढ़ी हस्तांतरित होने वाले पारम्परिक ज्ञान पर निर्भर थी। पर आज यह तेज़ी से डिज़ाइनरों, शहरी उपभोक्ताओं, ऑनलाइन बाज़ार, निर्यात नेटवर्क और सांस्कृतिक पर्यटन से जुड़ रही है। रंगों के नए संयोजन, परिधान की आधुनिक शैलियाँ, रंगाई की बेहतर तकनीक और डिज़ाइन की सहयोगात्मक पहलों से युवा उपभोक्ताओं के बीच हथकरघा उत्पादों की लोकप्रियता बढ़ी है। फिर भी इस शिल्प का मूल स्वरूप आज भी नहीं बदला है: करघा आज भी इंसान के हुनर से चलता है और हर कपड़े में एक ऐसी विशिष्टता बनी रहती है जिसे बड़े पैमाने पर होने वाले मशीन-निर्माण से दोहराना सम्भव नहीं है। हथकरघा क्षेत्र का यह विकास दर्शाता है कि

आधुनिकता के लिए परम्परा को मिटाना ज़रूरी नहीं है।

हस्तशिल्प के इस नवीनीकरण के पीछे 'वोकल फॉर लोकल' की भावना को मिल रहा बढ़ता जनसमर्थन भी है। माननीय प्रधानमंत्री ने स्थानीय उत्पादों को बढ़ावा देने का जो आह्वान किया उसने नागरिकों को केवल क़ीमत देखकर ख़रीदारी करने की बजाय उन वस्तुओं के सामाजिक और सांस्कृतिक महत्त्व पर भी विचार करने को प्रेरित किया है। जब कोई परिवार हाथ से बुनी साड़ी, दुपट्टा या घरेलू वस्त्र ख़रीदता है तो वह केवल एक बुनकर की आय का ही साधन नहीं बनता बल्कि रंगरेज, कताईकर्मी, डिज़ाइनर, व्यापारी और ग्रामीण परिवार के पूरे नेटवर्क की मदद करता है। यह लाभ पूरे बुनकर समुदाय में वितरित होकर उन पारम्परिक कौशल को संरक्षित करने में सहायक होता है जो अन्यथा समय के साथ लुप्त हो सकते हैं।

इस परिवर्तन के पीछे, वस्त्र मंत्रालय और हथकरघा विकास आयुक्त कार्यालय का निरंतर सहयोग एक अहम ताक़त रहा है। राष्ट्रीय हथकरघा विकास कार्यक्रम (NHDP) बुनकरों, स्वयंसहायता समूह और हथकरघा संगठनों को डिज़ाइन विकास, प्रौद्योगिकी उन्नयन, उन्नत करघे एवं सहायक उपकरण, कार्यशालाएँ, साझा बुनियादी ढाँचा तथा विपणन में मदद करता है। कच्चा माल आपूर्ति योजना, रियायती दरों पर गुणवत्तापूर्ण सूत की उपलब्धता सुनिश्चित करने में मदद करती है जबकि हथकरघा विपणन

सहायता और क्लस्टर-आधारित पहल, बुनकरों को घरेलू और अंतरराष्ट्रीय बाज़ारों से जोड़ती हैं। बुनकर मुद्रा योजना के तहत ब्याज में छूट, मार्जिन मनी और ऋण गारंटी ने बुनकरों की कार्यशील पूँजी तक पहुँच बेहतर की है। समर्थ योजना के तहत जुलाई 2026 तक 30,059 महिला श्रमिकों को प्रशिक्षण दिया जा चुका है। इसके अलावा क्लस्टर विकास कार्यक्रम (CDP) के अंतर्गत, पात्र महिला हथकरघा बुनकरों को अपनी कार्यशाला बनाने के लिए 1 लाख 20 हज़ार रुपये की शत-प्रतिशत वित्तीय सहायता दी जाती है जिससे वे सुरक्षित, संरक्षित और उत्पादक वातावरण में कार्य करने में सक्षम होती हैं। हथकरघा विकास आयुक्त कार्यालय, समकालीन डिज़ाइन, उद्यमिता, क्षमता निर्माण, हैंडलूम मार्क की ब्रांडिंग, जीआई टैग (भौगोलिक संकेतक) को बढ़ावा देने और ई-कॉमर्स सुगम बनाने जैसी पहलों को भी बढ़ावा देता है। यह प्रयास बुनकरों को आधुनिक बाज़ारों में अधिक प्रभावी ढंग से मुक़ाबले करने में मदद दे रहे हैं।

भारत का हथकरघा परिदृश्य हमारी सांस्कृतिक विविधता का जीता-जागता मानचित्र भी है। तेलंगाना के पोचमपल्ली इक्कत की अद्भुत चमक, केरल के कसावु की सौम्य आभा, गुजरात के कच्छ की चटकीली कढ़ाई और बुनाई की परम्पराएँ तथा पटना की वस्त्र विरासत, अलग-अलग इतिहास, जलवायु और सामाजिक परम्पराएँ दर्शाती हैं। इनका महत्त्व देखते हुए केंद्र सरकार एवं राज्य सरकारों तथा विभिन्न संस्थानों ने बुनाई क्लस्टर, प्रशिक्षण केंद्र, डिज़ाइन विकास कार्यक्रम और प्रचार-प्रसार प्रदर्शनियों जैसी अनेक पहल आरम्भ की हैं। भौगोलिक संकेतक (GI) मान्यता ने भी

106 हथकरघा परम्पराओं की पहचान और मज़बूत की है। इसके तहत उत्पाद को उसके मूल स्थान से जोड़कर उसकी विशिष्टता को नक़ल से बचाया जाता है।

हथकरघा क्षेत्र के केंद्र में महिलाएँ हैं। बुनकरों के कुल कार्यबल में लगभग 72 प्रतिशत महिलाएँ हैं। अनेक बुनकर परिवारों में महिलाएँ सूत कातने, रंग तैयार करने, करघा तैयार करने, बुनाई, कपड़े की फ़िनिशिंग, लेखा–जोखा सम्भालने और विपणन जैसे विभिन्न कार्य करती हैं। ग्रामीण इलाक़ों में जहाँ रोज़गार के सीमित अवसर होते हैं वहाँ महिलाएँ कपड़ा बुन कर परिवार की आय बढ़ाने के साथ–साथ घर के काम–काज की ज़िम्मेदारियाँ भी निभा लेती हैं। इससे भी अहम बात यह है कि बुनाई से होने वाली आय महिलाओं को आर्थिक स्वतंत्रता, बेहतर आजीविका, बच्चों की शिक्षा, स्वास्थ्य सेवाओं तक पहुँच और परिवार के निर्णयों में अधिक भागीदारी का अवसर देती है। स्वयंसहायता समूह (SHG), सहकारी समितियाँ, कौशल विकास कार्यक्रम और महिला–नेतृत्व वाले उत्पादक उद्यम धीरे–धीरे महिलाओं को परिवार के श्रम में अदृश्य योगदान करने वाली की बजाय एक उद्यमी के रूप में सक्षम बना रहे हैं।

तकनीक ने भारतीय हथकरघे की समकालीन पहुँच पूरी तरह बदल दी है। डिजिटल प्लेटफॉर्म और ई–कॉमर्स ने बुनकरों और उपभोक्ताओं के बीच की दूरी कम की है, जिससे दूरदराज़ के क्लस्टरों में रहने वाले बुनकरों को देश के अलावा विदेशों में भी ग्राहकों तक पहुँचने का अवसर मिल रहा है। उत्पादों की कहानियाँ सोशल मीडिया पर साझा करने, क्यूआर–कोड पर उत्पाद की जानकारी और उपभोक्ताओं को सीधे उत्पाद बेचने से हथकरघा उत्पादों की दृश्यता और पारदर्शिता बढ़ी है। रणनीतिक ब्रांडिंग और जीआई–आधारित प्रमाणीकरण ने उपभोक्ताओं का भरोसा मज़बूत किया है और अंतरराष्ट्रीय बाज़ारों में क्षेत्रीय हथकरघा उत्पादों के लिए अधिक सशक्त बाज़ार की पहचान करने में मदद की है।

राष्ट्रीय हथकरघा दिवस 2026 हमें यह समझने का अवसर देता है कि भारतीय हथकरघा क्षेत्र ऐसी विरासत नहीं है जिसे काँच के पीछे संरक्षित रखा गया हो। यह तो एक जीती–जागती और गतिशील सांस्कृतिक अर्थव्यवस्था है जो विरासत को नवाचार से, ग्रामीण आजीविका को दुनिया के बाज़ार से और कलात्मक पहचान को सतत विकास से जोड़ती है। हथकरघे का साथ देना प्रगति की उस दृष्टि का समर्थन करना है जिसमें मानवीय कौशल, विविधता, विरासत और पर्यावरणीय दायित्व को महत्त्व मिलता है। भारत के बुनकरों के घर और कार्यशालाओं में जब तक खड्डियों की गूँज सुनाई देगी तब तक देश भी भविष्य के ताने–बाने में पीढ़ी–दर–पीढ़ी, धागा–दर–धागा अपनी कहानी बुनता रहेगा।

आत्मनिर्भरता से बुना हुआ

खादी का ताना-बाना

7 अगस्त को हमारा देश राष्ट्रीय हथकरघा दिवस मनाता है। यह विशेष दिन हमारे बुनकर भाई-बहनों के कौशल, सृजनशीलता और पीढ़ियों से चली आ रही गौरवशाली परम्पराओं का उत्सव है। माननीय प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने 'मन की बात' में कहा कि पोचमपल्ली से पटना और कुथमपल्ली से कच्छ तक, हथकरघे से बना हर परिधान हमारी सांस्कृतिक विरासत की एक अनूठी कहानी बुनता है।

आज 'वोकल फॉर लोकल' की भावना के साथ देश में जिस तरह हैंडलूम और विशेष रूप से ग्रामोद्योग और स्वदेशी कला के शिखर 'खादी' को बढ़ावा दिया जा रहा है, उससे लाखों लोगों का जीवन बेहतर हो रहा है। महात्मा गाँधी को प्रिय रही खादी आज 'नए भारत' के आत्मनिर्भर और स्वदेशी गौरव का जीवंत प्रतीक बन चुकी है, जिसने सफलता के नए और ऐतिहासिक कीर्तिमान स्थापित किए हैं।

वोकल फॉर लोकल

खादी और ग्रामोद्योग क्षेत्र की अभूतपूर्व प्रगति से जुड़े प्रमुख तथ्य

खादी और ग्रामोद्योग उत्पादों की कुल बिक्री

वित्तीय वर्ष 2013-14
₹31,154 करोड़

वित्तीय वर्ष 2025-26
₹1,87,105 करोड़

501% की अभूतपूर्व वृद्धि

खादी वस्त्रों का छह गुना विकास

पिछले 12 वर्षों में अकेले खादी वस्त्रों की बिक्री 1,081 करोड़ रुपये से बढ़कर 7,869 करोड़ रुपये (लगभग 8,000 करोड़) तक पहुँच गई है, जो 628% की छलांग है।

उत्पादन में वृद्धि

इस क्षेत्र का कुल उत्पादन 2013-14 के 26,109 करोड़ रुपये से 380% बढ़कर 2025-26 में 1,25,296 करोड़ रुपये हो गया है।

रोज़गार के नए अवसर

पिछले 12 वर्षों में, इस क्षेत्र में रोज़गार सृजन में 56% की वृद्धि हुई है।

महिला सशक्तीकरण का केंद्र

खादी क्षेत्र में काम करने वाले कारीगरों में से 80% से अधिक महिलाएँ हैं।

PMEGP से उद्यमशीलता

प्रधानमंत्री रोजगार सृजन कार्यक्रम के तहत पिछले 12 वर्षों में अब तक 10.84 लाख से अधिक नई इकाइयाँ स्थापित की गई हैं।

सब्सिडी सहायता: इन इकाइयों के लिए भारत सरकार द्वारा 29,623 करोड़ की मार्जिन मनी सब्सिडी प्रदान की गई, जिसने ग्रामीण क्षेत्रों में लगभग 97.95 लाख लोगों के लिए रोजगार के नए रास्ते खोले।

‘चौंगप्रेंग’

नवजीवन पाती त्रिपुरा की जनजातीय विरासत

भारत की सांस्कृतिक विविधता केवल इसकी भाषाओं या वेशभूषा में ही नहीं, बल्कि इसके पारम्परिक वाद्ययंत्रों की धुनों में भी बसती है। देश के हर कोने की अपनी एक अलग धुन और अपना एक अनूठा वाद्ययंत्र है। इन्ही में से एक है त्रिपुरा का 'चौंगप्रेंग'। बांस से बना तीन तारों वाला यह वाद्ययंत्र त्रिपुरा के जनजातीय समुदायों के बीच बेहद लोकप्रिय रहा है। जब इसके तारों को छेड़ा जाता है, तो इससे निकलने वाली मधुर धुन ‘सरोद’ जैसी प्रतीत होती है। आधुनिकता के शोर में यह सुरीला वाद्ययंत्र युवाओं के बीच अपनी पहचान खोने लगा था। लेकिन त्रिपुरा के सूरज कुमार देबबर्मा ने इस लुप्त होती विरासत को फिर से जीवित करने का संकल्प लिया और अब इसकी गूंज फिर से सुनाई दे रही है।

बचपन की यादें और 'चौंगप्रेंग' से पहली मुलाक़ात

सूरज कुमार देबबर्मा का संगीत से जुड़ाव किसी औपचारिक प्रशिक्षण का मोहताज नहीं रहा, बल्कि यह उनके परिवार की जड़ों से स्वाभाविक रूप से पनपा है। बंगाली

लोकगीतों और 'बाऊल' संगीत के बीच पले-बढ़े सूरज जी की संगीत यात्रा उनके घर के आँगन से ही शुरू हुई थी। अपनी शुरुआती प्रेरणाओं और चौंगप्रेंग से अपनी पहली मुलाक़ात को याद करते हुए वे कहते हैंः

"बचपन से ही मुझे संगीत का बहुत शौक़ था। मेरे माता-पिता बंगाली गीत गाते थे और शाम की आरती में भजन करते थे। झूम (Jhum) खेती से आई नई फसल को खाते समय भी हमारे यहाँ गीत गाए जाते थे। मैं घर में सबसे छोटा था, इसलिए यह सब देखकर बड़ा हुआ। माता-पिता के साथ रहकर ही मैंने चौंगप्रेंग, रामकरताल और खंजनी जैसे वाद्ययंत्र बजाना सीखा। मुझे तारों वाले वाद्ययंत्रों की मीठी धुन सबसे ज्यादा आकर्षित करती थी। एक बार मुझे अपनी बड़ी बहन के घर एक पुराना और थोड़ा टूटा हुआ चौंगप्रेंग मिला। मैं उसे खुशी-खुशी घर ले आया और पिता जी ने उसे तुरंत मेरे बजाने के लिए ठीक कर दिया।"

बंगाली लोकगीत से लेकर 'कोकबोरोक' (Kokborok) तक का

सफर

सूरज जी ने शुरुआत में बंगाली गीतों और कीर्तन से अपनी पहचान बनाई। 'डोल' उत्सव के दौरान वह भक्ति गीत गाते हुए गाँव-गाँव घूमते थे। उनके पास अपना कोई संगीत समूह नहीं था, लेकिन जहाँ भी कीर्तन होता, वह अपनी जगह बना ही लेते थे। उनकी कला को एक नई दिशा तब मिली, जब उन्होंने अपनी जड़ों की ओर लौटने का फैसला किया। अपनी मातृभाषा से जुड़ाव के इस दिलचस्प मोड़ के बारे में वे बताते हैं:

"मैं ज़्यादातर बंगाली गीत ही गाता था। लेकिन एक दिन हमारे गाँव के मुखिया ने सलाह दी कि मुझे अपनी मातृभाषा यानी 'कोकबोरोक' (त्रिपुरी भाषा) में गीत लिखने और गाने चाहिए। उस दिन के बाद से मैंने कोकबोरोक में लिखना और गाना शुरू कर दिया।"

संगीत और युवाओं के लिए एक अहम संदेश

सूरज कुमार देबबर्मा का संगीत आज केवल त्रिपुरा के

गाँवों तक सीमित नहीं है। उन्होंने अपने चौंगप्रेंग और कोकबोरोक गीतों के माध्यम से सद्भाव और एकता का संदेश देते हुए देश-विदेश की यात्राएँ की हैं। अपने इस सफ़र और भावी पीढ़ी के लिए अपनी सोच को स्पष्ट करते हुए वह कहते हैंः

"मैंने अरुणाचल प्रदेश, असम के हैलाकांडी, दिल्ली, कोलकाता और बांग्लादेश की भी यात्रा की है। राज्य के बाहर मैंने हमेशा सद्भाव और एकता के गीत गाए। अरुणाचल प्रदेश में, मैंने एक कोकबोरोक गीत गाया था, जिसका अर्थ है- 'भारत का धर्म सत्य है, भारत का ईश्वर सत्य है, यह सत्य है कि भारत हमारी सुंदर और पवित्र भूमि है।' आज के युवाओं को मेरा यही संदेश है कि अपनी पढ़ाई के साथ-साथ इन पारम्परिक वाद्ययंत्रों को बजाना भी सीखें। संगीत आपको नशे जैसी बुरी आदतों से दूर रखने में बहुत बड़ी भूमिका निभाता है।"

सूरज कुमार देबबर्मा का यह सफ़र साबित करता है कि जब कोई व्यक्ति अपने हुनर और संस्कृति को बचाने का सच्चा जज़्बा दिखाता है, तो कोई भी परम्परा लुप्त नहीं हो सकती। माननीय प्रधानमंत्री का यह आग्रह बेहद महत्त्वपूर्ण है कि हमें अपने आस-पास के पारम्परिक वाद्ययंत्रों को सोशल मीडिया पर साझा करना चाहिए, ताकि देश की नई पीढ़ी 'वोकल फॉर लोकल' के मंत्र को संगीत के क्षेत्र में भी साकार कर सके। चौंगप्रेंग के तारों की धुन केवल एक वाद्ययंत्र की ध्वनि नहीं है, बल्कि यह त्रिपुरा की समृद्ध जनजातीय विरासत की धड़कन है, जो अब फिर से गूंजने लगी है।

गुरु पूर्णिमा और डॉ. कलाम

भारत के शिक्षकों का सम्मान

हिंदू माह 'आषाढ़' की पूर्णिमा को भारत में गुरु पूर्णिमा का उत्सव मनाया जाता है। यह एक प्राचीन भारतीय त्योहार है जो हमारे जीवन को राह दिखाने वाले गुरुओं के सम्मान में मनाया जाता है। इसमें 'गु' का अर्थ है अज्ञानता का गहरा अंधेरा, जबकि 'रु' उस शक्ति का प्रतीक है जो इस अंधेरे को दूर करती है। संयोग से, इस साल यह पवित्र दिन भारत के सबसे चहेते नेताओं और दूरदर्शी हस्तियों में शुमार, भारत रत्न डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम की पुंयतिथि भी थी।

एक वैज्ञानिक - सर्वदा ह्रदय से शिक्षक

कई अद्वितीय विशेषताओं से परिपूर्ण डॉ. कलाम एक प्रतिभाशाली एयरोस्पेस वैज्ञानिक थे। उन्होंने भारत को अंतरिक्ष के क्षेत्र में बुलंदियों तक पहुँचाया और इसकी रणनीतिक रक्षा संरचना की स्थापना की। वे भारत के 'मिसाइल मैन' थे जिन्होंने पोखरण–द्वितीय परमाणु परीक्षण किया था। इतना ही नहीं, उन्होंने भारत के 11वें राष्ट्रपति के रूप में अद्वितीय अनुग्रह के साथ कार्य किया और 'पीपुल्स प्रेसिडेंट' की उपाधि अर्जित की। इसके अलावा, इन सभी स्मरण–योग्य सराहनाओं में से, उनके दिल के सबसे करीब की उपाधि केवल 'शिक्षक' की थी। डॉ. कलाम की सफलता की ऊँचाइयों ने कभी भी उन्हें छात्रों से दूर नहीं होने दिया। वह अक्सर बच्चों और युवाओं से बातचीत करते थे, उन्हें सवाल पूछने, वैज्ञानिक

सोच विकसित करने और सबसे बढ़कर, सपने देखने के लिए प्रोत्साहित करते थे। उनका मानना था कि एक शिक्षक का उद्देश्य केवल पाठ्यपुस्तकों से जानकारी को नोटबुक में स्थानांतरित करना नहीं है, बल्कि कल्पनाशीलता को प्रज्वलित करना है। उनका लोकप्रिय कथन है, 'सपने देखो, सपने देखो, सपने देखो। सपने विचारों में बदल जाते हैं और विचार कार्य में परिणत होते हैं।' उनके लिए युवा राष्ट्रीय परिवर्तन के इंजन थे और शिक्षक स्पार्क प्लग थे। छात्रों के साथ उनकी बातचीत से उनका गहरा विश्वास झलकता है कि भारत के युवाओं के पास एक मजबूत, अधिक विकसित और आत्मनिर्भर भारत के निर्माण के लिए अनिवार्य ऊर्जा और कल्पना-शक्ति मौजूद है।

गुरु पूर्णिमाः कृतज्ञता का अवसर

गुरु पूर्णिमा शिक्षकों और शिक्षार्थियों के बीच के अटूट रिश्ते को उत्सव के रूप में मनाने का मौका देती है। यह दिन शिक्षकों और आध्यात्मिक गुरुओं की

पूजा और उन्हें याद करने से जुड़ा है। गुरु की अवधारणा घर से ही शुरू होती है। जैसा कि माननीय प्रधानमंत्री कहते हैं, 'माता-पिता हमारे प्रथम शिक्षक होते हैं'। वे हमें संस्कार, अनुशासन, दया और सही-गलत के बीच का फर्क सिखाते हैं। जब बच्चे स्कूल जाते हैं, तो शिक्षक उन्हें

ज्ञान, शिक्षण और नई चीज़ों की खोज की दुनिया से परिचित कराकर इस नींव को और मजबूत करते हैं। एक शिक्षक केवल पाठ्यपुस्तक के पाठ समझाने से कहीं अधिक काम करता है। शिक्षक क्षमता को पहचानते हैं, जिज्ञासा को बढ़ावा देते हैं, आत्मविश्वास जगाते हैं और अक्सर छात्रों को ऐसे रास्ते चुनने के लिए प्रेरित करते हैं, जिनके बारे में उन्होंने कभी सोचा भी नहीं होता। उनका प्रभाव व्यक्ति पर जीवन भर बना रह सकता है।

डॉ. कलाम के अध्यापन का तरीका

शिक्षा के प्रति डॉ. कलाम का नजरिया जिज्ञासा, रचनात्मकता और वैज्ञानिक चिंतन पर आधारित था। वे चाहते थे कि छात्र सिर्फ विषय को रटने के बजाय सोचने, सवाल करने और नई चीजें बनाने का आत्मविश्वास विकसित करें। उनका अपना सफर भी यही दर्शाता है। घर पर उनके पिता का आध्यात्मिक अनुशासन; रामेश्वरम के एलिमेंट्री स्कूल, रामनाथपुरम के श्वार्ट्ज हाई स्कूल और मद्रास इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी में उच्च शिक्षा के दौरान उनके शिक्षकों और प्रोफेसरों ने उनकी वैज्ञानिक सोच को आकार दिया। वहीं, अपने पेशेवर जीवन में मिले मार्गदर्शकों ने उन्हें वह अनुशासन और विजन विकसित करने में मदद की, जिसकी जरूरत भारत के कुछ सबसे महत्वपूर्ण वैज्ञानिक कार्यक्रमों में योगदान देने के लिए थी। अपने प्रेरणा-स्रोत के बारे में एक सवाल का जवाब देते हुए उन्होंने एक बार लिखा था,

"मेरे जीवन में तीन लोगों ने मुझे प्रेरित किया और मुझे एक मिशन दिया। पहले थे रामेश्वरम में मेरी 5वीं कक्षा के स्कूल टीचर। उनका नाम शिवसुब्रमंयम अय्यर था। उन्होंने मुझे जीवन में उड़ान भरने का मिशन दिया। दूसरे व्यक्ति जिन्होंने मुझे जीवन में प्रेरित किया, वे सतीश धवन थे। उन्होंने मुझे सिखाया कि समस्याओं को अपना मालिक कैसे न बनने दें और अपने लक्ष्यों को पाने के लिए कड़ी मेहनत कैसे करें। एक और महान व्यक्ति जिनके साथ

मैंने काम किया, वे डॉ. विक्रम साराभाई थे। उन्होंने मुझे एक विजन रखने का महत्व सिखाया।"

राष्ट्रपति बनने के बाद भी, डॉ. कलाम ने छात्रों पर काफी ध्यान दिया और उनके लिए समय निकाला। उन्होंने पूरे देश की यात्रा की, स्कूलों और विश्वविद्यालयों का दौरा किया और युवा पीढ़ी से सीधे बातचीत की। उनके संदेश में हमेशा एकरूपता रही। शिक्षा का उद्देश्य युवाओं को सृजनकर्ता, समस्या-समाधानकर्ता और जिम्मेदार नागरिक बनने के लिए सशक्त बनाना होना चाहिए।

डॉ. कलाम के संदेश के माध्यम से उनका स्मरण

डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम की पुंयतिथि न केवल उनकी असाधारण उपलब्धियों को याद करने का दिन है, बल्कि उन मूल्यों पर विचार करने का भी दिन है जिन्हें उन्होंने अपने जीवन में अपनाया। उनका जीवन हमें याद दिलाता है कि ज्ञान तभी सच में सार्थक होता है जब उसे दूसरों के साथ बांटा जाए और समाज की भलाई के लिए इस्तेमाल किया जाए। यह एक बहुत बड़ी बात है कि 27 जुलाई, 2015 को डॉ. कलाम ने आईआईएम शिलांग में एक पोडियम पर खड़े होकर, पूरी सक्रियता से पढ़ाते और लेक्चर देते हुए अपनी आखिरी सांस ली। वे एक शिक्षक के तौर पर जी रहे थे और एक शिक्षक के तौर पर ही उनका निधन हुआ। उन्होंने भारत की प्राचीन शिक्षण परम्पराओं में मौजूद आवश्यक तत्व पूर्ण समर्पण का उदाहरण पेश किया। गुरु पूर्णिमा के अवसर पर, आइए हम उन सभी माता-पिता, शिक्षकों, सलाहकारों और मार्गदर्शकों के प्रति दिल से आभार व्यक्त करें, जिन्होंने हमारे सफर को आकार दिया है। डॉ. कलाम को याद करते हुए आइए हम उनके भीतर के शिक्षक का सम्मान करें, वह शिक्षक जो भारत के युवाओं में विश्वास रखते थे, उन्हें बड़े सपने देखने के लिए प्रोत्साहित करते थे और उन सपनों को हकीकत में बदलने के लिए प्रेरित करते थे।

हर घर तिरंगा
गौरवान्वित भारत

'हर घर तिरंगा', यानी 'हर घर में तिरंगा' आज़ादी के 75 साल पूरे होने के उपलक्ष्य में आज़ादी का अमृत महोत्सव के तत्वावधान में 2022 में भारत सरकार द्वारा शुरू किया गया एक राष्ट्रव्यापी अभियान है।

इस अभियान का समन्वय संस्कृति मंत्रालय द्वारा नोडल एजेंसी के रूप में किया जाता है। इसका उद्देश्य "नागरिकों को राष्ट्रीय ध्वज फहराने और तिरंगे के बारे में जागरूकता को बढ़ाना" है। इसका एक उद्देश्य राष्ट्रीय ध्वज के साथ सम्बंधों को औपचारिक और संस्थागत से आगे बढ़कर गहरे व्यक्तिगत बंधन में बदलना भी है।

9 से 17 अगस्त तक मनाया गया, 'हर घर तिरंगा 2026' हमारे राष्ट्रीय गीत - वंदे मातरम के 150 साल पूरे होने की भावना को समर्पित था।

इस अभियान के लिए समर्पित वेबसाइट **https://harghartiranga.com/** है। यह वेबसाइट नागरिकों का निम्नलिखित बिंदुओं पर मार्गदर्शन भी करती है :

- झंडा फहराने, सेल्फी अपलोड करने और प्रमाणपत्र/वीडियो डाउनलोड करने के चरण
- वंदे मातरम गाना सीखने
- ध्वजारोहण सम्बंधी दिशानिर्देश

नागरिकों से तिरंगे के साथ अपनी सेल्फी क्लिक करके गर्व के साथ अभियान में भाग लेने और इसे वेबसाइट पर अपलोड करने का आग्रह किया गया। ऐसा करने पर उन्हें एक प्रमाण पत्र मिल जाता है। अभियान की शुरुआत के बाद से, नागरिकों ने हर साल अभियान के प्रति अत्यधिक उत्साह और देशभक्ति दिखाई है।

वेबसाइट में इसके साथ कहानियाँ भी शामिल हैं:

- झंडे के साथ गुमनाम शहीद
- तिरंगे के वीडियो के साथ उत्साह
- तिरंगे पर सीरीज
- तिरंगे के साथ बीते पल

वेबसाइट देखने के लिए इस क्यूआर को स्कैन करें:

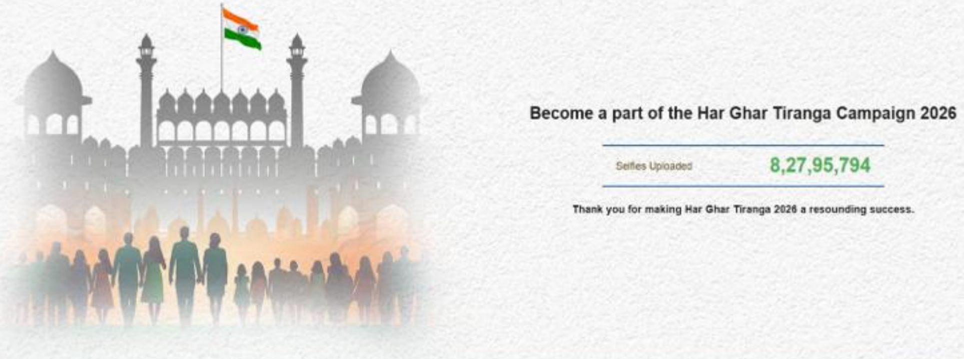

सूर्यपथ तिरंगा

इस वर्ष, हर घर तिरंगा में 'सूर्यपथ तिरंगा' को प्रदर्शित किया गया। यह दुनिया भर में उगते सूरज के मार्ग का अनुसरण करते हुए तिरंगे का अपनी तरह का पहला वैश्विक रिले है। फिजी स्थित भारतीय उच्चायोग से लेकर संयुक्त राज्य अमेरिका तक 54 देशों और कई टाइम जोन की यात्रा के बाद भारत के 80वें स्वतंत्रता दिवस पर रिले का समापन हुआ। सैन फ्रांसिस्को में महावाणिज्य दूतावास में इसका अंत हुआ। यह वंदे मातरम के 150 साल पूरे होने का भी अवसर है। रिले में प्रवासी भारतीयों की अत्यधिक भागीदारी देखी गई, जो तिरंगे के साथ उनके गहरे भावनात्मक जुड़ाव को दर्शाती है।

भारतीय प्रौद
Indian Institu

मन की बात

प्रतिक्रियाएँ

कार्रवाई के लिए आह्वान

136वाँ संस्करण

आइए, इस 'कारगिल विजय दिवस' पर हम अपने अमर शहीदों को नमन करें, और एक सुरक्षित, सक्षम और आत्मनिर्भर भारत के निर्माण का अपना संकल्प और मजबूत करें।

आइए, हम भी अपने आस-पास किसी एक तालाब, कुएँ या बावड़ी की जिम्मेदारी लें - पानी की हर बूँद बचाएँ।

मैं आप सभी से कहूँगा, हम सभी अपने जीवन के किसी विशेष अवसर को, प्रकृति से जरूर जोड़ें। एक पेड़ माँ के नाम लगाएँ।

मेरा आग्रह है कि हम हस्तकला को प्रोत्साहित कर, अपने बुनकर साथियों का सम्मान करें। आइए, हम 'वोकल फ़ॉर लोकल' की भावना को और सशक्त करें।

मेरा आप सभी से आग्रह है कि आने वाले त्योहार में 'खादी' का कोई-न-कोई, **handloom** का कोई-न-कोई, **handicraft** का कोई-न-कोई **product** जरूर खरीदें।

मेरा आग्रह है कि आप भी अपने आस-पास के पारम्परिक वाद्ययंत्र की जानकारी सोशल मीडिया पर जरूर शेयर करें।

Amit Shah
@AmitShah

Show translation

मोदी जी ने 'मन की बात' में बताया कि विक्रम-1 की सफल लॉन्चिंग से हमारे युवा इनोवेटर्स ने वह कर दिखाया, जिसकी कल्पना तक मुश्किल थी। इस उपलब्धि से हर देशवासी गौरवान्वित है।

Dr Bhagwat Kishanrao Karad (मोदी का परिवार)
@DrBhagwatKarad

Translated from Marathi Show original

Tributes were paid to the brave heroes of Kargil in 'Mann Ki Baat'. At the same time, an appeal was made to adopt indigenous goods and handloom products for an Atmanirbhar Bharat.

#MannKiBaat
@narendramodi
@BJP4India

C R Paatil
@CRPaatil

Show translation

माननीय प्रधानमंत्री श्री @narendramodi साहब ने आज 'मन की बात' कार्यक्रम में 'Catch the Rain' और Rain Water Harvesting को लेकर पूरे देश को अत्यंत महत्वपूर्ण संदेश दिया है।

हम हर घर की छत से बहने वाले बारिश के पानी को व्यर्थ बहने देने के बजाय जमीन में उतारने का प्रयास करें। अलग-अलग डिजाइनों के माध्यम से बहुत कम खर्च में लाखों-करोड़ों लीटर पानी जमीन में उतारा जा सकता है।

प्रधानमंत्री मोदी साहब का 'Catch the Rain' मंत्र आने वाले वर्षों के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है। प्रयास यही हो कि पानी की एक बूंद भी व्यर्थ बहकर न जाए।

#MannKiBaat #CatchTheRain #RainWaterHarvesting #JalSanrakshan

Giriraj Singh
@girirajsinghbjp

Show translation

सीतामढ़ी के रीसाइक्लिंग मॉडल की पीएम मोदी ने मन की बात में की सराहना
timesofindia.indiatimes.com/city/patna/sit...

via NaMo App

सीतामढ़ी के रीसाइक्लिंग मॉडल की पीएम मोदी ने मन की बात में की सराहना

THE TIMES OF INDIA JULY 27, 2026

सीतामढ़ी के अभिनव अपशिष्ट रीसाइक्लिंग मॉडल का उल्लेख पीएम नरेन्द्र मोदी ने अपने 'मन की बात' कार्यक्रम में किया। इस मॉडल के तहत बेकार प्लास्टिक को उपयोगी उत्पादों में परिवर्तित किया जा रहा है। यह पहल दर्शाती है कि किस प्रकार सामुदायिक नेतृत्व वाला रीसाइक्लिंग मॉडल अपशिष्ट को कम करने, आजीविका के अवसर पैदा करने और स्वच्छ वातावरण को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है। साथ ही, यह अन्य क्षेत्रों को भी सतत और प्रभावी अपशिष्ट प्रबंधन की दिशा में कदम उठाने के लिए प्रेरित करता है।

Mohan Charan Majhi
@MohanMOdisha

Show translation

ମାନ୍ୟବର ପ୍ରଧାନମନ୍ତ୍ରୀ ଶ୍ରୀ @narendramodi ଜୀ 'ମନ୍ କି ବାତ୍'ରେ ଭୁବନେଶ୍ୱରର ବର୍ଷାଜଳ ସଂରକ୍ଷଣ ପ୍ରୟାସର ପ୍ରଶଂସା ଓଡ଼ିଶା ପାଇଁ ଗର୍ବର ବିଷୟ।

ଜଳ ସଂରକ୍ଷଣ କେବଳ ଏକ ଅଭିଯାନ ନୁହେଁ, ଏହା ଆଗାମୀ ପିଢ଼ି ପ୍ରତି ଆମର ଦାୟିତ୍ୱ। ଆସନ୍ତୁ, ଆମେ ସମସ୍ତେ ମିଶି ବର୍ଷାଜଳର ପ୍ରତ୍ୟେକ ବୁନ୍ଦାକୁ ସଞ୍ଚୟ କରି ଏକ ଜଳ-ସୁରକ୍ଷିତ ଓଡ଼ିଶା ଗଢ଼ିବା।

Nayab Saini
@NayabSainiBJP

Show translation

आदरणीय प्रधानमंत्री श्री @narendramodi जी द्वारा 'मन की बात' कार्यक्रम में 'हर घर तिरंगा' अभियान को जन-जन का संकल्प बनाने का किया गया आह्वान राष्ट्र के गौरव, अमर वीरों के बलिदान के सम्मान और 'राष्ट्र प्रथम' की भावना को जन-जन तक पहुंचाने का एक सशक्त माध्यम है।

वीरों की धरती हरियाणा ने सदैव राष्ट्रसेवा और तिरंगे के सम्मान को सर्वोच्च स्थान दिया है। मुझे पूर्ण विश्वास है कि इस वर्ष भी हरियाणा का प्रत्येक परिवार पूरे उत्साह, सम्मान और गर्व के साथ 'हर घर तिरंगा' अभियान में सहभागी बनकर अपने घर पर तिरंगा फहराएगा और अमर शहीदों के त्याग एवं बलिदान को नमन करेगा।

आइए, हम सब मिलकर तिरंगे के सम्मान को जन-जन का सम्मान बनाएं और विकसित भारत के संकल्प को नई ऊर्जा दें।

जय हिंद! 🇮🇳

Nitin Nabin
@NitinNabin

Show translation

आज बांकीपुर विधानसभा के कदमकुआं मंडल स्थित बरनवाल भवन में कार्यकर्ताओं एवं आमजनों के साथ आदरणीय प्रधानमंत्री श्री @narendramodi जी के लोकप्रिय कार्यक्रम 'मन की बात' के 136वें संस्करण को सामूहिक रूप से सुना।

प्रधानमंत्री जी ने अपने प्रेरक विचारों के माध्यम से कारगिल विजय दिवस पर वीर जवानों के अद्वितीय साहस और बलिदान को नमन करते हुए आत्मनिर्भर भारत की बढ़ती रक्षा शक्ति, जल एवं पर्यावरण संरक्षण, खेल और शिक्षा के क्षेत्र में युवाओं की उल्लेखनीय उपलब्धियों, विज्ञान एवं अंतरिक्ष के क्षेत्र में भारत की प्रगति, 'वोकल फॉर लोकल' तथा पारंपरिक हस्तशिल्प के संरक्षण, महिला सशक्तिकरण एवं जनभागीदारी के माध्यम से राष्ट्र निर्माण जैसे महत्वपूर्ण विषयों पर देशवासियों से संवाद किया।

'मन की बात' देश के करोड़ों नागरिकों को एक साझा उद्देश्य से जोड़ने का सशक्त माध्यम बन चुका है तथा राष्ट्र प्रथम की भावना के साथ विकसित भारत के निर्माण में प्रत्येक नागरिक की सक्रिय भागीदारी के लिए निरंतर प्रेरित करता है।

#MannKiBaat

Pankaj Chaudhary
@mppchaudhary

Show translation

आदरणीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी ने आज 'मन की बात' कार्यक्रम में बिजनौर के लखीवाला ग्राम की मातृशक्ति द्वारा निर्मित 'विदुर प्रेरणा स्वदेशी हर्बल टी' का उल्लेख कर उत्तर प्रदेश की माताओं-बहनों के आत्मनिर्भर प्रयासों को राष्ट्रीय पहचान दी।

यह 'वोकल फॉर लोकल' और 'आत्मनिर्भर भारत' का प्रेरणादायी उदाहरण है।

प्रदेश की मातृशक्ति का उत्साहवर्धन करने हेतु माननीय प्रधानमंत्री जी का हृदय से आभार।

#NarendraModi
#MannKiBaat
#उत्तर_प्रदेश

@narendramodi
@BJP4India @BJP4UP

Rajnath Singh
@rajnathsingh

Show translation

प्रधानमंत्री श्री @narendramodi ने आज 'मन की बात' कार्यक्रम में बताया कि कैसे भारत का रक्षा उत्पादन नित नई बुलंदियों को छू रहा है।

"भारत एक विश्वसनीय वैश्विक रक्षा साझेदार के रूप में उभर रहा है और देश अपनी रक्षा क्षमताओं को लगातार मजबूत कर रहा है।" - प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी

Raksha Khadse
@khadseraksha

Show translation

माननीय प्रधानमंत्री श्री @narendramodi जी ने आज #MannKiBaat में #Glasgow2026 में देश का मान बढ़ा रहे हमारे एथलीटों के अटूट जज्बे की सराहना की। 🇮🇳

हमारे खिलाड़ियों का यह उत्कृष्ट प्रदर्शन और समर्पण पूरे देश को गौरवान्वित कर रहा है। 'मन की बात' में मिला यह प्रोत्साहन हमारी पूरी भारतीय टीम में एक नई ऊर्जा का संचार करेगा।

आइए, एकजुट होकर हमारे खिलाड़ियों का हौसला बढ़ाएं!

#Cheer4Bharat #CWG2026 #KheloIndia

Vijay Baghel
@vijaybaghelcg

Show translation

पीएम मोदी ने 'मन की बात' में मणिपुर के एस्ट्रोफिजिसिस्ट रोनाल्डो लैशराम और नागरिकों के प्रयासों को सराहा
indiatodayne.in/manipur/story/...

via NaMo App

पीएम मोदी ने 'मन की बात' में मणिपुर के एस्ट्रोफिजिसिस्ट रोनाल्डो लैशराम और नागरिकों के प्रयासों को सराहा

INDIA TODAY NE JULY 27, 2026

पीएम मोदी ने 'मन की बात' में देशभर से साइंटिफिक एक्सीलेंस, पर्यावरण संरक्षण और नागरिकों के नेतृत्व वाले इनोवेशन के प्रेरणादायक उदाहरणों को रेखांकित किया। उन्होंने मणिपुर के एस्ट्रोफिजिसिस्ट डॉ. रोनाल्डो लैशराम की सराहना की, जो मणिपुर की Loktak झील पर नामित नेम गैलेक्सियों के बड़े क्लस्टर की खोज करने वाली इंटरनेशनल टीम का हिस्सा थे। पीएम ने कहा कि ऐसी व्यक्तिगत उपलब्धियां और जमीनी पहल देश के विकास को आगे बढ़ाने में मदद कर रही हैं।

Vinod Chavda 🇮🇳
@VinodChavdaBJP

Translated from Gujarati Show original

Honorable Prime Minister Shri @narendramodi ji's dialogue with the countrymen under the 'Mann Ki Baat' program, as part of the tree plantation and conservation initiative organized by Kachchh Lok Sabha under "One Tree in the Name of Mother," today at Jain Samajwadi in Nagalpura village of Mandvi taluka, all those present listened to the program 'Mann Ki Baat' of the country's illustrious Prime Minister, the revered Shri Narendra Bhai Modi ji...

Vishnu Deo Sai
@vishnudsai

Show translation

माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी ने आज 'मन की बात' कार्यक्रम में 'कैच द रेन' अभियान के अंतर्गत कोरबा जिले में जल संरक्षण एवं जल संचयन के उत्कृष्ट प्रयासों का उल्लेख कर छत्तीसगढ़ को राष्ट्रीय स्तर पर गौरवान्वित किया है।

यह प्रदेश के प्रत्येक नागरिक के लिए गर्व और प्रेरणा का विषय है। समस्त छत्तीसगढ़वासियों की ओर से माननीय प्रधानमंत्री जी का हृदय से आभार एवं अभिनंदन।

प्रधानमंत्री जी के मार्गदर्शन में हम जल संरक्षण, वर्षा जल संचयन और प्रकृति संरक्षण को जनभागीदारी का व्यापक अभियान बनाते हुए विकसित छत्तीसगढ़ के संकल्प को और सशक्त करेंगे।

@narendramodi

#MannKiBaat

ପ୍ରଧାନମନ୍ତ୍ରୀଙ୍କ ମନ୍ କି ବାତ’ର ୧୩୬ତମ ଏପିସୋଡ

ଯୁବଶକ୍ତି ହିଁ ଭାରତର ପ୍ରକୃତ ଶକ୍ତି

'मन की बात' में पीएम मोदी ने देशवासियों से किया आह्वान

हर घर तिरंगा अभियान को आगे बढ़ाएं उत्साह से अभियान को बेमिसाल बनाएं

रेडियो कार्यक्रम के 136वें एपिसोड को प्रधानमंत्री ने संबोधित किया

सीतामढ़ी 'वेस्ट टू वेल्थ' पहल को भी सराहा

Featured artisans expect demand boost, seek support

PM's 'Mann Ki Baat' puts Kashmir's 'Vagu' back in spotlight

Irfan Tramboo

SRINAGAR, July 26: Prime Minister Narendra Modi today hailed the revival of Kashmir's traditional Vagu reed mat in the 136th episode of Mann Ki Baat, praising Srinagar-based artisan Ghulam Hussain and his daughter, Tanzila, for preserving the fading craft.

Modi also urged people across the country to adopt the traditional reed mat under the Vocal for Local campaign, describing it as an eco-friendly product with unique utility.

Welcoming the recognition, the father-daughter duo said the nationwide mention would significantly boost the craft's visibility and demand while urging the Government to provide sustained support to artisans to ensure its long-term survival.

Tanzila, a Post Graduate, weaves a traditional Vagu reed mat at her residence in Srinagar on Sunday. -Excelsior/Shakeel

In his monthly radio address, Modi described Vagu as a unique eco-friendly mat handcrafted from reeds and paddy straw harvested from Kashmir's marshes.

He said the traditional mat keeps homes cool during summer and warm in winter, adding that two artisans take nearly four days to weave a single mat after the reeds are harvested, sun-dried and sorted.

The Prime Minister said Vagu, once a household staple across Kashmir, had gradually fallen out of use over the years. He credited Ghulam Hussain, who comes from a humble back-

(Contd on page 4 Col 5)

कैच द रेन अभियान में नगर निगम के नवाचारों की प्रधानमंत्री ने की सराहना

प्रधानमंत्री के 'मन की बात' में गूंजा कोरबा का जल संरक्षण मॉडल

কার্গিল দিবসে মোদীর 'মন কি বাত'

উঠল আত্মনির্ভর ভারত ও ক্রীড়াক্ষেত্রে সাফল্যের প্রসঙ্গও

PM Modi praises Vizianagaram's Jaladhara-Jalaharathi initiative in Mann Ki Baat

‘मन की बात’ में गूंजा यूपी का पौधरोपण अभियान

राज्य ब्यूरो, लखनऊ

• 35 करोड़ पौधे लगाने पर पीएम मोदी ने की सराहना, बोले- जनशक्ति का अद्भुत संकल्प

अमृत विचार: प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने रविवार को 'मन की बात' के 136वें एपिसोड में उत्तर प्रदेश के 'एक पेड़ मां के नाम' अभियान की सराहना करते हुए कहा कि प्रदेश में जनशक्ति का अद्भुत संकल्प देखने को मिला। उन्होंने कहा कि 12 जुलाई को उत्तर प्रदेश में एक ही दिन में 35 करोड़ से अधिक पौधे लगाए गए, जो पर्यावरण संरक्षण की दिशा में उल्लेखनीय प्रयास है। प्रधानमंत्री ने कहा कि उत्तर प्रदेश से सांसद होने के नाते यह उनके लिए विशेष गर्व का विषय है।

प्रधानमंत्री ने कहा कि 'एक पेड़ मां के नाम' अभियान के माध्यम से देशभर में लोग प्रकृति के प्रति अपनी जिम्मेदारी निभा रहे हैं। उन्होंने कहा कि पेड़ केवल मनुष्यों के लिए ही नहीं, बल्कि असंख्य जीव-जंतुओं का भी आश्रय हैं। उन्होंने लोगों से अपने जीवन के किसी विशेष अवसर को पौधरोपण से जोड़ने और पर्यावरण संरक्षण के इस अभियान में भागीदारी निभाने का आह्वान किया।

प्रधानमंत्री की टिप्पणी पर मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने सोशल मीडिया मंच 'एक्स' पर आभार व्यक्त करते हुए कहा कि 'मन की बात' में उत्तर प्रदेश के अभियान का उल्लेख प्रदेश की सामूहिक चेतना, जनभागीदारी और पर्यावरण संरक्षण के प्रयासों का सम्मान है। उन्होंने कहा कि उत्तर प्रदेश ने साबित किया है कि प्रकृति के प्रति संवेदनशील समाज ही विकसित भारत की मजबूत आधारशिला रख सकता है। मुख्यमंत्री ने विश्वास जताया कि प्रधानमंत्री के मार्गदर्शन में प्रदेश हरित विकास और पर्यावरण संरक्षण के राष्ट्रीय अभियान को आगे भी गति देता रहेगा।

12 जुलाई को बना था पौधरोपण का नया रिकॉर्ड

- उत्तर प्रदेश ने 12 जुलाई को आयोजित पौधरोपण महाअभियान-2025 के दौरान एक दिन में 35 करोड़ से अधिक पौधे लगाकर नया कीर्तिमान बनाया था। अभियान में विभिन्न सरकारी विभागों, स्थानीय निकायों, स्वयं सहायता समूहों, विद्यार्थियों, सामाजिक संगठनों और आम नागरिकों की व्यापक भागीदारी रही।

एक पेड़ मां के नाम' बना जनभागीदारी का राष्ट्रीय अभियान

- प्रधानमंत्री की पहल पर शुरू हुआ 'एक पेड़ मां के नाम' अभियान अब पर्यावरण संरक्षण के जन अभियान का स्वरूप ले चुका है। अभियान का उद्देश्य प्रत्येक नागरिक को अपनी मां के सम्मान में एक पौधा लगाने के लिए प्रेरित करना है, ताकि पौधरोपण के साथ उसके संरक्षण की जिम्मेदारी भी समाज स्वयं निभाए। उत्तर प्रदेश सहित कई राज्यों में इस अभियान को बड़े स्तर पर जनसहयोग मिला है।

'मन की बात' में प्रधानमंत्री ने पीवी सिंधु और महिला क्रिकेट टीम की ऐतिहासिक उपलब्धियों को सराहा

■ दैनिक जागरण, नई दिल्ली

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने रविवार को 'मन की बात' कार्यक्रम में भारत की हालिया खेल उपलब्धियों की सराहना करते हुए बैडमिंटन स्टार पीवी सिंधु की जापान ओपन में ऐतिहासिक जीत और भारतीय महिला क्रिकेट टीम की लॉर्ड्स में दर्ज ऐतिहासिक टेस्ट विजय को देश के लिए गर्व का क्षण बताया।

प्रधानमंत्री मोदी ने 'मन की बात' कार्यक्रम के 136वें एपिसोड में कहा कि हमारे युवाओं ने हाल के दिनों में खेलों में कई उल्लेखनीय उपलब्धियां हासिल की हैं। पीवी सिंधु बैडमिंटन में जापान ओपन का खिताब जीतने वाली पहली भारतीय बनी हैं। पूरा देश उनकी इस उपलब्धि पर गर्व करता है।

सिंधु ने बीते दिनों योकोहामा में जापान ओपन सुपर 750 के महिला एकल फाइनल में जापान की अकाने यामागुची को 21-17, 21-17 से हराकर खिताब अपने नाम किया था। इसके साथ ही वह जापान ओपन खिताब जीतने वाली पहली भारतीय शटलर भी बन गईं। उन्होंने अपने करियर का पहला सुपर 750 खिताब जीता।

प्रधानमंत्री मोदी ने भारतीय महिला क्रिकेट टीम की ऐतिहासिक उपलब्धि का भी विशेष उल्लेख किया। उन्होंने कहा कि भारतीय महिला क्रिकेट टीम ने भी लंदन के लॉर्ड्स मैदान में टेस्ट मैच जीता है।

मन की बात: प्रधानमंत्री बोले मुझे देश की युवा शक्ति पर बहुत गर्व है

एजेंसी

नई दिल्ली। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने रविवार को अपने मासिक रेडियो कार्यक्रम मन की बात में कहा कि उन्हें यह देखकर खुशी होती है कि भारत में ओलंपियाड और हैकथॉन की संस्कृति निरंतर बढ़ रही है। उन्हें विश्वास है कि देश के अधिक से अधिक युवा ऐसे क्षेत्र में अपनी रुचि दिखाएंगे और भारत का परचम लहराएंगे।

प्रधानमंत्री मोदी ने आज मन की बात के 136वें एपिसोड में कहा कि अंतरिक्ष क्षेत्र को निजी कंपनियों के लिए खोलने का सकारात्मक परिणाम आज पूरी दुनिया देख रही है। निजी क्षेत्र द्वारा विकसित भारत के पहले रॉकेट विक्रम-1 के सफल प्रक्षेपण ने देश को गौरवान्वित किया है। उन्होंने इसे भारतीय युवाओं की प्रतिभा, नवाचार, कौशल और धैर्य का उत्कृष्ट उदाहरण बताया। उन्होंने अंतरराष्ट्रीय विज्ञान ओलंपियाड में भारतीय छात्रों के शानदार प्रदर्शन की भी सराहना की। भौतिकी और रसायन विज्ञान ओलंपियाड में सभी भारतीय छात्रों ने स्वर्ण पदक जीते, जबकि जीव विज्ञान ओलंपियाड में भी सभी प्रतिभागियों ने पदक हासिल कर देश का गौरव बढ़ाया। प्रधानमंत्री ने डॉ. एपीजे अब्दुल कलाम को पुण्यतिथि पर उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए कहा कि ये जीवनभर युवाओं को बड़े सपने देखने के लिए प्रेरित करते रहे। उन्होंने आगामी गुरु पूर्णिमा के अवसर पर माता-पिता, शिक्षकों और सभी गुरुजनों के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करने का आह्वान किया।

कारगिल विजय दिवस पर प्रधानमंत्री ने वीर शहीदों और वीर सैनिकों को श्रद्धापूर्वक नमन किया और कहा कि ये दिन हमें अपने वीर जवानों के अद्भुत साहस की याद दिलाता है। उन्होंने बताया कि आज भारत अपने वीर जवानों को याद करने के साथ उनकी विरासतगाथा नई पीढ़ी तक पहुंचाता भी है। इस संबंध में उन्होंने कारगिल विजय वाहन को याद किया और कहा कि 14 जुलाई को दिल्ली के राष्ट्रीय समर स्मारक से शुरू हुई यह मोटरसाइकिल यात्रा, द्रास के कारगिल वॉर मेमोरियल तक पहुंचेगी।

प्रधानमंत्री ने कहा कि आज भारत अपने सैनिकों के साहस के साथ-साथ अपनी तकनीकी क्षमता को भी लगातार मजबूत कर रहा है। रक्षा उत्पादन, रक्षा निर्यात और मित्र देशों के साथ रणनीतिक सहयोग में भारत लगातार नई ऊंचाइयों की ओर बढ़ रहा है। भारतीय नौसेना में आईएनएस महेंद्रगिरि शामिल होना, डीआरडीओ से निर्भय लॉन्ग रेंज गाइडेड रॉकेट का सफल परीक्षण देश की आत्मनिर्भरता की बढ़ती शक्ति का प्रतीक है।

प्रधानमंत्री ने पानी की हर बूंद बचाने की अपील करते हुए कहा कि हम भी अपने आसपास किसी एक तालाब, कुएं या बावड़ी की जिम्मेदारी लें। उन्होंने इस संबंध में कुछ उदाहरण दिए।

खेल जगत की उपलब्धियों की जानकारी देते हुए प्रधानमंत्री ने राष्ट्रमंडल खेलों में भाग ले रहे भारतीय खिलाड़ियों को शुभकामनाएं दीं। उन्होंने पी.वी. सिंधु को जापान ओपन जीतने वाली पहली भारतीय बनने पर बधाई दी। साथ ही, लॉर्ड्स में भारतीय महिला क्रिकेट टीम की पहली टेस्ट जीत को ऐतिहासिक बताते हुए इसे देश की नारी शक्ति की बड़ी उपलब्धि बताया।

पंतप्रधान नरेंद्र मोदी : ‘मन की बात’मध्ये साधला संवाद

जलसंधारण मोहीम जनभागीदारीचे उत्तम उदाहरण!

नवी दिल्ली

कारगिलच्या वीरांना अभिवादन

संरक्षण तंत्रज्ञानात भारताची मोठी भरारी

काय म्हणाले पंतप्रधान मोदी

१

२

‘मन की बात’ में गूंजी प्रदेश की हरित उपलब्धि

35 करोड़ पौधारोपण महाअभियान को प्रधानमंत्री ने बताया जनशक्ति का अद्भुत संकल्प

आशीष ने हिलियम से पत्र भेजने का साझा किया अनुभव

2.7 लाख युवाओं के बीच से हुआ कठिन चयन

मन की बात : प्रधानमंत्री ने युवाओं से किया विज्ञान और जनभागीदारी का आह्वान

हमारे युवा हर क्षेत्र में भारत का नाम रोशन कर रहे हैं: नरेंद्र मोदी

नई दिल्ली, एजेंसी

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने रविवार को मन की बात के 136वें एपिसोड में देशवासियों को संबोधित करते हुए कारगिल विजय दिवस पर शहीद जवानों को नमन किया। उन्होंने कहा कि यह ऐसी तारीख है, जिसे याद रखने के लिए दिन याद रखने की जरूरत नहीं होती। उन्होंने कहा कि कारगिल के वीर सैनिकों का साहस और बलिदान देशवासियों को हमेशा प्रेरित करता रहेगा। प्रधानमंत्री ने देश के युवाओं की उपलब्धियों की सराहना करते हुए कहा कि वे विज्ञान, खेल, नवाचार और अंतरिक्ष जैसे क्षेत्रों में भारत का गौरव बढ़ा रहे हैं। उन्होंने बताया कि फिजिक्स, केमिस्ट्री, बायोलॉजी और मैथ्स ओलंपियाड में भारतीय छात्रों ने शानदार प्रदर्शन किया है। प्रधानमंत्री ने विक्रम-1 के सफल प्रक्षेपण को भारत के अंतरिक्ष क्षेत्र की ऐतिहासिक उपलब्धि बताते हुए कहा कि यह निजी क्षेत्र द्वारा विकसित देश का पहला रॉकेट है। उन्होंने कहा कि भारतीय युवाओं ने अपनी प्रतिभा, मेहनत और नवाचार से दुनिया के सामने नई पहचान बनाई है। साथ ही जल संरक्षण, पर्यावरण संरक्षण और स्वदेशी उत्पादों को अपनाने का भी आह्वान किया।

जल संरक्षण, पर्यावरण और स्वदेशी उत्पादों पर दिया जोर

मप्र के सीधी के प्रयासों की सराहना

PM Modi hails Indian youth, 'Nari Shakti' for recent sports achievements in 'Mann Ki Baat'

'من کی بات' میں وزیر اعظم نے کشمیر کی روایتی 'واگو' چٹائی کے احیاء کو سراہا

سرینگر کے باپ بیٹی کی کاوشیں قومی سطح پر نمایاں، مودی نے ہنر کے تحفظ کی تعریف کی

سرینگر// یو این ایس//

وزیر اعظم نریندر مودی نے اپنے ماہانہ ریڈیو پروگرام ''من کی بات'' میں کشمیر کی صدیوں پرانی روایتی ''واگو'' چٹائی کا خصوصی ذکر کرتے ہوئے اس قدیم دستکاری کے احیاء کو وادی کی ثقافتی شناخت کے تحفظ کی ایک قابل تقلید کوشش قرار دیا۔ انہوں نے کہا کہ یہ ماحول دوست دستکاری نہ صرف کشمیر کی تہذیبی وراثت کی نمائندہ ہے بلکہ آنے والی نسلوں تک اس ورثے کو منتقل کرنے کی ایک اہم مثال بھی ہے۔ یو این ایس کے مطابق اپنے خطاب میں وزیر اعظم نے کہا کہ ''واگو'' چٹائی بنانے کی روایت کئی نسلوں پر محیط ہے اور یہ کشمیر کی قدیم دستکاریوں میں ایک نمایاں مقام رکھتی ہے۔ انہوں نے بتایا کہ یہ چٹائی سرکنڈے اور دھان کے بھوسے سے تیار کی جاتی ہے، جس کی خاص بات یہ ہے کہ یہ گرمیوں میں ٹھنڈک اور سردیوں میں حرارت برقرار رکھنے میں مدد دیتی ہے، جس کی وجہ سے یہ روایتی کشمیری گھروں کا اہم حصہ رہی ہے۔ وزیر اعظم نے کہا کہ ایک وقت تھا جب تقریباً ہر کشمیری گھر میں واگو چٹائی استعمال ہوتی تھی//115

मासिक रेडियो कार्यक्रम 'मन की बात' में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने कहा

भारत वैश्विक रक्षा साझेदार के रूप में उभर रहा

नई दिल्ली, 26 जुलाई।

'स्कूल में चलाया जा रहा संस्कृत क्लब'

'त्योहारों में कोई न कोई खादी उत्पाद जरूर खरीदें'

मन की बात कार्यक्रम में किया बखान

पीएम मोदी ने गिर जंगल में इंडियन ग्रे हॉर्नबिल के बसेरे को सराहा

अहमदाबाद @ पत्रिका. प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने रविवार को मन की बात कार्यक्रम की 136वीं कड़ी में गुजरात के गिर के जंगलों में करीब 60 वर्षों बाद इंडियन ग्रे हॉर्नबिल के फिर से बसेरा बनाने की खबर और इस दिशा में हो रहे प्रयास को सराहा। उन्होंने कहा कि ये गिर में वर्षों से हो रहे संरक्षण और पुनर्स्थापन के प्रयासों का परिणाम है। हॉर्नबिल को जंगलों का किसान कहा जाता है। ये फल खाते हैं और बीजों को दूर-दूर तक पहुंचाते हैं, उन्हीं बीजों से, जंगल में नए पेड़ उगते हैं इस तरह एक पक्षी जंगल को फिर से हरा-भरा बनाने में मदद करता है।

मोदी ने कहा कि अहमदाबाद में जन-भागीदारी की अद्भुत शक्ति दिखाई दी है। भाडज क्षेत्र में एक घंटे के भीतर साढ़े 3 लाख से अधिक पौधे रोपे गए, इसमें 25 हजार से अधिक लोग जुटे। स्कूली बच्चे, एनसीसी कैडेट, स्वयंसेवक और अन्य नागरिक सभी ने इस अभियान में हिस्सा लिया। आने वाले वर्षों में यही पौधे एक घने शहरी वन का रूप लेंगे। इस प्रयास को गिनीज बुक ऑफ वर्ल्ड रेकॉर्ड में भी दर्ज किया गया है।

'Digital India working even at 15K ft': Jaunpur youth to PM at Mann Ki Baat

Rajeev.Dikshit
@timesofindia.com

Varanasi: Jaunpur's Ashish Soni, who interacted with Prime Minister Narendra Modi during the 136th episode of Mann Ki Baat on Sunday, hailed the PM's vision of Digital India and said it has created greater opportunities for the country's youth.

During the interaction, he also highlighted the seamless functioning of QR code-based digital payments at an altitude of over 15,000 feet in Himachal Pradesh.

For the virtual interaction, the district administration made special arrangements for Soni, who was among 403 youths selected from 245 districts across the country to visit 74 Vibrant Border Gram Panchayats in Ladakh, Himachal Pradesh and Uttarakhand between June 3 and 30 after qualifying through a nationwide quiz competition.

PM Narendra Modi's interaction with youth during Mann Ki Baat

During the interaction, PM Modi asked Ashish about his experience at the world's highest post office in Hikkim.

Ashish said he had sent a letter from there addressed to the PM. He also said that even at an altitude of more than 15,000 feet, the QR code-based digital payment system was functioning smoothly, reflecting the reach of the Digital India initiative.

Soni visited Kaza Khas village in the Spiti Valley of the tribal district of Lahaul-Spiti in Himachal Pradesh.

He participated in developmental activities with the local administration, ITBP personnel and villagers, and closely observed the lifestyle, culture and challenges of the border areas.

Working with self-help groups, Ashish spread awareness about the Deendayal Antyodaya Yojana-National Rural Livelihood Mission and the Pradhan Mantri Mudra Yojana. Soni said that interacting with the PM was an unforgettable moment in his life.

من کی بات

محفوظ، مضبوط اور خودکفیل ہندوستان کی تعمیر مقصد: مودی

जल संरक्षण को जन-आंदोलन बनाएगी सरकार... जंगलों में खोदे जा रहे 34 हजार से अधिक ट्रेंच, इसरो की तकनीक से शहर में बने रिचार्ज वेल

'मन की बात' में छाया छत्तीसगढ़... मोदी ने की कोरबा के जल संरक्षण मॉडल की तारीफ

पत्रिका ब्यूरो

क्यों खास है 'कैच द रेन' अभियान?

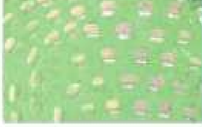

मुख्यमंत्री साय ने कहा... प्रदेशवासियों के लिए गर्व का क्षण

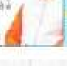

जंगलों में खोदे जा रहे 34 हजार से अधिक ट्रेंच

इसरो की मदद से शहर में बने 'रिचार्ज वेल'

ഫുട്ബാൾ അക്ഷരമാല മൻ കി ബാത്തിൽ

KAUMUDI SPECIAL

■ താരമായി അഭിലാഷിന്റെ 'അക്ഷരകന്ദുകം'

അക്ഷരകന്ദുകം

PM hails defence power on Vijay Diwas in Mann ki Baat

RAJESH KUMAR THAKUR @ New Delhi

PRIME Minister Narendra Modi on Sunday claimed that India is continuously strengthening its technological capabilities and scaling new heights in defence production, military exports and political cooperation with friendly nations.

In his monthly radio programme 'Mann Ki Baat', broadcast, coincidentally, on the day the nation paid tribute to the immortal martyrs of the 1999 Kargil War, the Prime Minister spoke about INS Nagendragiri, which was recently inducted into the Indian Navy.

"This modern warship has been designed and built in India itself. More than 75% of the materials used in it are indigenous. It is a symbol of the growing strength of an 'Atmanirbhar Bharat'," he said. The PM also referred to the success of the Defence Research and Development Organisation (DRDO),

'Border villages first'

PM Narendra Modi on Sunday said his government regards border villages as the country's first villages, underlining their strategic and cultural importance. Addressing virtually at the Vibrant Village Programme, the PM said the initiative aims to instil a deeper sense of nation-building among the youth.

which successfully tested the Pinaka Long-Range Guided Rocket and recently conducted the successful test of the Kusha missile. He said that global confidence in India's defence equipment and technology is steadily increasing.

"Whether it is defence production, defence exports, or political cooperation with friendly nations—India is continuously scaling new heights. Earlier this month, I was in Indonesia, where a major agreement regarding BrahMos and Astra missiles was concluded. Global confidence in India's defence equipment and technology is growing," he asserted.

He highlighted the special 'Shaurya Vijay Yatra', which originated on July 14 from the National War Memorial in Delhi as a motorcycle rally travelling to the Kargil War Memorial in Dras, carrying the message of "One Ride, One Nation, One Salute". He said, "This journey reminds us that the sacrifice made for the nation can never be forgotten."

'मन की बात'मध्ये नाशिकच्या जलक्रांतीचा गौरव

'कॅच द रेन' अभियानाची पंतप्रधानांकडून दखल; जिल्ह्याच्या कामाची देशभरात प्रशंसा

। नाशिक : जिल्ह्यात लोकसहभागातून राबवण्यात आलेल्या जलसंवर्धनाच्या विविध उपक्रमांना देशपातळीवर मोठी दाद मिळाली असून, पंतप्रधान नरेंद्र मोदी यांनी रविवारी प्रसारित झालेल्या 'मन की बात' कार्यक्रमात नाशिक जिल्ह्याच्या 'कॅच द रेन' अभियानाचा विशेष उल्लेख करत जिल्ह्यात उभारण्यात आलेल्या जलसाठानिर्मिती क्षमतेचे कौतुक केले. पंतप्रधानांच्या या उल्लेखामुळे नाशिकच्या जलव्यवस्थापन मॉडेलची राष्ट्रीयस्तरावर पुन्हा एकदा दखल घेतली गेली आहे.

जिल्हाधिकारी आयुष प्रसाद यांच्या मार्गदर्शनाखाली नाशिक जिल्ह्यात 'कॅच द रेन' अभियान प्रभावीपणे राबवण्यात येत आहे. शासनाच्या विविध विभागांचा समन्वय, ग्रामपंचायती, स्वयंसेवी संस्था आणि नागरिकांच्या सक्रिय सहभागातून जलसंधारणाची व्यापक लोकचळवळ उभी करण्यात आली आहे. पावसाच्या प्रत्येक थेंबाचे स्थानिक पातळीवर संवर्धन करून भविष्यातील जलसुरक्षा अधिक मजबूत करण्यावर या अभियानाचा भर आहे. या अभियानांतर्गत जलयुक्त शिवार अभियान २.०, गाळमुक्त धरण-गाळयुक्त

शिवार योजना, नाले खोलीकरण व रुंदीकरण, कृत्रिम भूजल पुनर्भरण विहिरी (रिचार्ज शाफ्ट), पर्जन्यजल संधारण, सूक्ष्म सिंचन, जलअर्थसंकल्प (वॉटर बजेटिंग), जलकार्यक्षम शेती, जलतारा उपक्रम यांसारख्या विविध योजनांची प्रभावी अंमलबजावणी करण्यात येत आहे. त्याचबरोबर पारंपरिक जलस्त्रोतांचे संवर्धन, भूजल पुनर्भरण आणि पर्जन्यजल संधारणाच्या विविध उपाययोजना सातत्याने राबवल्या जात आहेत. जिल्ह्यातील या उल्लेखनीय कामाची दखल यापूर्वीही भारत सरकारच्या जलशक्ती मंत्रालयाच्या नॅशनल वॉटर मिशनने घेतली होती.

मंत्रालयाच्या ५५ व्या वॉटर सीरिज वेबिनारमध्ये जिल्हाधिकारी आयुष प्रसाद यांना विशेष निमंत्रित वक्ते म्हणून आमंत्रित करण्यात आले होते. या वेबिनारमध्ये त्यांनी 'बेस्ट प्रॅक्टिसेस ऑफ वॉटर मॅनेजमेंट' या विषयावर जिल्ह्यातील जलसंवर्धन उपक्रमांचे सादरीकरण केले होते. आता पंतप्रधानांनीही या कार्याचा गौरव केल्याने जिल्ह्याच्या जलव्यवस्थापन मॉडेलला राष्ट्रीयस्तरावर अधिक बळ मिळाले आहे.

मोहिमेला लोकचळवळ बनवण्याचे आवाहन

'मन की बात'मध्ये पंतप्रधान नरेंद्र मोदी म्हणाले की, मागील भागात त्यांनी 'कॅच द रेन' मोहिमेला लोकचळवळ बनवण्याचे आवाहन केले होते. जिथे पाऊस पडेल, जेव्हा पाऊस पडेल, तेथेच पाणी साठवा, हा या अभियानाचा मूलमंत्र असल्याचे त्यांनी सांगितले. या वेळी त्यांनी मध्य प्रदेशातील सिधी व नरसिंगपूर, आंध्र प्रदेशातील नंद्याल व विजयनगरम, छत्तीसगडमधील कोरबा आणि ओडिशातील भुवनेश्वर येथील उपक्रमांसह महाराष्ट्रातील नाशिकमध्ये मोठ्या प्रमाणावर पाणी साठवण्याची क्षमता निर्माण करण्यात आली आहे, असे नमूद करून नाशिकच्या कार्याचा गौरव केला.

'मन की बात' में बोले नरेंद्र मोदी

बारिश की हर बूंद बचाएं

■ **दिल्ली, एजेंसियां.** प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने रविवार को लोगों से वर्षा जल संरक्षण की अपील करते हुए कहा कि आज बचाई गई बारिश की हर बूंद आने वाली पीढ़ियों के लिए सबसे बड़ी पूंजी है. उन्होंने जल शक्ति मंत्रालय के 'कैच द रेन' अभियान में लोगों की भागीदारी की सराहना की और कहा कि गांवों, शहरों, पंचायतों और सामाजिक संगठनों ने इस पहल को जन-आंदोलन का रूप दिया है. 'मन की बात' कार्यक्रम में मोदी ने कहा कि इस अभियान का संदेश सरल है- जहां और जब बारिश हो, वहीं वर्षा जल का संरक्षण किया जाए. उन्होंने बताया कि अभियान के तहत वर्षा जल संचयन, भूजल पुनर्भरण, पुराने जलाशयों के

पुनर्जीवन और वृक्षारोपण को बढ़ावा दिया जा रहा है. प्रधानमंत्री ने देश के विभिन्न हिस्सों में चल रहे जल संरक्षण कार्यों का उल्लेख करते हुए कहा कि कहीं पुराने तालाबों की सफाई की जा रही है तो कहीं कुओं और बावड़ियों को पुनर्जीवित किया जा रहा है. उन्होंने मध्य प्रदेश, महाराष्ट्र, आंध्र प्रदेश, छत्तीसगढ़ और ओडिशा में किए जा रहे प्रयासों की जानकारी दी. मोदी ने लोगों से अपील की कि वे अपने आसपास किसी एक तालाब, कुएं या बावड़ी की जिम्मेदारी लें और पानी की हर बूंद बचाने का संकल्प करें.

'मन की बात' में मोदी ने किया मध्य प्रदेश का जिक्र

प्रधानमंत्री ने सीधी और नरसिंहपुर जिलों के जल संरक्षण प्रयासों को सराहा

नवदुनिया ब्यूरो, नई दिल्ली : प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने जल संरक्षण पर जोर देते हुए 'कैच द रेन' अभियान का उल्लेख कहा कि वर्षा जल को वहीं और उसी समय सहेजने का प्रयास भविष्य की जल सुरक्षा का आधार बनेगा। उन्होंने मप्र के सीधी और नरसिंहपुर जिलों में किए गए जल संरक्षण के प्रयासों की सराहना करते हुए कहा कि सीधी जिले में डेढ़ हजार से अधिक तालाब बनाए गए, जबकि नरसिंहपुर में अमृत सरोवरों को संवारने के लिए हुए उल्लेखनीय प्रयास हुए।

ये बातें प्रधानमंत्री मोदी ने रविवार को अपने मासिक रेडियो कार्यक्रम 'मन की बात' के 126वें संस्करण में कहीं। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने कहा कि भारत अब केवल अपनी रक्षा जरूरतें पूरी करने वाला देश नहीं रह गया है, बल्कि एक भरोसेमंद वैश्विक रक्षा साझेदार के रूप में तेजी से उभरा है। रक्षा उत्पादन, रक्षा निर्यात और मित्र देशों के साथ रणनीतिक सहयोग

के क्षेत्र में भारत लगातार ऊंचाइयां छू रहा है। भारत की रक्षा तकनीक और सैन्य उपकरणों पर दुनिया का भरोसा लगातार बढ़ रहा है।

स्वदेशी रक्षा उत्पादन को बढ़ावा देने पर जोर : उन्होंने कहा कि पिछले कुछ वर्षों में सरकार ने स्वदेशी रक्षा उत्पादन को बढ़ावा देने पर जोर दिया है, जिसका असर अब अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भी दिखाई देने लगा है। उन्होंने अपने कार्यक्रम की शुरुआत कारगिल विजय दिवस पर वीर सैनिकों को श्रद्धांजलि देकर की। उन्होंने कहा कि 26 जुलाई ऐसी तिथि है जिसे किसी कैलेंडर की जरूरत नहीं होती। यह दिन भारतीय सैनिकों के अदम्य साहस, शौर्य और सर्वोच्च बलिदान की याद दिलाता है।

आधुनिकीकरण से मजबूत होता है सैनिकों का मनोबल : पीएम ने कहा कि रक्षा तकनीक के आधुनिकीकरण से सैनिकों का मनोबल मजबूत होता है। उन्होंने हाल ही में भारतीय नौसेना में शामिल किए गए स्वदेशी युद्धपोत आइएनएस महेंद्रगिरि का उल्लेख करते हुए कहा कि इसमें 75 प्रतिशत से अधिक सामग्री स्वदेशी है।

अंतरिक्ष क्षेत्र से लेकर खेलों तक की पीएम ने की बात : पीएम ने अंतरिक्ष की उपलब्धियों की भी चर्चा भारत की बढ़ती क्षमता और कहा कि निजी क्षेत्र द्वारा विकसित रॉकेट विक्रम-1 का सफल प्रक्षेपण भी बड़ी उपलब्धि है। उन्होंने जल संरक्षण पर जोर देते हुए 'कैच द रेन' अभियान का उल्लेख किया और कहा कि वर्षा जल को वहीं और उसी समय सहेजने का प्रयास भविष्य की जल सुरक्षा का आधार बनेगा।

PM Modi highlights Tripura's traditional musical instrument - Chongpreng in Mann Ki Baat

UNITED NEWS OF INDIA
Agartala, 26 July

In the *Mann Ki Baat* broadcast, Prime Minister Narendra Modi on Sunday underlined the significance of Tripura's traditional musical instrument - Chongpreng, and praised Surya Kumar Debbarma for his outstanding efforts in safeguarding and revitalising this indigenous art form.

The Prime Minister described the Chongpreng as a unique three-stringed bamboo instrument treasured by Tripura's tribal communities, highlighting India's diverse musical heritage.

He noted that the calming melody of the Chongpreng closely resembles the sound of the Sarod and symbolises the rich cultural legacy of Tripura.

Modi also acknowledged that the instrument had gradually faded from public view, particularly among younger audiences, but commended

Surya Kumar Debbarma for his dedication to rekindling interest in the Chongpreng and ensuring the survival of this traditional art.

The PM praised Debbarma's extensive work in promoting Kokborok folk songs, Bengali folk music, Baul traditions, and other indigenous musical forms and even played a short recording of the Chongpreng during the programme.

The Prime Minister urged people nationwide to share information about traditional musical instruments from their regions on social media, highlighting the need to preserve India's vibrant cultural diversity.

In response to the recognition, Tripura Chief Minister Dr Manik Saha expressed his gratitude for bringing the state's rich cultural heritage into the national limelight and thanked Prime Minister Modi for acknowledging Surya Kumar Debbarma's dedicated work in preserving and popularising the Chongpreng.

Dr Saha described the bamboo-crafted, three-stringed instrument as a vital emblem of Tripura's cultural identity, noting the resemblance of its melodious sound to that of the Sarod and acknowledging Debbarma's relentless dedication in sparking renewed interest, especially among young people.

He conveyed heartfelt thanks to the Prime Minister for highlighting Tripura's remarkable cultural traditions to the entire nation and encouraging the preservation of India's indigenous musical heritage.

PM Lauds UP's Record Tree Drive in Mann Ki Baat

TOP STORY NEWS

Lucknow: Uttar Pradesh's plantation campaign under the 'Ek Ped Maa Ke Naam' initiative received praise from Prime Minister Narendra Modi on Sunday, who said the state had displayed an "extraordinary collective resolve" by planting more than 350 million saplings in a single day.

Speaking during the 136th episode of his monthly radio programme Mann Ki Baat, Modi said the massive plantation drive carried out on July 12 was a matter of special pride for him as the Member of Parliament from Uttar Pradesh.

"The state had demonstrated an extraordinary collective resolve, with more than 350 million saplings planted in a single day on July 12. As the Member of Parliament from Uttar Pradesh, this was a matter of special pride for me," the Prime Minister said.

He said the 'Ek Ped Maa Ke Naam' campaign had inspired people across the country to fulfil their responsibility towards nature, adding that collective public participation leads to exemplary outcomes.

Modi also said trees are not only essential for humans but also provide shelter to countless living creatures. Urging citizens to link special occasions in their lives with environmental conservation, he appealed to people to plant a tree in their mother's name.

"A small sapling planted today can become a legacy of greenery, clean air and a brighter future for generations to come," he said.

Reacting to the Prime Minister's remarks, Uttar Pradesh Chief Minister Yogi Adityanath thanked him in a post on social media platform X.

The chief minister said the Prime Minister's appreciation of the state's plantation campaign was a recognition of Uttar Pradesh's collective commitment to environmental conservation and the historic public participation witnessed during the drive.

He said the state had demonstrated that a society sensitive to nature can lay the strongest foundation for a "Viksit Bharat" and reaffirmed the government's commitment to further strengthening the national mission of environmental conservation, public participation and green development under the Prime Minister's leadership.

Mann Ki Baat: कारगिल विजय दिवस का जिक्र, पीएम मोदी ने वीर जवानों को किया नमन

जम्मू कश्मीर की 'वागू' चटाई का देशभर में डंका, 'मन की बात' में PM मोदी ने की तारीफ

PM Modi urges people to turn 'Catch the Rain' into mass movement, highlights 'Ek Ped Maa Ke Naam'

पीएम बोले- युवाओं ने देश का मान बढ़ाया: यंग इनोवेटर्स ने वो किया जो असंभव लगता था; मन की बात में कारगिल शहीदों को श्रद्धांजलि दी

PM Lauds AP's Water Conservation Efforts in Mann Ki Baat

PM Modi highlights Manipur astrophysicist, Bihar waste-to-wealth, Gujarat hornbill return, UP women's herbal tea in Mann Ki Baat

معاشی اور ثقافتی اہمیت کی حامل واگوو چٹائی، من کی بات میں پی ایم مودی نے کشمیر کی روایتی 'واگوو' کو کیا اجاگر

THE FREE PRESS JOURNAL

Nashik: PM Modi Praises District's Water Conservation Efforts, Highlights 'Catch The Rain' Initiative In Mann Ki Baat

Jagran

'INS महेंद्रगिरि आत्मनिर्भर भारत की बढ़ती ताकत का प्रतीक', मन की बात में बोले PM मोदी

हिन्दुस्तान

'एक पेड़ मां के नाम' अभियान से यूपी ने दिखाया जनशक्ति का अद्भुत संकल्प, मन की बात में पीएम मोदी

THE TIMES OF INDIA

'Digital India working even at 15,000 ft': Jaunpur youth to PM at MKB interaction

TV9 भारतवर्ष

Modi Mann Ki Baat: 'ಮನ್ ಕಿ ಬಾತ್': ಕಾರ್ಗಿಲ್ ವೀರರಿಗೆ ಪ್ರಧಾನಿ ಮೋದಿ ನಮನ, ಕ್ಯಾಚ್ ದ ರೇನ್ ಆಂದೋಲನಕ್ಕೆ ಕರೆ

ZEE BUSINESS

PM Modi says India emerging as trusted global defence partner in Mann Ki Baat

मन की बात

के सभी संस्करणों को पढ़ने के लिए
QR कोड को स्कैन करें।

आपकी प्रतिक्रिया और सुझाव हमारे लिए महत्त्वपूर्ण हैं! हमें इस ईमेल एड्रेस पर लिखें : **mkb-mib@gov.in**

हथकरघे से बना हर परिधान किसी-न-किसी क्षेत्र, समुदाय और इससे जुड़े असंख्य लोगों की कहानी को सामने लाता है। ये वो लोग हैं, जो गर्व के साथ भारत की सांस्कृतिक विरासत को संजोने में जुटे हैं। आज के दिन मेरा आग्रह है कि हम हस्तकला को प्रोत्साहित कर, अपने बुनकर साथियो का सम्मान करें। आइए, हम 'वोकल फ़ॉर लोकल' की भावना को और सशक्त करें।

– माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी

सत्यमेव जयते

सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय
भारत सरकार